सामाजिक विज्ञान

(भाग - १)

इतिहास ओर राजनीति विज्ञान

सातवीं कक्षा

शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण
भुवनेश्वर

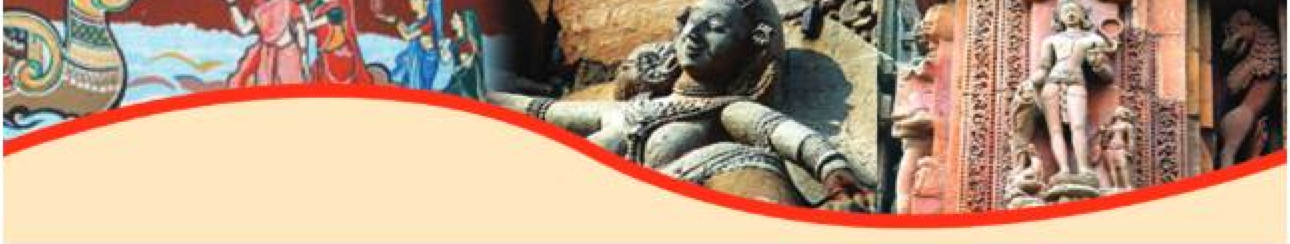

इतिहास ओर राजनीति विज्ञान

सातवीं कक्षा के लिए

संपादक मण्डली

श्री प्रताप कुमार पट्टनायक
डा हरिहर पण्डा
श्री विष्णु चरण पात्र
श्रीमती शैलवाला पाढ़ी

समीक्षक मंण्डली

डा. शम्भुप्रसाद सामन्तराय
श्री वैष्णव चरण दास
श्री प्रताप कुमार पट्टनायक
श्रीमती रेणुवाला दास
श्रीमती रत्नमंजरी दाश
प्रोफेसर डा. अशोकनाथ परिड़ा
प्रोफेसर डा. सूर्यनारायण मिश्र
डा. हरेकृष्ण साहु
डा. पुष्पाञ्जलि पाणी

संयोजना :

श्री सत्यजित् दास महापात्र
डा. मिनाक्षी पण्डा
डा. तिलोत्तमा सेनापति
डा. सविता साहु

अनुवादक मंण्डली :

प्रो. राधाकान्त मिश्र
प्रो. स्मरीप्रिया मिश्र
डॉ. सनातन बेहेरा
डॉ. स्नेहलता दास
डॉ. लक्ष्मीधर दास
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र, अनुवादक
डॉ. अमुल्य रत्न महांन्ति

संयोजना :

डॉ. सबिता साहु

प्रकाशक :

विद्यालय और गण शिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार

मुद्रण वर्ष : २०१०

प्रस्तुति : २०११

शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, ओड़िशा, भुवनेश्वर
तथा
ओाड़िशा राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण :

पाठ्य पुस्तक उत्पादन और विक्रय,ओड़िशा, भुवनेश्वर

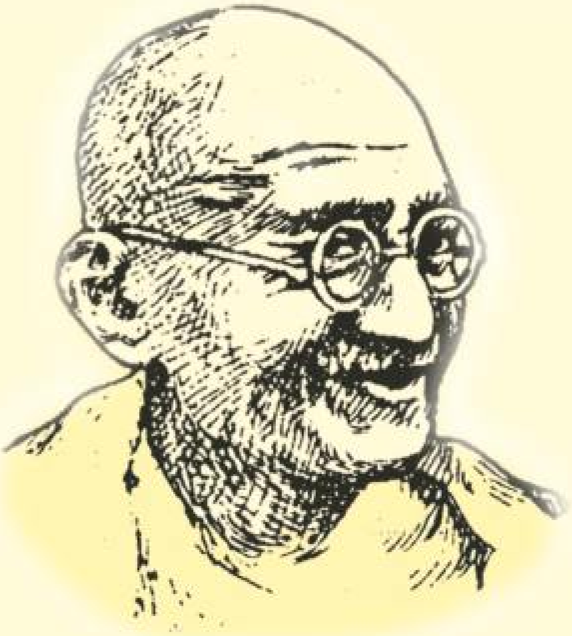

जगतमाता के चरणों पर अब तक मैं जो-जो भेंट देता हूँ, उनमें से मौलिक शिक्षा मुझे सबसे अधिक क्रान्तिकारी और महत्वपूर्ण लगती है। इससे अधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान भेंट मैं जगत के सामने रख सकूँगा, वह मुझे प्रत्यय होता नहीं। इसमें मेरे सारे रचनात्मक कार्यक्रमों के प्रयोगात्मक करने की चाबी है। जिस नई दुनिया के लिए मुझे दर्द होता है वो इससे ही प्रकट हो सकेगा। यह मेरी अन्तिम अभिलाषा है।

-महात्मा गान्धी

सामाजिक विज्ञान

इतिहास विभाग

अध्याय	प्रसंग	पृष्ठ
प्रथम	नूतन शक्तियों का अभ्युत्थान	१
द्वितीय	दिल्ली में सुलतानी शासन	२६
तृतीय	मुगल साम्राज्य (१५२६ - १७०७)	४५
चतुर्थ	यूरोपीयों का भारत आगमन	६२
पंचम	धर्म संस्कार आन्दोलन और क्षेत्रीय संस्कृति का विकास भक्ति और सूफी आन्दोलन	६९
षष्ठ	मुगल साम्राज्य का पतन	७८
सप्तम	ओड़िशा में सूर्यवंशी नरपतिगण	८२

राजनीति विज्ञान

प्रथम	संविधान	९३
द्वितीय	स्वाधीनता संग्राम और भारत संविधान की गठन प्रक्रिया (१५२६-१७०७)	१०१
तृतीय	भारत संविधान के मौलिक वैशिष्ट्य	१०६
चतुर्थ	मानवीय अधिकार	११८

प्रथम अध्याय

नूतन शक्तियों का अभ्युत्थान

(क) ऐतिहासिक व्यक्तित्व तथा उनके उपादान

किसी भी समय के इतिहास की रचना के लिए उपादानों की आवश्यकता होती है । इतिहास की रचना किसी ऐतिहासिक उपादान को विश्लेषण कर की जाती है । मध्यकालीन भारतीय इतिहास की रचना करने के लिए कई उपादान हैं । इतिहासकारों ने उन उपादानों के आधार पर ही तुर्क आक्रमण, राजपुतों का अभ्युदय, गंग वंश का शासन, भक्ति आन्दोलन, मुगलों का शासन तथा भारत में यूरोपियों के आगमन की आलोचना की है ।

फिर्दोसी की पुस्तक 'साहनामा' में सुलतान मामुद के प्रशासन के संपर्क में अनेक तथ्य उपलब्ध हैं । मिनहाज्-उद्दीन-सिराज की 'तबाकत-ई-नासिरी' में मुहम्मद गोरी, इलतुतमिस उौर बलबन के विषय में कई बातों का वर्णन है ।

बाबर का आत्मचरित 'बाबरनामा' और अबूल फजल की 'अकबर नामा' में क्रमश: मुगल शासक बाबर और अकबर के बारे में अनेक तथ्य उल्लेख हैं ।

इस प्रकार मध्ययुग में रचित अनेक पुस्तकों से उस समय के विभिन्न शासकों के संपर्क में अनेक सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं ।

क्या आप जानते हैं ?

- अमीर खूसरो की 'खजान-उल-फुतु' में अल्लाउद्दिन खिलजी के राज्य विजय के बारे में वर्णन है ।
- 'अफ़िफ़का की पुस्तक तारिख ''ई-फिराजशाही'' में फिरोजशाह तुगलक के संपर्क में कई सूचनाएँ उपलब्ध हैं ।
- हुमांयू की बहन गुलवदन बेगम ने 'हुमांयूनामा' में हूमांयू के बारे में अनेक तथ्यों का उल्लख किया है ।
- इनायत खाँ की 'शाहजहाँनामा' में मुगल सम्राट शाहजहाँ के संबंध में अनेक तथ्य उपलब्ध हैं ।
- 'बाबरनामा का' दूसरा नाम 'तुजुक्-ई-बाबरी' है ।

मुगलों के समय रचित ऐतिहासिक कृतियों में मुगल सम्राटों के किन कार्यकलापों के बारे में वर्णन है; दूसरों के साथ चर्चा करके लिखिए ।

मिनहाज्-उद्दीन-सिराज् ने 'तबाक्त-ई-नासिरी' पुस्तक लिखी थी । उसी प्रकार दिल्ली के सुलतानों के विषय में दूसरे लेखकों की जो ऐतिहासिक कृतियाँ हैं, उन पर दूसरों के साथ आलोचना करके लिखिए ।

संत कबीरदास की धर्मवाणी के संबध में उनके 'बीजक ग्रंथ में रचित 'दोहा' से जानकारी मिलती है । 'आदिग्रंथ' या 'गुरुग्रंथ साहब' से नानक की नीति वाणी के बारे में सूचना मिलती है । 'चैतन्य चरित्रामृत' पुस्तक से श्री चैतन्य की वाणी के संबंध में तथ्य मिलते हैं । कृष्णदेव राय की पुस्तक 'आमुक्त मालव्य' से विजयनगर राज्य और वहाँ के शासन के संबंध में जानकारी मिलती है ।

क्या आप जानते हैं ?

- दोहा : यह दो पंकितयों में रचित एक पद है । हर दोहे में केवल एक ही भाव रहता है ।

आप को ज्ञात अन्य संतों के नाम और उनके द्वारा रचित पुस्तकों के नाम लिखिए ।

गोवा में स्थित सेंट जबियर्स चर्च की नत्थी से भारत में पुर्तगालियों के कार्यकलापों के बारे में सूचना मिलती है । भारत में अंग्रेजों के प्राथमिक क्रियाकलापों के संबंध में कोलकता के फोर्ट विलियम की नत्थी से जानकारी मिलती है ।

विलिवम फोर्ट

क्या आप जानते हैं ?

- अभिलेख : इससे एक शासक के बारे में सूचना मिलती है । यह पत्थर, ताम्र पत्र तथा मुद्रा पर विभिन्न लिपियों में खोदित होता है ।

ओड़िशा के सोमवंशी और गंगवंशी के इतिहास जानने के लिए इन राजवंशों के राजाओं द्वारा खोदे गए अभिलेख सहायक होते हैं । दक्षिण भारत में शासक चोल, पांण्डेय, यादव आदि राजवंश के इतिहास जानने के लिए इन वंशों के राजांओं द्वारा खोदे गए अभिलेखों से पता चलता है । इन अभिलेखों से राजाओं के राज्य विजय, शासन प्रणाली तथा भूमिदान आदि के संबंध में सूचना मिलती है ।

ताम्रपत्र

पांडुलिपि का अनुकरण

मध्ययुग में छापाखाना नहीं था । इसलिए पांडुलिपियों का प्रकाशन नहीं हो पाता था । एक लेखक की पांडुलिपि देखकर दूसरा कोई उसे लिखता था । जब लेख को अनुकरण करके लिखा जाता था तब अधिकांश अक्षरों में परिवर्तन हो जाता था । कभी - कभार अनुकरण करने वाला भी अपने मन से एक दो वाक्य लिख देता था । आज तक इस ऐतिहासिक प्रमाद का हल नहीं हो पाया है । परिणाम स्वरूप, अधिकांश लेखक, कवि तथा इतिहासकारों के मूल लेख हस्तगत नहीं हो पाए हैं । फिर भी उपलब्ध ग्रंथों के आधार पर इतिहास लिखा जा रहा है ।

अभिलेखालय में विभिन्न ग्रंथ तथा नत्थी संगृहीत होकर रहते हैं । उन्हें इतिहासकर पढ़कर इतिहास लिखते हैं । प्राय:तथ्य संकलित ताड़पत्र पोथी एवं पुस्तकों को दीमक से रम जाने का डर रहता है । अत : वैज्ञानिक पद्धति से इन उपादेय ग्रंथों को अभिलेखालय में सुरक्षित रखा जाता है । इस प्रकार विभिन्न संग्रहालयों में अभिलेखालय हैं । इन्हें इतिहासकार पढ़कर इतिहास की रचना करते हैं । अत : इतिहास रचने के लिए उपादानों की अत्यंत आवश्यकता है, इसमें कोई संदेह नहीं ।

मध्ययुग में छापाखाना होता तो क्या सुविधा होती ?

क्या आप जानते हैं ?

- अभिलेखालय में अनेक नत्थी-पत्र, डाएरी तथा पुस्तकें आदि रहती हैं । शोधकर्ता अपने शोधकार्य के लिए यहाँ से उपादान संग्रह करते हैं ।

- ताड़पत्र पोथी तथा अन्य उपादेय पुस्तकों की सुरक्षा केसे हो सकती है ? दूसरों से पूछकर लिखिए ।
- हमारे राज्य में अभिलेखालय कहाँ है ?

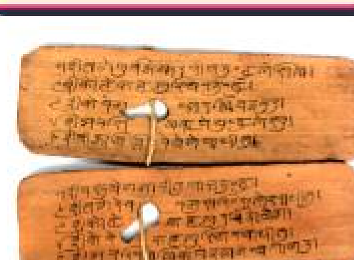

ताड़पत्र पोथी चित्र

(ख) तुर्कों का आक्रमण :

भारत की राजनीतिक स्थिति दसवीं शती में अस्थिर थी । विभिन्न राजवंश के राजाओं के बीच युद्ध और कलह लगा रहता था । इसका फायदा लेकर उत्तर पश्चिम से तुर्को ने भारत पर हमला किया । उनमें गजनी के सुलतान मामुद पहले व्यक्ति थे ।

मामुद गजनी का भारत आक्रमण :

सुलतान मामुद

आलप्तगिन् ने अफगानिस्तान में दसवीं शती में गजनी नामक एक क्षुद्र राज्य की स्थापना की थी । ९७७ ई.में साबुक्तगीन इसके शासक थे । उनकी मृत्यु के उपरांत ९९७ ई में सुलतान मामुद सिंहासन पर बैठे । गजनी को एक शक्तिशाली राज्य बनाने का सपना उनका था । मध्य एसिया जीत कर एक विशाल साम्राज्य सृष्टि करने की कल्पना उनके मन में आयी । इसलिए उन्होंने एक विशाल सेनावाहिनी का गठन किया । भारत के ऐश्रर्य के प्रति उनका लोभ रहा । उन्होंने १००० ई. से १०२७ ई. के बीच १७ बार भारत पर आक्रमण किया ।

सुलतान मामुद ने गजनी को शक्तिशाली बनाने के लिए क्या-क्या कदम उठाए होंगे ? मित्रों के साथ आलोचना करके लिखिए ।

मामुद ने पंजाब, सुलतान, थानेश्वर आदि पर विजय प्राप्त कर अपनी वीरता का परिचय दिया था । उन्होंने अपने साम्राज्य के साथ पंजाब को मिला लिया था । वे १०२५ ई. में गुजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर लूटकर बहुत धन-रत्न भारत से गजनी ले गए थे । हिन्दू मंदिर ध्वंसकर और लूट कर इसलाम धर्म के गौरव की रक्षा के लिए उनकी चेष्टा जारी थी ।

जब सुलतान मामुद ने सोमनाथ मंदिर लुटा था तब पूजकों ने मंदिर की रक्षा के लिए क्या-क्या कदम उठाए होंगे ? आप अपने मित्रों के साथ चर्चाकरके लिखिए ।

सुलतान मामुद की मृत्यु १०३० ई. में हुई । समग्र उत्तर भारत एक आक्रमक और लुटेरे के चंगुल से मुक्त हुआ । लेकिन उन्होंने गजनी का काफी समृद्ध बनाया था । वहाँ उन्होंने एक विशाल पुस्तकालय एवं एक सुंदर मस्जिद निर्माण किया था ।

क्या आप जानते हें ?

- मामुद ने भारत पर १७ बार आक्रमण के बीच भारत के दूसरे राज्यों पर भी हमला किया था । वे हैं- कश्मीर, बंगला, बुंदेलखंड, मालव और अजमेर ।
- सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण करने के समय गुजरात के राजा भीमदेव राज्य छोड़कर भाग गए थे ।
- गुजरात के कथियाबाड़ सागर किनारे सोमनाथ मंदिर स्थित था ।
- बागदाद के खलिफ़ा ने मामुद को 'इस्लम' धर्म के रक्षक के रूप में सम्मानित किया था ।

मामुद ने अपने दरबार में अनेक ज्ञानी और विद्वानों को आश्रय दिया था । पारसी कवि फिरदोसी उनमें प्रसिद्ध थे । 'शाहनामा' नामक एक विशाल ग्रंथ की रचना कर जनसाधारण में अमर हो गए । उनहोंने अलबरूनी नामक विद्धान को भारत के संपर्क में ज्ञान अर्जन करने के लिए भेजा था ।

वे भारत में कई वर्ष रहे और भारत पर एक सुंदर पुस्तककी रचना की । उसका नाम है 'तहकिक-इ-हिन्द' यानी भारत के विषय में जो सत्य है ।

यादि आप मामुद के राजदरबार में एक इतिहासकार या कवि के रूप में रहते तो आप उनका चरित्रांकन कैसे करते ?

मामुद की मृत्यु के बाद गजनी राज्य अपना गौरव खो बैठा । उनके उत्तराधिकारी कमजोर हो गाए । गजनी राज्य का पतन हुआ । फिर अफगानिस्तान में घोर नाम का एक राज्य की प्रतिष्ठा हुई । इसके शासक मुहमद गोरी थे जिन्होंने भारत पर भी आक्रमण किया था ।

मुहम्मद गोरी

मुहम्मद गोरी ने ११७५ ई. में मुलतान अधिकार किया और भारत पर हमला करने का पथ प्रस्तुत किया । तत्पश्चात् वे सिंधु प्रदेश और पंजाब अधिकार कर दिल्ली की ओर बढ़े । उस समय चौहान वंश के राजा पृथ्वीराज दिल्ली पर शासन करते थे । उन्होंने राजपुतों को संगठित किया और उनकी मदद से मुहम्मद गोरी को १८८१ ई.में तिरोरी में परास्त किया । यह था प्रथम तिरोरी युद्ध ।

क्या आप जानते हैं ?

- मुहम्मद गोरी का दूसरा नाम था-साहब-उद-बिन-मुहम्मद ।

राजपुतों में ऐसे क्या-क्या गुण थे जिनके कारण पृथ्वीराज ने उनकी मदद ली थी ? दूसरों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

पृथ्वीराज चौहान

मुहम्मद गोरी इस पराजय को भूल न सके । उन्होंने पुन: भारत पर आक्रमण किया । उन्होंने ११९२ ई.में. द्वितीय तिरोरी युद्ध में पृथ्वीराज को परास्त कर दिल्ली अधिकार किया । यह देखकर कनौज के राठोर वंशीय सामना जयचंन्द्र ने राजपुतों को एकत्रित कर चांदवार (चांदेरी) युद्ध में मुहम्मद गोरी का शासन किया था । इस युद्ध में मुहम्मद गोरी जयचंद्र को परास्त कर भारत से पर्याप्त धन-रत्न अपने देश को ले गया । उनके बाद उनके प्रधान सोनापति कुतबुद्दिन ऐबक ने बुंदेलखंड, कालिंजर और माहोबा आदि पर अधिकार किया । उनका दूसरा सेनापति इक्तियार उद्दीन ने खिलजी, बंगाल और विहार अधिकार कर लिया । मुहम्मद गोरी लाहौर में १२०६ ई. में चल बसे ।

मुहम्मद गोरी के मुख्य सेनापति कुतवुद्दीन ऐवक ने दिल्ली में दासवंश प्रतिष्ठा की ।

पृथ्वीराज और जयचंन्द्र के बीच कैसा संपर्क था, दूसरों से पूछकर लिखिए ।

❖ पृथ्वीराज की वीरता के संबंध में चंद बरदायी के 'पृथ्वीराज रासो' ग्रंथ से पता चलता है ।

(ग) प्रतिहार, चोल, पांडेय, हयशील एवं यादव वंश

भारत की राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के बीच अनेक राजवंशों का उत्थान हुआ था । जब प्रतिहार उत्तर भारत पर शासन कर रहे थे तब दक्षिण भारत पर चोल, पांडेय, हयशील तथा यादव वंश के शासक शासन कर रहे थे ।

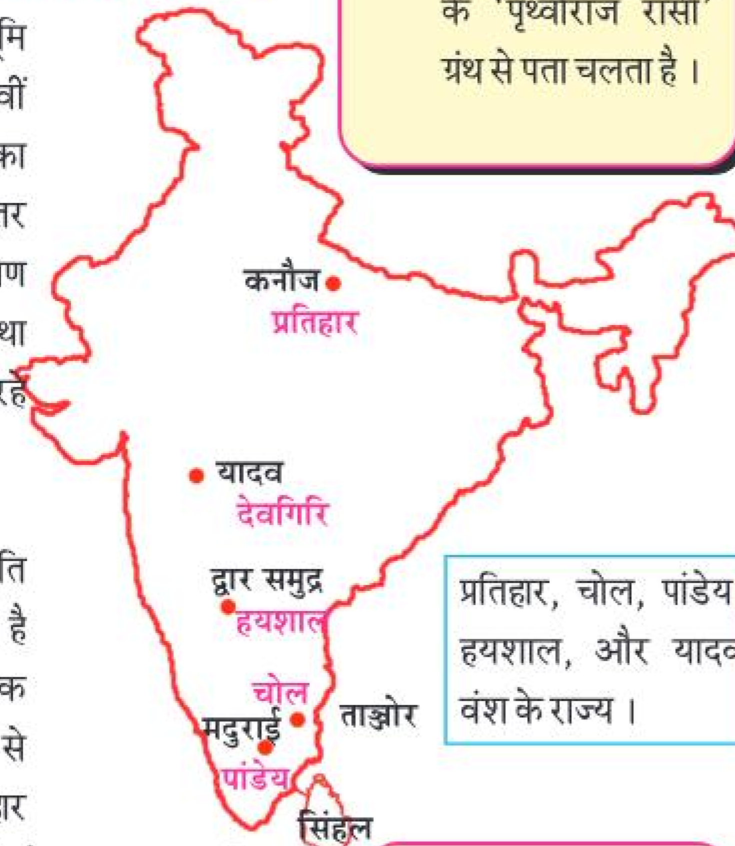

प्रतिहार, चोल, पांडेय, हयशाल, और यादव वंश के राज्य ।

प्रतिहार वंश

प्रतिहार एक प्रभावशाली जाति के लोग थे । 'प्रतिहार' का अर्थ है 'चौकीदार' । उस समय अनेक विरोधी शत्रु उत्तर-पश्चिम गिरिपथ से भारत में प्रवेश करते थे । प्रतिहार उनका गिरिपथ पर प्रतिरोध करते थे । शायद इसलिए उनका नाम 'प्रतिहार' रहा ।

भारत मानचित्र देखकर उत्तर भारत के राजपुत राज्य समूह एवं दक्षिण भारत के राज्य समूहों के नाम लिखे ।

प्रतिहार वंश के राजाओं में प्रथम मिहिर भोज अन्यतम थे । ८४०ई.में उन्होंने सिंहासन अधिकार किया था । युद्ध और राज्यजय द्वारा उन्होंने एक विशाल साम्राज्य गठन किया था । ८९० ई.में उनकी मृत्यु हुई थी । उनके बाद उनके पुत्र ने महेन्द्र पाल ८९०ई से ९०८ई तक शासन किया । बंगाल अधिकार कर अपने साम्राज्य के साथ मिलाया । प्रतिहारों की राजधानी कनौज थी ।

क्या आप को मालूम है ?

❖ प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार का कहा जाता है ।

❖ प्रतिहारों के राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक और पश्चिम में काठियाबाड़ से लेकर पूर्व में विहार तक फैला हुआ है ।

❖ राजशेखर द्वारा 'काव्य मीमांसा' रचित है ।

वे विष्णु और सूर्यदेव के उपासक थे । उनके राज दरबार में अनेक कवि तथा विद्वान थे । उनमें राजशेखर स्वतंत्र थे ।

चोल वंश

दक्षिण भारत में दशवीं शताब्दी में कई राज्यों की सृष्टि हुई थी । उनमें चोल राज्य विशेष था । इसके राजा प्रथम राजराज९८५ ई.में सिंहासन पर आसीन रहे । उन्होंने चालुक्य पाण्हेय एवं चेरों को परास्त किया था । उन्होंने बेंगी (आंध्रप्रदेश का तटीय अंचल) पर अधिकार किया था । वे चेरों को पराजित कर उनसे एक विशाल नौवाहिनी छीन लाए थे । उन्होंने विभिन्न राज्यों को जीतकर एक विशाल साम्राज्य की प्रतिष्ठा की थी । उन्होंना १००० ई.में अपने राज्यो की जमीन का मापन कार्य समाप्त किया था ।

मानचित्र देखकर चोलों के राज्य ओर उनके पड़ोसी राज्यों को चिह्नित कीजिए ।

क्या आप जानते हें ?

मृत्तरायर नामक एक छोटा शासक वंश कावेरी नदी की त्रिकोण भूमि पर वास कर रहे थे । वे कांचीपुरम के पल्लव राजवंश के करद राजा थे । उरायुर के चोलवंश के विजयालय ने मृत्तरायरों को परास्त कर तांजाभुर (तांजोर) नामक नगर की प्रतिष्ठा की थी । उनके परवर्ती वंशज ने बल्लव ओर पांडेय राज्य अधिकार कर चोल साम्राज्य की स्थापना की थी ।

प्रथम राजराज ने धार्मिक क्षेत्र में सहनशीलता को अपनाया था । तांजोर के राज राजेश्वर शिव मंदिर और विष्णु मंदिर उनकी अक्षय कीर्ति हैं । नेगापत्तम में उन्होंने एक बौद्ध मंदिर के निर्माण कार्य में भी सहायता की थी । उन्नहोंने सामुद्रिक पथ से मसाले दार चाय, कीमती पत्थर, कार्पास वस्त्त आदि पश्चिम एशिया को भेजकर पर्याप्त धन अर्जन कर अपने राज्य को समृद्ध किया था ।

धर्म क्षेत्र में सहनशील होने के लिए एक राजा के पास किन गुणों का होना आवश्यक है ? दूसरों के साथ चर्चा करके लिखिए ।

प्रथम राजराज के बाद उनके पुत्र राजेन्द्र चोल १०१२ ई में सिहांसन पर बैठे । वे भी अपने पिता की भाँति विलक्षण योद्धा थे । उन्होंने पल्लव और गंग वंश को परास्त किया । उन्होंने ओड़िशा से होकर सेनाओं की सहायता से गंगा नदी के किनारे पाल वंश को पराजित किया । अपनी सुदृढ़ नोवाहनी की सहायता से उन्होंने सिंहासन पर अधिकार किया । दक्षिण पूर्व एशिया के कई राज्यों पर उन्होंने विजय प्राप्त की थी । इससे उनका एक विशाल चोल साम्राज्य गठन हुआ था ।

राजेन्द्र चोल एक जनहितकारी राजा थे । उन्होंने कृषि की उन्नति के लिए अनेक नहरों और झीलों का खनन किया था । साथ ही उन्होंने अनेक नदी बांध का भी निर्माण किया था । उनके आदेश से चोल राज्य में अनेक देव-देवियों तथा राजा रानियों की सुन्दर-सुन्दर मूर्तियाँ बनी थीं । उनमें शंकर की नटराज की मूर्ति अत्यंत मनोरम और आकर्षणीय थी । चोलों की राजधानी तांजाभूर (तांजोर) थी ।

राजेन्द्र चोल के उत्तराधिकारी तेरहवीं शती के अंतिम समय में बहुत कमजोर हो गए थे । फलत: मुसलमानों के आक्रमण के कारण चोल राज्य का पतन हुआ ।

नटराज

नदी बांध निर्माण होने के कारण लोगों का क्या - क्या उपकार हुआ होगा दूसरों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

चोलों द्वारा निर्मित मंदिर अधिवासिोंयों का केंद्रबिन्दु था । मन्दिरों के चारों ओर लोगों का घर बन गया । मंन्दीरों के अधीन में बहुत जमीन थी । मंदिरों के पूजक माली, रसोइया, वाद्यकार और नृत्य परिवेषक मंदिरों के आसपास रहते थे । समयानुसार चोलों द्वारा निर्मित मंदिर सामाजिक, सांस्कृतिक,अर्थनैतिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्रबिन्दु बने ।

चोलों द्वारा निर्मित मंदिरों के द्वारा कौन-कौन से कार्य संपादित होते थे ? दूसरों से आलोचना कर तथ्य संग्रह कीजिए ।

चोल कृषि और सिंचाई पर महत्व देते थे । कावेरी नदी से नहरों के माध्यम से सिंचाई की व्यवस्था की गई थी । झील और तालाबों के उत्खनन से सिंचाई का व्यवस्था की गई थी । उन्नत कृषि के कारण चोल राज्य शस्यश्यामला हो पाया था ।

चोल उत्कृष्ट शासन के प्रवर्तक थे । राजा केन्द्र शासन के मुख्य थे । उन्हें उपदेश देने के लिए एक मंत्रिमंडल का गठन हुआ था । युद्ध, राजस्व वसूल, न्याय प्रदान आदि केंद्रीय शासन के अंतर्गत थे । किसानों को सम्मिलिन कर गठित गाँव को 'उर्' कहा जाता था । कई उरों को लेकर एक ग्राम परिषद गठित हुआ जिसका नाम रहा 'नाडु' । बेल्लाल जाति अमीर किसान नाडु शासन को नियंत्रण करते थे ।

वर्तमान की शासन प्रणाली के साथ चोलों की शासन प्रणाली की तुलना दोस्तों से चर्चा करके लिखिए ।

चोल राजा ब्राह्मणों को जमीन दान देते थे । ब्राह्मणों के वास स्थान का नाम था 'ब्रह्मादेय' । प्रत्येक ब्रह्मादेय का शासन ब्राह्मणों के द्वारा गठित 'सभा' से होता था । सभा विभिन्न कमेटी या 'भारियम' के सदस्यों को चयन करती थी । उनके द्वारा गाँव के बाग- बगीचे, तालाब, सिंचाई, मंदिर आदि के प्रगतिमूलक कार्यों की जाँच होती थी । चोलों का ऐसा ग्राम शासन सभीको पसन्द था ।

क्या आप जानते हैं ?

भारियम के सदस्यों का चुनाव करने के लिए एक लॉटरी व्यवस्था थी । एक पात्र में विभिन्न व्यक्तियों के नाम ताड़ पत्र में लिखे जाते थे । एक उनमें से पर्ची उठाता था । उसमें जिस व्यक्ति का नाम रहता था, उसे चयन किया जाता था ।

पाण्डेय वंश :

मध्य युग में पांडेय वंश का महत्व दक्षिण भारत में अधिक था । पांडेय राजाओं में प्रथम जटावर्मन सुंदर पांडेय (१२५१ ई.- १२६८ई) बहुत शक्तिशाली थे । उन्होंने चेर, हयशील, चोल, काड्भ् और सिंहली को पराजित किया था । उन्हें 'महाराजधिराज श्री परमेक्ष्वर की उपाधि में विभूषित किया था । उनके बाद मारबर्मन कुलशेखर पांडेय (१२६८ ई - १३१०ई) ने शासन किया था । उन्होंने तृतीय राजेन्द्र चोल और रामनाथ हयशाल को पराजित कर उनके राज्यों को अधिकार किया था । उनके समय में परिब्राजक पर्यटक मार्कपोलो भारत भ्रमण करेन आए थे । कुलशेखर के बाद उनके उत्तराधिकारी कमजोर हो गए थे । मुसलमानों के आक्रमण के कारण चौदहवीं शताब्दी के प्रथम भाग में पांडेय वंश का पतन हो गया ।

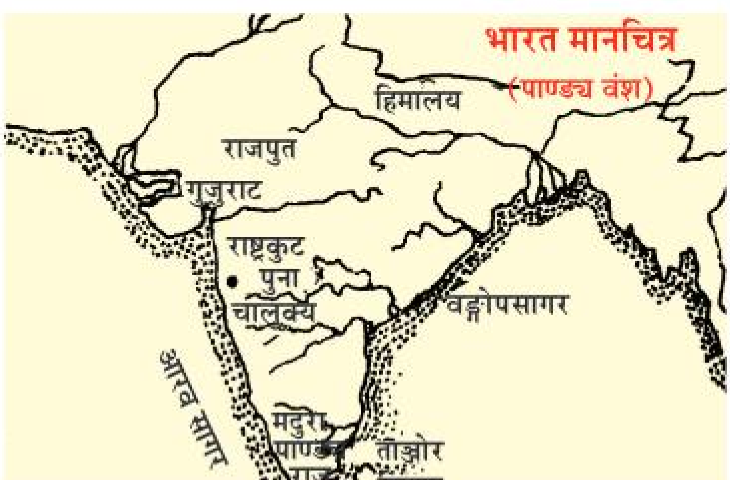

जैसे मार्कपोल ने भारत पर्यटन किया था वैसे दूसरे पर्यटकों के नाम अपने मित्रों से पूछकर लिखिए ।

पहले पांडेय राज्य की राजधानी मदुरा (अभी तमिलनाडु का मदुराई शहर) था । उनके राज्य का वृहत्तम बंदरगाह कयल था । वहाँ अरबसागर और चीन से अनेक जहाज आते थे । फलस्वरूप पांडेय राज्य का बहुत वैदेशिक शक्तियों के साथ व्यावसायिक संपर्क था । प्राय : पाण्डेय राज्य के अधिवासियों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया था । उन राज्यों में जैनों की संख्या कम थी । बौद्ध धर्म की सत्ता पांडेय राज्य में नहीं थी । नौवाणिज्य तथा वीरता के लिए पांडेय वंश स्मरणीय है ।

कयल बंदरगाह किन-किन कार्यों के लिए उपभोग होता था ?

हयशाल वंश :

हयशाल वंश का शासन आधुनिक मैसूर के निकट होता था । इस वंश के राज्यों में विट्टिग या विष्णुवर्धन अन्यतम थे । उन्होंने द्वारसमुद्र के पास राजधानी स्थापित की थी । वे वैष्णव धर्मावलंबी थे ।

द्वितीय वीरवल्लाल इस वंश के अन्यतम राजा थे । वे चालुक्य और यादवों के साथ लड़ाई कर अपने राज्य की रक्षा करने के लिए समर्थ हुए थे । तृतीय वीरवल्लाल इस वंश के अंतिम राजा थे । चौदहवीं शती के मध्यभाग में मुसलमानों के आक्रमण के कारण हयशाल वंश का पतन हुआ ।

यादव वंश :

कल्याणी में शासन करने वाले चालुक्यों के पतन के बाद दक्षिण भारत में यादव वंश का आरंभ हुआ था । यादव लोगों की राजधानी देवगिरि थी (महाराष्ट्र का दौलतवाद शहर) । भिल्लिमा इस वंश के एक प्रसिद्ध राजा थे । उनके पुत्र जैतुगी या जैत्रपाल ने भारतीयों को पराजित किया था ।
जैत्रपाल के बाद सिहंता यादव वंश के राजा बने । उन्होंने युद्ध और राज्य विजय के माध्यम से अपने यादव राज्य का विस्तार किया । रामचंद्र देव इस वंश के एक शक्तिशाली राजा थे । उनके समय में दिल्ली सुलतान अलाउद्दीन खिलजी देवगिरि पर आक्रमण करके बहुत धनरत्न लूट लिए । रामचन्द्र देव के बाद शंकर देव और हरपाल देव ने शासन किया । चौदहवीं शती के प्रथम भाग में मुसलमानों के आक्रमण के कारण यादव वंश का पतन हुआ ।

क्या आप जानते हें ?

दिल्ली के सुलतान अल्लाउद्दीन खिलजी के सेनापति मालिक काफुर ने दक्षिण भारत के राजयों को पराजित कर उनके राज्यों पर अधिकार कर लिया था ।

जैत्रपाल ने अपने साम्राज्य को विस्तार करने के लिए क्या-क्या कदम उठाए होंगे ? आप अपने मित्रों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

(घ) ओड़िशा में सोमवंशी शासन :

राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कृतित्व

ओड़िशा में सोमवंशी का शासन दीर्घ दो सौ साल तक था । इससे ओड़िशा के राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में एक नए अध्याय की सृष्टि हुई थी । फलस्वरूप राजनीतिक स्तर में स्थिरता आई और तत्सहित ओड़िशा की कला और स्थापत्य भी समृद्ध हुआ ।

राजनीतिक कृतित्व :

सोमवंशी चंद्रवंशीय क्षत्रीय थे । सोमवंश भी केशरी वंश के नाम से प्रसिद्ध है । यद्यपि इस वंश के शासक प्रथम जन्मेजय के पहले कुछ राजाओं ने शासन किया था फिर भी उनका कृतित्व उल्लेखनीय नहीं था । जन्मेजय ८८२ ई.में सिंहासन पर बिराजे । उन्होंने भंजवंश के राजा रणभंज देव को परास्त किया । कलचुरी भी उनसे पराजित हुए थे । उन्होंने अपने आप को 'परमेश्वर', 'परम भट्टारक' एवं 'त्रिकलिंगाधिपति' आदि उपाधि से विभूषित किया था । सुवर्नपुर (वर्तमान सोनपुर) उनकी राजधानी थी ।

जन्मेजय की उपाधियों के बारे में आप को मालूम हुआ ? उस समय अन्य राजा सब किन उपाधियों से विभूषित हुए थे ? दूसरों से आलोचना कर लिखिए।

जन्मेजय के बाद प्रथम जजाति ने ९२२ ई. में सिंहासन आरोहण किया था । उन्होंने पहले सुवर्णपुर से विनीतपुर को फिर जजातिनगर को अपनी राजधानी को स्थानान्तरित किया । उन्होंने भी कलचुरियों को पराजित किया था । उन्होंने भंजों को पराजित करने के साथ-साथ उत्कल पर शासन चलाने वाले भौमकरों के राज्य के कुछ अंशों को अधिकार कर लिया था ।

ओड़िशा का मानचित्र बनाकर उसमें विरजा क्षेत्र को दर्शाइए ।

प्रथम ययाति के बाद भीमरथ, धर्मरथ एवं नहुष ने शासन चलाया । इनके बाद द्वितीय ययाति १०२३ ई. मे सिंहासन पर बैठे । उन्होंने भीमकरों को परास्त कर उत्कल अधिकार किया था । वे अपने आप को 'महाराजधिराज' उपाधि से भुषित करने लगे थे । वे ब्राह्मणों धर्म के पृष्ठपोषक थे । १०,००० ब्राह्मणों को कनौज से जाजपुर को आमंत्रित कर लाए थे । उनके अपरांत उद्योत केशरी, द्वितीय जन्मेजय, पुरंजेय आदि ने शासन किया था । सोमवंश के अंतिम राजा कर्णदेव या कर्णकेशरी को भी उन्होंने पराजित किया था । १११० ई. में गंगवंश के राजा चोड़गंगदेव ने उत्कल पर अधिकार जताया ।

क्या आप जानते हैं ?

- सोमवंशियों के समय में विराज क्षेत्र एक धर्मपीठ था ।
- यह जाजपुर जिले की वैतरणी नदी किनारे स्थित है । विरजा मंदिर नाभिगया दशाक्ष्वमेध घाट तथा सप्तमात्रुका पूजा के लिए प्रसिद्ध है ।

सांस्कृतिक कृतित्व :

सोमवंशियों की मंदिर निर्माण शैली अत्यंत सुन्दर थी । भुवेनक्ष्वर लिंगराज मंन्दिर, मुक्तेक्ष्वर मंन्दिर, और चंडीखोल मन्दिर आदि सोमवंशियों की प्रमुख कीर्तियाँ हैं । आज भी पर्यटक इन मंदिरों के स्थापत्य से आश्चर्य-चकित होते हैं । उस समय निर्मित मंदिरों में से भुवनेश्वर मंदिर प्रसिद्ध है । द्वितीय जजाति के समय यह मन्दिर बना था । मन्दिर की ऊँचाई प्राय : ५५ मीटर है । यह मन्दिर जगमोहन, नाट मन्दिर और भोगमंडप की समष्टि से बना था । इस विशाल मन्दिर के चारों ओर कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं । लिगंराज मन्दिर कलिंग स्थापत्य का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है ।

क्या आप जानते हैं ?

- भुवनेक्ष्वर के राजारानी मंदिर में कोंन-से देवता की पूजा नहीं होती ?

अपने अंचलों के विभिन्न मंदिरों के नाम लिखकर उनकी प्रसिद्धि के कारण लिखिए ।

लिगंराज मंदिर

(ङ) ओड़िशा में गंगवंश का शासन :

चोड़गंगदेव प्रथम नरसिंह देव, पुरी का जगन्नाथ मन्दिर और कोणार्क का सूर्य मन्दिर :

सोमवश शासन के पतन के बाद ओड़िशा में गंगवंश का शासन आरंभ हुआ । गंगवंश का शासन लगातार तीन सौ वर्ष तक रहा । फलस्वरूप मध्य युगीय ओड़िशा में एक नूतन अध्याय की सृष्टि हुई । ओड़शा के पड़ोसी हिन्दू राज्यों पर मुसलमानों का आक्रमण हो रहा था पर ओड़िशा इसका व्यतिक्रम था । गंग वंश की वीरता के कारण ओड़िशा राज्य दीर्घ दिनों तक एक स्वाधीन हिन्दू राष्ट्र रहा । पुरी का श्रीजगन्नाथ मंदिर और कोणार्क का सूर्य मंदिर गंग वंश के स्थापत्य का श्रेष्ठ निदर्शन है ।

चोड़गंगदेव :

पहले गंग वंशी श्रीकाकुल्लम जिले के मुखलिंगम अंचल पर शासन करते थे । वज्रहस्तदेव और उनके बाद राजराजदेव के प्रयत्न के कारण यह राजवंश पराक्रमी था । गंग वंश की राजधानी वंशधारा नदी किनारे स्थित कलिंगनगर (वर्तमान आध्रप्रदेश के श्रीकाकुलम राज्य का मुखलिंगम) थी । राजराजदेव की मृत्यु के बाद चोड़गंगदेव ने १०७७ ई. में सिहांसन अधिकार किया । उन्होंने राज्य जय के द्वारा एक विशाल गंग साम्राज्य की प्रतिष्ठा की । उनके ७० वर्ष तक दीर्घ शासन के कारण ओड़शा एक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य हो पाया । गंगवंशीय शासन श्रीकाकुलम जिले में आरंभ हुआ था और कलिंग नगर चोड़गंगदेव की राजधानी थी ।

साम्राज्य विस्तार :

चोड़गंगदेव की ख्याति एक दिगविजयी सम्राट के रूप में है । उन्होंने सोमवंशी के अंतिम राजा कर्णदेव को पराजित कर १११० ई. में उत्कल को अधिकार किया । फिर उन्होंने बंग पर आक्रमण कर आरम्य और राढ़ अंचल को अपने साम्राज्य में अन्तर्भुक्त किया । दक्षिण भारत का बैंगी राज्य भी उनके अधीन में आया । फलस्वरूप उनका साम्राज्य ऊतर में गंगानदी से लेकर दक्षिण में गोदावरी तक फैला है । ऐसा ऐतिहासिक विश्वास है । उन्होंने बांरग, कटक, चौद्वार, जाजपुर और अमरावती (कटक जिले का छतिआ) में दुर्ग निर्माण किया था । इसप्रकार चोड़गंगदेव ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर अपने को 'महाराजाधिराज', 'त्रिकलिंगाधिपति', 'श्रीगंगचूड़ामणि' आदि उपाधियों से भूषित किया था । उनकी मृत्यु ११४७ ई. में हुई थी ।

> **क्या आप को मालूम है ?**
>
> - कोर्णिताम्र फलक के अभिलेख में चोड़गंगदेव के राज्य की विजय का वर्णन है । इसमें उनके प्रथम उत्कल के राजा (कर्णकेशरी या कर्णदेव) को पराजित करेन की सूचना अल्लेख है ।

राज्य शासन :

चोड़गंग देव एक दक्ष शासक थे । वे उत्पादित अनाजों का एक - षष्ठांश भाग कर वसूल करते थे । इसके अलावा वाणिज्य कर, नमक कर, वन्य जात द्रव्यों से नियत कर भी राजकोष में जमा होता था । और पैसे को वे जनहित तथा धार्मिक कार्यों में खर्च करते थे । किंवदन्ती के अनुसार उन्होंने भुवनेश्वर निकट कौशल्या गंग जलाशय खुदवाया था ।

चोड़गंगदेव के द्वारा वसूल किए हुए कर उस समय किन लोकहित कार्यों में लगे होंगे, मित्रों से चर्चा करके लिखिए।

चोड़गंगदेव साहित्य के पृष्ठपोषक थे । उनके समय में सतानद ने 'भाश्वती' नामक पुस्तक की रचना की थी । उसमें स्वगीय पिंडों की स्थिति तथा चलन संबंधीय सूचनाओं का उल्लेख हुआ था चोड़गंगदेव में धर्म के प्रति सहनशीलता का भाव था यद्यपि वे शैव थे, फिर भी परवर्ती समय में उन्होंने वैष्णव धर्म ग्रहण किया था । उन्होंने पुरी में विश्व प्रसिद्ध श्री जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कार्य किया था । वैष्णव धर्म के विशिष्ट प्रचारक रामानुज उनके समय में ही ओड़िशा आए थे । उन्होंने जाजपुर में गंगेश्वर शिव मंदिर और सीमाचल में विष्णु मंदिर निर्माण किया था । उनकी रानी कस्तुरी कामोदिनी ने टिकाल्ली में एक जगन्नाथ मंदिर निर्माण किया था ।

क्या आपको मालूम है ?

- 'दासगोबा' अभिलेख से पता चलता है कि चोड़गंग देव ने पुरी का जगन्नाथ मन्दिर निर्माण किया था ।
- सतानद ने स्वगीर्य पिण्डों की स्थिति और चलन के संबध में 'भास्वती' में उल्लख किया था । उसी प्रकार ओड़िशा के जिन वरपुत्रों ने ग्रह नंक्षत्रों पर उपादेय पुस्तक लिखी हो तो उस संबंध में अपने मित्रों से आलोचना कर लिखो ।

चोड़गंग देव एक दिग्‌विजयी वीर थे । उत्कल पर अधिकार जमाने के बाद उन्होंने प्रजाओं को खुश रखने के लिए क्या-क्या उठाए होंगे, उस पर आलोचना कर लिखिए ।

प्रथम नरसिंहदेव :

प्रथम नरसिंहदेव गंगवंश के एक प्रसिद्ध कवि थे । १२३८ ई. में उन्होंने सिंहासन अधिकार किया था । उनके समय में गंग साम्राज्य उन्नति की चरम शिखर पर पहुँचा था । ओड़िशा इतिहास में वे भी लांगुला नरसिंह देव के नाम से परिचित थे ।

राज्य जय :

प्रथम नरसिंह देव एक दिग्‌विजयी सम्राट थे । उन्होंने बंग शासन तुघ्रिल तुघान खाँ को पराजित कर बंगाल के बर्द्धमान, हुगुलि और मेदिनापुर आदि अंचलों को ओड़िशा साम्राज्य में मिला दिया था । उन्होंने तेलेगांना के राजा गणपति को पराजित किया था । उनके समय में गंग साम्राज्य उन्नति की चरम शिखर पर पहुँचा था ।

क्या आप जानते हैं ?

प्रथम नरसिंह देव को लागुंला नरसिंहदेव भी कहा जाता है । चलने के समय उनकी राजकीय पोशाक भूमि स्पर्श करती थी । वह पूँछ की भाँति देख रही थी जिसके कारण उनका ऐसा नामकरण हुआ था ।

प्रथम नरसिंहदेव के राज्य की विजय के पीछे क्या उद्देश्य था दूसरों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

राज्य शासन :

प्रथम नरसिंह देव एक दक्ष शासक थे । उनके शासन काल में कला, साहित्य और स्थापत्य का विकास हुआ था । संस्कृत साहित्य में उनका पांडित्य पर्याप्त था । उनकी राजसभा में विद्याधर विशिष्ट कवि थे । उन्होंने 'एकावली' नामक प्रसिद्ध अलंकार शास्त्र की रचना की थी । प्रसिद्ध ग्रंथ रचनाकार विश्रनाथ कविराज उनके समकक्ष थे । प्रथम नरसिंहदेव ने कोणार्क का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर निर्माण किया था । बालेश्वर जिले का रेमुणा के पास स्थित क्षीरचोरा गोपीनाथ मन्दिर उनके समय की कीर्ति है । उन्होंने सदाशिव मठ भुवनेश्वर में निर्माण किया था । उनकी मृत्यु १ २ ९ ४ ई. में हुई थी ।

यदि आप प्रथम नरसिंह देव के राज्य में प्रजा होते तो कौन से कार्य करने तथा क्यों करने के लिए उत्सुक रहे होंगे ? लिखिए ।

पुरी का जगन्नाथ मन्दिर :

पुरी का जगन्नाथ मंदिर चोड़गंगदेव की अमर कीर्ति है । यह कलिंग स्थापत्य का निदर्शन है । इसके कारूकार्य अत्यंत उच्चकोटि और रमणीय हैं । इसकी ऊचाँई ६ ६ मीटर है । इस मन्दिर के चारोंओर एक विशाल दीवार है जिसे 'मेघनाद दीवार' कहा जाता है । इस मन्दिर के चार प्रवेश द्वार हैं । मन्दिर के पूर्व द्वार के सामने १ २ मीटर ऊँचाई का अरूण स्तंभ है । इस मन्दिर के अन्दर महाप्रभु बलभद्र, माँ सुभद्रा देवी एवं जगन्नाथ की मूर्ति शोभायमान हैं । मन्दिर के चारोंओर काशी विश्रनाथ मन्दिर, नृसिंह मंदिर, विमला

क्या आपको मालूम है ?

पुरी जगन्नाथ मन्दिर में प्रवेश करने के लिए चार द्वार हैं - दक्षिण द्वार है 'अश्वद्वार'; उत्तर द्वार है 'हस्ती द्वार'; पूर्व द्वार है 'सिंहद्वार' और पश्चिम द्वार है 'ब्याघ्र द्वार' ।

जगन्नाथ मंदिर, पुरी

मन्दिर, महालक्ष्मी मंदिर, नवग्रह मंदिर आदि छोटे - छोटे मंदिर विद्यमान हैं । पुरी जगन्नाथ मन्दिर के दो आकर्षणीय स्थान हैं - मुक्तिमंडप और आनन्द बाजार । जगन्नाथ मन्दिर की रथयात्रा विश्वप्रसिद्ध है ।

पुरी का नाम जैसे श्रीक्षेत्र है वैसे ओड़िशा के अन्य स्थानों को किस क्षेत्र के नाम से जाना जाता है दूसरों से पूछकर लिखिए ।

कोणार्क का सूर्य मन्दिर :

कोणार्क का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर प्रथम नरसिंह देव की अम्लान कीर्ति है । यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के मोहान के पास बंगोप सागर किनारे पर अवस्थित है । किंवदन्ती के अनुसार इसके निर्माण कार्य में १२००कारीगर नियुक्त हुए थे । लांगुला नरसिंह देव के मंन्त्री शिवेइ सामन्तराय थे । उस समय के प्रसिद्ध शिल्पी विशु महारणा के प्रत्यक्ष निदर्शन में इसका निर्माण कार्य हुआ था । उनका पुत्र धरमा मन्दिर के शीर्ष पर कलश बिठाने में सक्षम हुआ था ।

सूर्य मन्दिर, कोणार्क

कोणार्क मन्दिर निर्माण के समय में यदि आप एक शिल्पी होते तो कोणार्क को अधिक सुन्दर करने के लिए क्या कदम उठाते ?

कोणार्क मन्दिर सूर्य देव रथ के आकार सदृश है । इसमें २४ पहिए और ७ घोड़े हैं । इस मन्दिर में विशाल लोहे की कड़ियाँ और पत्थर लगे हुए हैं । कोणार्क का मुख्य मंदिर वर्तमान टुटी-फूटी अवस्था में है । वहाँ सूर्यदेव का सिंहासन है । मन्दिर के चारों ओर विभिन्न देव-देवी, गंधर्व, परी, नर्तकी, पेड़पौधे, फूल तथा युद्ध के चित्र खोदित हैं । मुख्य मन्दिर के सामने काले चिकने पत्थर की नवग्रह मूर्ति निर्मित है जो अभी बाईं ओर नवग्रह मन्दिर में स्थापित है । कोणार्क मन्दिर के परिसर में छायादेवी मन्दिर, हाथी-सिंह और अश्व की मूर्ति अत्यंत चिताकर्षक है । कोणार्क मंन्दिर का सौन्दर्य वर्तमान भी देश - विदेशों के पर्यटकों को आश्चर्य-चकित कर देता है ।

क्या आप को मालूम है ?

कोणार्क मन्दिर में कई चितां के साथ एक जिराफ का भी चित्र हें ।

कोणार्क मन्दिर निर्माण में लगने वाले पत्थर कैसे ऊपर जाते थे और किस प्रकार जुड़कर मन्दिर निर्माण होता था, अन्दाज लगाकर लिखिए ।
कोणार्क मन्दिर के २४ पहिए और ७ घोड़े किसके प्रतीक होंगे, दूसरों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

प्रथम नरसिंहदेव के बाद प्रथम भानुदेव द्वितीय नरसिंहदेव, द्वितीय भानुदेव आदि राजा शासन करते थे । चतुर्थ भानुदेव या मत्तभानुदेव गंगवंश के अंतिम राजा थे ।१४३५ ई. में उनकी मृत्यु हुई थी । फिर गंगवंश लोप हुआ और सूर्यवंशी गजपतियों का शासन प्रारंभ हुआ ।

(च) नूतन धर्म और आध्यात्मिक गोष्ठी की सृष्टि

नूतन भाषा और लिपि का जन्म तथा कला क्षेत्र में नूतन शैली का प्रवर्तन :

नूतन धर्म और आध्यात्मिक गोष्ठी की सृष्टि

मध्ययुग में भारतीय धर्म क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए । बौद्ध धर्म का पतन होने के साथ-साथ जैन धर्म का प्रभाव घटने लगा । ब्राह्मण्य धर्म में संस्कार आया और तत्सहित भक्तिवाद का जन्म और प्रसार हुआ । इस समय बहु - धर्म संस्कारों का आविर्भाव हुआ । उनमें से अधिकांश दक्षिण भारत में पैदा हुए थे और समग्र भारत में लोकप्रिय हुए थे । ऊतर भारत में भी अनके धर्म संस्कारों का भी आविर्भाव हुआ था ।

दक्षिण भारत में भक्तिवाद की सृष्टि क्यों हुई थी, दूसरों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

दक्षिण भारत में जन्म लेने वाले धर्म संस्कारों शंकराचार्य स्वतंत्र थे । ७८८ ई. में केरल के कालाड़ि में उनका जन्म हुआ था । उनका मतवाद 'अद्रैत मतवाद' था । उन्होंने समग्र जगत को मिथ्या और ब्रह्म (ईश्वर) को सत्य कहा था । उनका कहना था कि ज्ञान के प्रभाव से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है । उन्होंने भारत में अनेक धर्म पीठ और आश्रमों की प्रतिष्ठा की थी । ओड़िशा के पुरी जिले में उन्होंने एक मठ की प्रतिष्ठा की थी । उनकी चेष्टा से हिन्दू धर्म का पुन: उत्थान हुआ था । उनकी मृत्यु मात्र ३२ साल में हुई थी ।

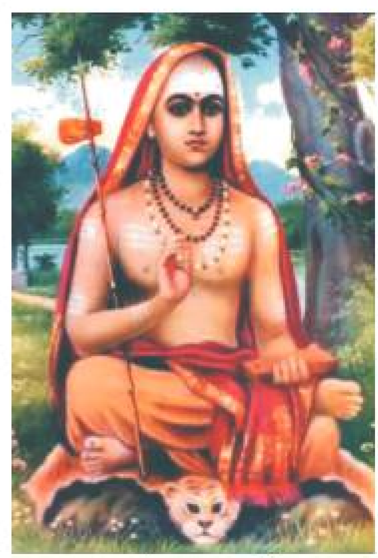
शंकराचार्य

दक्षिण भारत में ११वीं शती में रामानुज का जन्म हुआ था । उन्होंने भक्तिवाद का प्रचार किया था । उन्होंने अपने आप को ईश्वर के समीप पूरी तरह समर्पण करने के लिए उपदेश दिया था । उनका कहना था कि प्रेम और भक्ति से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है । उन्होंने प्रचार किया था कि ज्ञान की अपेक्षा भक्ति ही ईश्वर प्राप्ति का श्रेष्ठ माध्यम है ।

शंकराचार्य की तुलना में रामानुज का मत भिन्न था । उनके मतानुसार मानव एक जाति है । उनमें उच्च-नीच का भाव नहीं है । उनकी इस वाणी से अनके लोग प्रभावित हुए । रामानुज के मुख्य शिष्य थे, रामानंद । उन्होंने रामानुज के द्वारा प्रचारित भक्तिवाद को उत्तर भारत में प्रचार किया था । वे रामानुज के आदर्श एवं नीतिपूर्ण जीवन को लोगों के सामने प्रस्तुत किया था ।

क्या आप को मालूम है ?

- शंकराचार्य ने भारत में चार मट्ठों का निर्माण किया था । वे हैं - पुरी का गोवर्धन मठ, बद्रीनाथ में ज्योर्ति मठ, द्वारका में शारदा मठ और कर्णाटक के श्रृंगेरम में श्रृंगेरी मठ ।

जब शंकर का मत दक्षिण में प्रचलित था तब रामानुज के भक्तिवाद के प्रति लोग आकर्षित हुए क्यों ? अपने मित्रों से चर्चा कर लिखीए ।

भक्तिवाद के संत क्षेत्रीय भाषा में भजन - कीर्तन, प्रार्थना कर ईश्वर की पूजा करते थे । समाज में विभिन्न श्रेणी के लोग इस धर्म को ग्रहण करते थे । फलत: दक्षिण और उत्तर भारत में भक्तिवाद का प्रसार होता था । इससे ब्राह्मण्य धर्म के पुनरूत्थान में बाधा पहुँची ।

भक्तिवाद के संत क्षेत्रीय भाषा में भजन और प्रार्थना की रचना करते थे । उसी प्रकार आप अपने अंचल की क्षेत्रीय भाषा के भजन और प्रार्थना संग्रह कर एक विवरण प्रस्तुत कीजिए ।

क्या आप को मालूम है ?

- जनश्रुति के अनुसार भक्ति द्राविड उपजी लाए, रामानन्द परगंट किआ, कबीर ने 'सप्तद्वीप नवखंड' अर्थात् भक्तिवाद दक्षिण में उदय हुआ । रामानन्द इसे उत्तर भारत में लाए और कबीर को सर्वत्र प्रचार करने लगे ।

इस समय उत्तर भारत में शैव और वैष्णव धर्म भी अधिक लोकप्रिय होने लगा । रामानुज के समकक्ष निम्बार्क का जन्म दक्षिण भारत में हुआ था । पर वे उत्तर भारत के मथुरा में रहते थे । वे वैष्णव थे । कृष्ण का बाल्यकाल, राधा के प्रति प्रेम, कंस के साथ युद्ध आदि घटनाओं का प्रचार कर उन्होंने लोगों को कृष्ण के प्रति आकर्षित किया । कृष्ण से संबंधीथ कहानियों की रचना कविता के रूप में होकर मन्दिर में स्थानित हुई । इसके कारण समग्र उत्तर भारत में कृष्णलीला लोकप्रिय हुई ।

क्या आप को मालूम है ?

- शंकर के उपासक शैव, विष्णु के उपासक वैष्णव और शक्ति देवी के उपासक शाक्त के रूप में जाने जाते ।

इस समय ओड़िशा में ब्राह्मण्य धर्म का भी प्रचार-प्रसार हुआ था । सोमवंशी शासक शाक्त, वैष्णव एवं शैव धर्म के पृष्ठपोषक थे । गंगों के समय के जगन्नाथ उपासना लोकप्रिय हुई थी, लोगों का विश्रास था कि जगन्नाथ समस्त धर्मां के समन्वय देवता हैं ।

जगन्नाथ जी क्यों समस्त धर्मों के समन्वय देवता हैं ? दूसरों के साथ चर्चा कर लिखिए ।

नूतन भाषा और लिपि का विकास :

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक गौरवमय है । इस समय के बीच नयी भाषा और लिपि सृष्टि होने के साथ साथ क्षेत्रीय साहित्य का विकास भी हुआ था ।

दक्षिण भारत में मुख्यत: दो भाषाएँ प्रचलित थीं । पहली भाषा थी संस्कृत और दूसरी थी क्षेत्रीय भाषा । विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी संस्कृत भाषा प्रयोग करते थे । धार्मिक संस्थाओं में भी संस्कृत प्रयोग होता था । चोल राज्य में आंचलिक भाषा का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में होता था । वहाँ तमिल क्षेत्रीय भाषा के रूप में प्रचलित थी । यह तमिल भाषा पर्याप्त मात्रा में संस्कृत भाषा के द्वारा प्रभावित थी । तमिल भाषा के साथ लिपि का प्रणयन होकर इस भाषा में अनेक साहित्य की रचना हुई । कम्बान के द्वारा तमिल भाषा में रचित 'रामायण' उस समय का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है । उस समय कई नाटकों और कविताओं की रचना हुई थी ।

> आप कितनी क्षेत्रीय भाषाएँ जानते हें लिखिए ।

इस समय आंध्र में तेलगु भाषा और लिपि प्रचलित थी । तेलगु भाषा में 'रामायण' और महाभारत की रचना हुई थी । नानाय के द्वारा रचित 'महाभारत' तेलगु साहित्य की एक अम्लान सृष्टि है । परवर्ती समय में टिकाना नामक एक कवि ने इसे आंध्र में लोकप्रिय करवाया था ।

> आप अपने अंचल के किसी एक प्रसिद्ध ग्रन्थ को किन उपायों से लोकप्रिय कर पाएँगे । मित्रों के साथ चर्चा कर लिखिए ।

इस समय मैसूर में कन्नड़ भाषा भी सृष्टि हुई थी । लिंगायत गोष्ठी के कुछ संतों ने संस्कृत भाषा के बदले कन्नड़ भाषा में साहित्य की रचना की थी । पंपा, पोना और राजा कन्नड़ साहित्य के प्रसिद्ध सृष्टा हैं ।

> आप अपने अंचल के प्रसिद्ध कवि और लेखक के नाम लेखकर उनकी कृतियों के संबंध में लिखिए ।

इस समय उत्तर भारत में अनके क्षेत्रीय भाषाओं और लिपियों का विकास हुआ था । अपभ्रंश भाषा से ही इनकी उत्पति हूई थी जो साधारण लोगों की भाषा थी । पश्चिम भारत में मराठी और गुजराती भाषा लोगों की कथित भाषा के रूप में प्रयोग होती थी । ओड़िशा में ओड़िआ भाषा की सृष्टि इसी समय हुई थी । 'चर्यागीतिका' भी इसी समय सृष्टि हुई थी ।

> भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोग किन-किन भाषाओं का प्रयोग करते थे ? लिखिए ।

कला क्षेत्र में नूतन शैली का प्रवर्तन :

इस युग का वैशिष्ट्य है; कला और स्थापत्य क्षेत्र में नई शैली का प्रवर्तन । दक्षिण भारत में पहले पत्थर काट कर उसमें मन्दिर निर्माण किया जाता था । उस समय पत्थर पर पत्थर रखकर स्वतंत्र रूप से मन्दिर निर्माण किया जाता था । इसमें दो कोठरियाँ रहती थीं । एक थी उपासना कोठंरी और दूसरी प्रवेश कोठरी । क्रमश: मंदिर में अनेक कोठरियाँ बनीं । मन्दिर के चारों ओर दीवारों का निर्माण हुआ । मन्दिर के अंदर जाने के लिए प्रवेश द्वार बना जो 'गोपूरम' नाम से प्रसिद्ध है । मन्दिर के आंगन में छोटे - छोटे मन्दिर का निर्माण हुआ । वहाँ विभिन्न देव - देवी तथा साधु-संतों की मूर्तियों की पूजा हुई । मुख्य मन्दिर बहुत बड़ा था ।

तांजोर का वृहदेश्वर मंदिर

यदि मन्दिर के चारों ओर दीवार न होती तो किस प्रकार की असुविधा होती ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

चोलों के द्वारा निर्मित मंदिर बहुत बड़े-बड़े और सुन्दर तथा आकर्षणीय थे । तांजोर का वृहदेश्वर मन्दिर और गंगइकोंडाचोलपुरम का मन्दिर उनकी अक्षय कीर्ति थी । इन मंन्दिरों की मूर्तियाँ पत्थर या ब्रोंज से बनी थीं । उस समय चोलों के द्वारा निर्मित ब्रोंज मूर्तियाँ विश्व प्रसिद्ध थीं ।

यदि ब्रोंज के बदले अन्य धातु से मंदिरों के भीतर मूर्ति स्थापित होती है तो क्या - क्या सुविधा और असुविधाएँ होंगी ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

चोल समय की ब्रोंज मूर्ति

उस समय मध्य भारत में चांदोल राजाओं के द्वारा निर्मित खजुराहो मन्दिर अपने सून्दर कला कार्य के लिए प्रसिद्ध था ।

राजस्थान के माउंट अबू में निर्मित दिलवारा जैन मन्दिर अपनी मार्वल कला के लिए प्रसिद्ध है । उसी समय ओड़िशा में मुक्तेश्वर मन्दिर, अनंत वासुदेव मन्दिर, पुरी का जगन्नाथ मन्दिर और कोणार्क का सूर्य मन्दिर भी बने थे ।

भुवनेश्वर का मुक्तेश्वर मन्दिर

ओड़िशा के कुछ प्रसिद्ध मन्दिरों के नाम लिखिए । भारत के कुछ विशिष्ट मंन्दिरों के नाम दूसरों से पूछ कर लिखिए ।

इन ने सिखा :

- इतिहास रचना करने के लिए अनेक उपादानों की आवश्यकता है ।
- मध्ययुगीय इतिहास रचना करने के लिए शाहनामा, बाबरनामा, आमुक्त माल्यव एवं अन्य अभिलेखों की आवश्यकता है ।
- सुलतान मामुद ने १७ बार भारत आक्रमण किया था और सोमनाथ मन्दिर लुटा था ।
- मुहम्मद गोरी द्वितीय तिरोरी युद्ध में पृथ्वीराज को पराजित किया था ।
- प्रतिहारों की राजधानी कनौज थी ।
- चोलों की शक्तिशाली नौवाहिनी थी । उनका शासन उत्कृष्ट था । मदुरा पांडेयों की राजधानी थी । उनके समय में मार्कोपोल भारत भ्रमण करने आए थे । हयशालों की राजधानी द्वार समुद्र था । इस वंश के श्रेष्ठ राजा थे द्वितीय वीर बल्लाल ।
- यादवों की राजधानी देवगिरि थी ।
- ओड़िशा में सोमवंश के जन्मेजय प्रथम ययाति, द्वितीय ययाति, कर्ण आदि राजाओं ने शासन किया था ।
- ओड़िशा में गंगवंश के राजा चोड़गंगदेव ने पुरी में जगन्नाथ मन्दिर और प्रथम नरसिंह देव ने कोणार्क में सूर्य मन्दिर निर्माण किया था ।
- शंकर, रामानुज, रामानन्द, निम्बार्क आदि आध्यात्मिकवादियों ने अपना मत प्रचार किया था ।
- **क्षेत्रीय भाषा के रूप में तमिल, तेलगु, ओड़िआ आदि भाषाओं का विकास हुए ।**
- **नई शैली में मध्ययुग में दक्षिण भारत, मध्य भारत और ओंड़िशा में विभिन्न मन्दिरों का निर्माण हुआ था ।**

प्रश्नावली- १

१. **निम्न प्रश्नों के ऊतर दीजिए :**

क) अधिकांश मध्ययुगीय लेखक, कवि और ऐतिहासिकों की मूल रचना क्यों प्राप्त नहीं हो पायी ?

ख) आप मामुद के दरबार के संबंध में क्या जानते हें, लिखिए ।

ग) मुहम्मद घोरी के बारे में जो जानते हो, लिखिए ।

घ) चोल राजाओं के शासन के संबंध में टिप्पणी दीजिए ।

ङ) यादव वंश के राजाओं के कृत्तित्व के संबंध में लिखिए ।

च) प्रथम जन्मेजय के कृत्तित्व के संपर्क में आलोचना कीजिए ।

छ) सोमवंशियों के सांस्कृतिक कृतियों के बारे में उल्लेख कीजिए ।

ज) चोड़गंगदेव के राज्य विजय के संबंध में लिखिए ।

झ) प्रथम नरसिंहदेव के राज्य शासन के संबंध में लिखिए ।

ञ) पुरी के जगन्नाथ मन्दिर की निर्माण-शैली संपर्क में लिखिए ।

ट) रामानुज का मत क्या था ?

ठ) दक्षिण भारत की भाषा और साहित्य संबंध में लिखिए ।

ड) मध्ययुगीय ओड़िशा के मन्दिरों के स्थापत्य संबंध में उल्लेख कीजिए ।

२. गलतियों को शुद्ध कीजिए :

क) सुलतान मामुद के संपर्क में अमीर खुशरू के 'खाजाइन-उल-फुतु' का वर्णन है ।

ख) ओड़िशा के सोमवंशियों के शासन के बारे में साहित्यिक उपादानों से जाना जाता है ।

ग) प्रतिहारी वर्ग शंकर और दुर्गा के उपासक थे ।

घ) द्वितीय वीर वल्लाल पांण्डेय वंश के शासक थे ।

ङ) सोमवंशी सूर्यवंशीय शासक थे ।

च) मुक्तेश्वर मंदिर गंगों की विशिष्ट कृति है ।

छ) सतानन्द की 'भास्वती' सूर्यवंशी गजपति कपिलेंद्रदेव के समय में रचित हुई थी ।

ज) क्षीरचोरा गोपीनाथ मंदिर लांगुला नरसिंहदेव की अनन्य कृति थी ।

झ) नीम्वार्क ने 'अद्वैत मतवाद' प्रचार किया था ।

ञ) नानाय ने कन्नड़ भाषा में 'महाभारत' की रचना की थी ।

ट) लिंगायत गोष्ठी के संतों ने संस्कृत भाषा प्रयोग करते थे ।

ठ) बिहार के आबू पर्वत में स्थित दिलवारा जैन मन्दिर मार्वल कला के लिए प्रसिद्ध है ।

३. कोष्ठक में से उपयुक्त शब्द लेकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।

क) 'तुगलकनामा' ________ के द्वारा रचित हुई थी ।
(फिर्दौसि, आबुल फाज़ल, अमीर खुशरू, जुनायत खाँ)

ख) सुलतान मामुद ने ________ बार भारत आक्रमण किया था ।
(१४, १५, १६, १७)

ग) पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी को ________ युद्ध में पराजित किया था ।
(प्रथम तिरोरी, द्वितीय तिरोरी, चौदेरी, हल्दीघाट)

घ) महेन्द्र पाल ________ वंश के राजा थे ।
(पाल, प्रतिहार, पाण्डेय, चोल)

ङ) चोलों की राजधानी __________ थी ।

(तांजोर, कनौज, मदुरा, द्वार समुद्र)

च) भुवेनश्वर के लिंगराज मंदिर का निर्माण__________ के समय में हुआ था ।

(प्रथम जन्मेजय, प्रथम ययाती, द्वितीय ययाती, कर्णदेव)

छ) 'भाश्वती' नामक ग्रन्थ __________ ने रचना की थी ।

(विद्याधर, सतानन्द, सारला दास, जगन्नाथ दास)

ज) काम्बान __________ भाषा में रामायण रचना की थी ।

(तेलगु, तामिल, कन्नड़, ओड़िआ)

झ) गोपुरम् __________ भारतीय मन्दिरों में देखा जाता है ।

(उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, पूर्व)

ञ) __________ कलिंग स्थापत्य का निदर्शन है ।

(सोमनाथ मन्दिर, राजराजेश्वर मन्दिर, दिलवारा मन्दिर, मुक्तेश्वर मंदिर)

ट) __________ 'अद्वैत मतवाद' के प्रचारक हैं ।

(रामानन्द, रामानुज, शंकर, निंबार्क)

४. 'क' स्तंभ की ईसवी के साथ 'ख' स्तंभ की घटना को जोड़कर वाक्य गठन कीजिए ।

'क'	'ख"
११९२ ई.	प्रथम नरसिंह देव का सिंहासन अधिकार
१०२५ ई.	चोड़गंगदेव का उत्कल अधिकार
१११० ई.	प्रथम महिर भोज का सिंहासन अधिकार
१२३८ ई.	सोमनाथ मन्दिर
८४० ई.	द्वितीय तिरोरी युद्ध

५. टिप्पणी लिखिए :

प्रथम तिरोरी युद्ध, प्रथम राजराज की राज्य जय, सभा कार्य, कयल बन्दर, प्रथम ययाति की राज्य विजय, चोड़गंगदेव का दुर्ग निर्माण, पुरी का जगन्नाथ मन्दिर, शंकर, रामानुज, कबीर, नानक, श्रीचैतन्य, गोपुरम, तेलगु भाषा में साहित्य ।

६. प्रथम तिरोरी युद्ध और द्वितीय तिरोरी युद्ध का एक तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत कीजिए ।

७. चोल, पाण्डेय, हयशाल, यादव, और प्रतिहार वंशीय राजाओं की एक तालिका प्रस्तुत कीजिए ।

८. मुहम्मद घोरी और मामुद गजनी के भारत आक्रमण में कोंन सा अधिक महत्वपूर्ण है ? और क्यों ?

९. मानचित्र बनाकर उसमें चोल, पांडेय, और हयशील के राज्य चिह्नित कीजिए ।

१०. शंकर और रामानुज के मतों पर चर्चा करो और बताओ आप किसे और क्यों अधिक महत्व देंगे ?

११. पठित विषय से क्षेत्रीय भाषा के लिखित साहित्य की एक तालिका प्रस्तुत कीजिए ।

आप के लिए काम

मुक्तेश्वर, अनन्त वासुदेव, महाविनायक मन्दिर और ऐसे अन्य तीन मन्दिरों के चित्र संग्रह कीजिए । उनकी अवस्थिति के स्थानों को दर्शाइए ।

द्वितीय अध्याय

दिल्ली में सुलतानी शासन

दिल्ली में तुर्क सुलतानों ने ३००वर्ष तक शासन किया था । इन सुलतानों ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाई थी । उन्होंने तेरहवीं शताब्दी के आंरभ में भारत उपमहादेश में कई अंचलों को अपने अधीन में रखा था । १२०६ ई. से १५२६ ई. तक कुल ५ राजवंशों ने दिल्ली में सुलतानी शासन चलाया था । इस समय भारत इतिहास और संस्कृति क्षेत्र में एक नया अध्याय आंरभ हुआ था ।

क्या आप जानते हैं ?
जब एक परिवार में एक के एक देश शासन करते हैं तब उस परिवार को राजवंश कहा जाता है ।

दिल्ली में सुलतानी शासन :

टेबल - १

तुर्की शासन (१२०६ - १२९०)
कुतबुद्दिन ऐबक (१२१० - १२१०)
सनसुद्दिन इलतुतमिस (१२१० - १२३६)
रेजिया सुलतान (१२३७ - १२४०)
शियासुद्दिन बलबन (१२६७ - १२८७)

इलतुतमिस् का कवर

आकाइ दरव्वाजा

खिलजी वंश (१२९० - १३२०)
जलाउद्दीन खिलजी (१२९० - १२९६)
अल्लाउद्दीन खिलजी (१२९६ - १३१६)
तुगलक वंश (१३२० - १४१४)
गियासुद्दिन तुगलक (१३२० - १३२४)
मुहम्मद बिन तुगलक (१३२४ - १३५१)
फिरोजशाह तुगलक (१३५१ - १३८८)

सयद वंश (१४१४ - १४५१)
खिजर खान (१४१४ - १४२१)
लोदी वंश (१४५१ - १४८९)
सिकन्दर लोदी (१४८९ - १५१२)
इब्राहिम लोदी (१५१२ - १५२६)

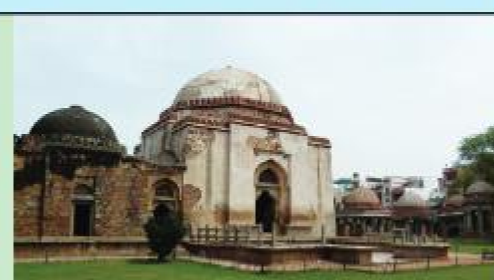
फिरोजशाहा तुगलक्का कवर

टेबल-१ देखकर टेबल १२०६ ई. से १५२६ ई. तक शासन करने वाले राजवंश, सम्राट और उनके शासन की समय तालिका बनाइए ।

भारत के तुर्क शासन: (१२०६ - १२९०)

दिल्ली में सुलतानी शासन की नींव दासवंश ने डाली थी । इस वंश के सुलतानों में से कुछ खुद दास या दासपुत्र थे । क्योंकि वे खुद दास थे, इसलिए उनके द्वारा प्रतिष्ठा पाने का वंश दासवंश कहा जाता था । १२०६ ई. से १२८७ ई के बीच कुतबुद्दिन ऐबक, इलतुतमिस, रेजिया, और बलबन दिल्ली सिंहासन पर बैठकर शासन कार्य करते थे ।

क्या आप जानते हैं ?

अरब और तुर्क ने उच्च बुद्धि संपन्न नौकरों को लिपिक, सैनिक, प्रशासक पदों में नियुक्ति की । यदि ये नौकर अच्छे काम करके अपने मालिक को खुश करते थे तब उन्हें दासत्व से मुक्त किया जाता था ।

कुतबुद्दिन ऐबक : (१२०६ - १२१०)

कुतबुद्दिन ऐबक दास वंश के प्रथम सम्राट होने के पहले मुहम्मद गोरी के दास थे । उनकी असाधारण प्रतिभा थी । इसलिए मुहम्मद गोरी ने उन्हें सेनाध्यक्ष बनाया और उन पर उत्तर भारत जय करने का दायित्व सौंपा । कुतबुद्दिन ऐबक ने सम्राट होने से पहले दिल्ली, कोली (अलीगड़), कनौज, बिहार, आदि राज्यों पर विजय प्राप्त की थी । मुहम्मद गोरी का कोई बेटा नहीं था । इसलिए कुतबुद्दिन ऐबक १२०६ ई. में दिल्ली सिंहासन पर बैठ थे । उन्होंने अनेक ज्ञानी गुणी व्यक्तियों का आदर किया था । उनमें हासन निजामि अन्यतम थे । उन्होंने दिल्ली और अजमीर में मस्जिद निर्माण किया था । दिल्ली में स्थित कुतबमीनार निर्माण कार्य उन्होंने किया था । पोलो खेलने के समय वे घोड़े से गिर पड़े और १२१० ई में उनकी मृत्यु हो गई ।

कुतबुद्दिन ऐबक

क्या आप जानते हैं ?

कुतबुद्दिन ऐबक ने सिर्फ चार साल तक शासन किया था । उन्होंने दिल्ली में क्वात उल-इसलाम और अजमीर में 'ढाई दिनका झोंपड़ा' मस्जिद बनाया था । कुत्बमीनार दिल्ली के मेहेरोली में अवस्थित है ।

वर्तमान दिल्ली में सुलतानों के द्वारा निर्मित मस्जिदों के नाम दूसरों से पूछकर लिखिए ।

इलतुतमिस (१२१० - १२३६)

इलतुतमिस

कुत्बुद्दिन ऐबक के उपरान्त उनके दामाद इलतुतमिस ने दिल्ली सिंहासन अधिकार किया । राजा होने से पहले वे भी दास थे । राजा होने के समय उन्होंने कई समस्याओं का सामना किया था । कुतबुद्दिन के पुत्र आरम शाहा, मुलतान, बिहार के प्रशासक और राजपुत्रों के द्वारा ये सारी समस्याएँ सृष्टि हुई थीं । उन्होंने इन समस्याओं का हल बहुत धैर्य के साथ किया था । उन्होंने युद्ध में इनमें से कुछों को पराजित किया था और कुछों के साथ मित्रता स्थापन भी की थी । फलत: उनका पूर्व के बंगाल से पश्चिम के सिन्धु प्रदेश तक फैला था ।

इसके अलावा उनके शासन काल में महापराक्रमी मध्यएशिया के मंगोल शासक चेंगिज खाँ ने भारत आक्रमण किया था । उन्होंने सिंधु नदी किनारे स्थित कई अंचलों पर अधिकार किया था । पर इलतुतमिस की प्रंचड बुद्धि के कारण चेंगिज खाँ ने भारत के कई अंचलों को दखल करने की चेष्टा नहीं की थी । इसप्रकार उन्होंने विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सफलता पूर्वक हल करके दिल्ली शासन को सुदृढ़ किया था । ऐसा कहा जाता है कि इन सब कारणों से उन्होंने भारत में सुलतानी शासन प्रतिष्ठा की थी ।

इलतुतमिस एक प्रचंड व्यक्तित्व और दक्ष शासक थे । उन्होंने 'रुपया' नामक एक मुद्रा का प्रचलन किया था । वे न्याय विभाग में बहुत संस्कार लाए थे । उनके समय में कला, स्थापत्य और शिक्षा क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई थी । कुतबमीनार का निर्माण कार्य यदापि कुत्बुद्दिन से आरंभ हुआ था पर समाप्त का कार्य इलतुतमिस के द्वारा हुआ था । सन १२३६ ई. में उनकी मृत्यु हुई थी ।

क्या आप जानते हैं ?

- इलतुतमिस का पूरा नाम सामसुद्दिन इलतुतमिस था ।
- जब वे छोटे थे तब उनके भाइयों ने उन्हें जमालउद्दीन नानक एक सोनार को बेच दिया था ।
- बाद में कुतबुद्दीन ऐबक ने इलतुतमिस को दास बनाया था ।
- इलतुतमिस के समय में दिल्ली द्वितीय बागदाद के रूप में जाना गया ।
- इलतुतमिस ने अपने इलाके को कुछ राज्यों में भाग किया था ।
- इलतुतमिस ने चालीस संभ्रांत दक्ष गुलामों को प्रशासिनक तालीम देकर कई दायित्व पूर्ण कार्य सौंपा था । ये चालीस सेनाएँ (चिहाल गानि) नाम परिचित हैं ।

इलतुतमिस ने रुपया नामक मुद्रा प्रचलित किया था । इसके द्वारा लोगों कों क्या - क्या सुविधाएँ मिली होंगी, मित्रों से आलोचना कर लिखिए ।

रेजिआ : (१२३६ - १२४० ई.)

इलतुतमिस की मृत्यु के बाद उनकी बैरी रेजिआ दिल्ली सिंहासन पर बैठी थी । उन्हें शासन कार्य में तुर्क सामतों का सहयोग मिला था पर कुछ प्रादेशिक शासकों ने उनका विरोध किया था । उनके बाद कुछ दुर्बल सुलतानों ने ठीक से शासन कार्य नहीं चला पाया । परिणाम स्वरूप इलतुतमिस का पुत्र नासिरूद्दिन मामुद की मृत्यु के बाद गियासुद्दिन बलबन दिल्ली के सुलतान बने ।

क्या आप जानते हैं ?

दिल्ली सिंहासन पर बैठने वाली पहली और अंत्मि मुसलमान शासिका हो ।

सुलतान रेजिआ की तरह आप हमारे देश और विदेश की कुछ शासिकाओं के नाम तालिका में प्रस्त कीजिए ।

गियासुद्दिन बलबन : (१२६६-१२८७ ई.)

गियासुद्दिन बलबन

इलतुतमिस के चालीस गुलाम थे और सुलतान बनने पहले उनमें गियासुद्दिन बलबन एक थे । सिंहासन अधिकार करने के बाद इलतुतमिस ने सुलतान पद की मर्यादा, क्षमता और प्रभाव बढ़ाने का खूब प्रयत्न किया था । बलबन ने सेनाओं का पुन: संगठित किया था । इसके अलावा उन्होंने कई महत्वपूर्ण स्थानों पर दुर्गों का निर्माण किया । उन्होंने एक सुदृढ़ गुप्तचर संस्था गठन की थी । उन्होंने दिल्ली और दोआब के पास - पड़ोस क्षेत्रों में सख्त कदम उठाकर कानून तथा अनुशासन की रक्षा की थी । बलबन की एक शक्तिशाली गुप्तचर संस्था थी जिसकी वजह से उन्होंने मंगोलों के आक्रमण से उत्तर भारत की रक्षा की थी ।

बलबन ने क्यों शक्तिशाली गुप्तचर संस्था गठन की थी ? मित्रों के साथ चर्चा कर लिखिए ।

बलबन ने अपने साम्राज्यों की व्यवस्थित शासन और सामाजिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन किया था । कला और साहित्य का विकास उनके निर्देश से अच्छी तरह होता था । अनेक ज्ञानी और विद्वान लोगों को दरवार में उन्होंने स्थान दिया था । इनमें कवि अमीर खुश्रु स्वतंत्र थे ।

क्या आप जानते हैं ?

- बलबन राजशक्ति की पुन: प्रतिष्ठा के लिए स्वर्गीय राजतंत्र नीति (Divine Right of Kingship) अनुसरण की थी ।
- सुलतान अपने को ईश्वर के प्रतिनिधि मानते थे ।
- सुलतान को दर्शन करने के लिए लोगों को प्रणाम या पांव चुमना पड़ता था ।
- उन्होंने सख्त नीति अवलंवन कर अपने साम्राज्य को सुदृढ़ किया था ।

बलबन ने अनेक मस्जिदों का निर्माण किया था । इन कार्यों के लिए बलबन दासवंश के श्रेष्ठ सम्राट माने जाते हैं । १२८७ ई.में उनकी मृत्यु हुई थी । उनकी मृत्यु के बाद दास वंश का पतन होना आरंभ हुआ था । दासवंश के परवर्ती शासक दुर्बल थे । इसलिए दिल्ली में खिलजी वंश शासन आरंभ हुआ था ।

जलालउद्दिन खिलजी

बलबन ने सम्राटों की क्षमता वृद्धि करने के लिए क्या-क्या कदम उठाए थे ? दूसरों से तथ्य संग्रह कर लिखिए ।

खिलजी वंश : (१२९० - १३२० ई.)

जलालउद्दिन खिलजी १२९० ई. में दिल्ली सिंहासन अधिकार किया था । उनकी मृत्यु के बाद उनके दामाद अल्लाउद्दिन खिलजी दिल्ली सिंहासन पर बैठे ।

अल्लाउद्दिन खिलजी : (१२९६ - १३१६ ई.)

अल्लाउद्दिन खिलजी

अल्लाउद्दिन खिलजी १२९६ ई. में दिल्ली सिंहासन अधिकार किया था । उन्होंने २० सालों तक शासन किया था । सुलतानी इतिहास में उनका स्वतंत्र स्थान था । द्वितीय ऐलकजेंडर होकर समग्र विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिए उनकी इच्छा थी । परंतु उन्होंने पहले वृद्ध परिषद आ ल्ला उल् मुलक के परामर्श से समग्र भारत जय करने का निर्णय लिया था ।

यदि आप अल्लाउद्दिन खिलजी होते तो विश्व जय करने के लिए क्या–क्या योजनाएँ करते, उल्लेख कीजिए ।

इनके अलावा उन्होंने तीन कार्य करने की दृढ़ इच्छा प्रकट की थी । वे हैं तुर्क सामन्तों का ह्रास, दाक्षिणात्य और राजस्थान विजय, मंगोल शक्ति का ध्वंस साधन ।

इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए उन्हें एक विशाल सेनावाहिनी की जरूरत थी । सेनावाहिनी के खर्च के लिए वे गंगा यमुना के मध्यवर्ती दोआब अंचल के अमीरों से अधिक कर वसूल करते थे । इसके अलावा जमीन के मापन के अनुसार कर वसूल किया जाता था । इस प्रकार अल्लाउद्दिन विभिन्न सूत्रों से कर वसूल कर के राजकोष वृद्धि करते थे । चीजों की कीमत का वृद्धि पर नियंत्रण था ।

क्या आप जानते हैं ?

- अल्लाउद्दिन खिलजी जलालउद्दिन खिलजी का भतीजा था ।
- अललाउद्दिन खिलजी ने कहा था कि सुलतान ही ईश्वर के स्वरूप हैं । उनकी तुलना सामान्य लोगों के साथ नहीं हो सकती ।
- कानून और राज्य के मंगल के लिए उनके कार्य और निर्देश होते थे ।

१ २ ९ ९ ई. में अल्लाउद्दिन उलघु खाँ और नसरत खाँ के नेतृत में एक सेनावाहिनी गुजरात की राजधानी अनहिलवारा पर हमला करने आयी थी । एक सेनावाहिनी ने गुजरात और मालव पर विजय प्राप्त की । इसके बाद अल्लाउद्दिन रंथम्भर और मेवार का चितोड़ अधिकार किया था । उन्होंने रानी पद्मिनी को पाने के लिए मेवाड़ आक्रमण किया था । पर रानी पद्मिनी और अन्य राजपुत रानियों ने जहर व्रत पालन कर आग में अपने को जला दिया । उपरोक्त राज्यों के अलवा अल्लाउद्दिन सिवाना और जालोर आदि ने राज्य जय किया था ।

अल्लाउद्दिन का साम्राज्य

अल्लाउद्दिन ने उत्तर भारत में अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त की । इसके बाद १ ३ ० ७ ई. में मालिक कफूर के सेनापतित्व में दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों को जीतने के लिए उन्होंने एक विशाल सेनावाहिनी भेजी । मालिक कफूर दक्षिण भारत के देवगिरि, तेलेंगाना द्वारा समुद्र हयशाल आदि राज्य जीत कर पर्याप्त परिमाण में धन और सोना लाए थे । इन सारे राजाओं को अपने राज्ये के शासक बनने के लिए सुलतान ने अनुमति दी । इसके बदले वे सुलतान को नियमित रूप से कर देते थे । इस प्रकार अल्लाउद्दिन खिलजी एक विशाल साम्राज्य के शासन-कर्ता बन पाए थे ।

चित्र देखकर अल्लाउद्दिन के राज्यों के नाम लिखिए ।

राज्य और साम्राज्य में एक अंतर है
साम्राज्य का आयतन बड़ा है और राज्य का आयतन छोटा ।

उसी प्रकार अन्य अंतरों पर प्रकाश डालिए ।

खिलजी वंश के अंतिम सुलतान कुतबुद्दिन मुवारक शाह को १ ३ २ ० ई. में कत्ल किया गया था । उनके बाद नासिरुद्दिन खुस्रु शाह दिल्ली सिंहासन पर बैठे । तुर्क अफ़गान सामन्तों ने उनकी हत्या की थी ।

क्या आप को मालूम है ?

अल्लउद्दिन के मन में इसलाम धर्म के प्रति अत्याधिक श्रद्धा थी जिसके कारण उन्हें इसलाम धर्म रक्षक उपाधि मिली थी ।

हिन्दुओं के प्रति अल्लाउद्दिन का निष्ठुर व्यवहार था । उनसे जिजिआ, अवकारी आयात और निर्यात शुल्क वसूल करते थे ।

उनके स्थान पर घाजि मालिक गियासुद्दिन तुगलक ने नए सुलतान बनकर तुगलक वंश की प्रतिष्ठा की ।

मुहम्मद बिन तुगलक : (१३२५ - १३५१ ई.)

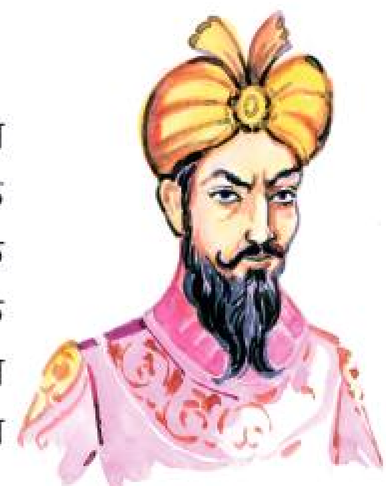

एक दुर्घटना में गियासुद्दिन तुगलक चल बसे । उनका पुत्र जुना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से दिल्ली सिंहासन पर बैठे गए । उन्होंने कुल २६ सालों तक शासन कार्य संभाला । उनके अदभुत स्वभाव और अभिनव कार्य-कलापों के लिए वे दिल्ली के सुलतानों में प्रसिद्ध थे । अरब पर्यटक इबान बतुता ने उनके शासन संबंध में उत्तर आफ्रिका से आने के बाद एक विवरण प्रस्तुत किया था । इसमें उस समय के भारत की स्थिति पर सूचना उल्लेख थी ।

इबन बतुता की तरह और कौन कौन विदेशी पर्यटक भारत आए थे ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

मुहम्मद एक आदर्श राजा थे । तर्कशास्त्र, दर्शन, धर्म शास्त्र विद्या में उनका अगाध ज्ञान था । वे एक सुप्रतिष्ठित कवि और साहित्यिक थे । वे सरल, दानी और आड़म्वरविहीन व्यक्ति थे । मुहम्मद उनके साम्राज्य तथा जनसमुदाय की प्रगति के लिए कई योजनाएँ बनाई थीं । पर उनमें दृढ़ मनोबल का अभाव था जिसके कारण वे किसी कार्य को अंत तक ठीक से कर नहीं पाते थे । उनमें निष्ठा, दूरदर्शिता और धर्म का बहुत अभाव था । जिसके फलस्वरूप उनकी योजनाएँ सफल नहीं हो पाती थीं । इसलिए लोग उन्हें आधा पागल बोलते थे । मुहम्मद के द्वारा बनी योजनाओं की आलोचना नीचे की गई है :

दोआब अंचल में कर वृद्धि: (१३२६-१३५१ ई. में)

मुहम्मद बिन तुगलक ने भारत एक मध्यएशिआ के कई राज्य जीतने की इच्छा की थी । इस कार्य के लिए विशाल सेनावाहिनी की आवश्यकता थी । सेनावाहिनी की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उन्होंने गंगा और यमुना मध्यवर्ती दोआब अंचल के किसानों से अधिक शुल्क वसूल किया था । दुर्भाग्यवशत: उस समय अच्छी वर्षा न होने के कारण फसल नष्ट हो गई थी । सुलतान के कर्मचारियों ने कर वसूल के लिए लोगों पर बल प्रयोग किया । इसलिए किसान अत्याचार न सहपाने के कारण वे जंगल चले गए । राजस्व अधिकारियां ने उनके पीछे पीछे दौडकर उनकी हत्या की थी, इन वजहों से उर्वरक दोआब अंचल में फसल न होने के कारण अकाल पड़ गया । तब मुहम्मद ने अपनी गलती एहसाश कर लोगों को क्षमा दी और शुल्क वसूल न करने का आदेश दिया । लोगों को खेती करने के लिए कर्ज लेने की सुविधा करवाई । सिंचाई की सुविधा के लिए अनके कुएँ खुदवाए । परंतु ये कदम बहुत देर से उठाए जाने के कारण यह सफल नहीं हुआ ।

क्या आपको मालूम है ?

एक राजा अपनी प्रजाओं को छोड़कर अपने पद पर टिक नहीं सकता । तनख्वा के बिना सैनिक जिन्दा नहीं रह सकते । किसानों से भू-राजस्व वसूल कर सौनिकों को वेतन दिया जाता है । यदि किसान खुश रहेंगे तो वे भू-राजस्व दे पाते है ।

- भू-राजस्व की तरह सरकार लोगों से और क्या-क्या शुल्क वसूल करती है ? लिखिए ।
- यदि आप मुहम्मद तुगलक के समय उनकी प्रजा होते और उनके लोग आपको अधिक शुल्क देने के लिए बाध्य करते तो उनके साथ आपको व्यवहार कैसे होता ?

राजधानी परिवर्तन: (१३२७ई.)

मुहम्मद ने मंगोलों के आक्रमण से देश की रक्षा करने और दाक्षिणात्य के विभिन्न राज्यों को आसानी से नियंत्रण करने के लिए अपने राज्य की राजधानी दिल्ली से दौलतवाद (वर्तमान औंरगाबाद) को ले गए थे । पर उनका यह कार्य सही ढ़ंग से नहीं हो पाया था । क्योंकि उन्होंने केवल दरवार और राजकर्मचारियों को न लेकर दिल्ली के समस्त अधिवासियों को स्थानान्तरित किया था ।

क्या आपको मालूम है ?

- मुहम्मद दिल्ली से दौलतावाद को अपनी राजधानी ले गए थे । रास्ते के दोनों प्रार्श्व में सराईखाना (पांथशला) और डाकघर निर्माण किया था ।
- इबन बतूता के विवरण से स्पष्ट होता है कि जब उन्होंने देखा कि एक अंधा और एक लंगड़ा दिल्ली में रह गए थे तब वे लंगड़े को घोड़े की पूंछ में बांधकर दौलतावाद ले आए थे ।

लोगों का दिल्ली से दौलतावाद जाने का एक दृश्य

दिल्ली से दौलतावाद बहुत दूर (प्राय: १५०० किमी.) दूर होने के कारण रास्ते पर अनेक लोग मर गए । क्योंकि दौलतावाद का वातावरण, जलवायु और खाद्य पदार्थ लोगों के लिए अनुकूल नहीं था, इसलिए बहुत लोग मर गए । उत्तर भारत दौलतावाद से दूर होने के कारण इस अंचल पर उनका नियंत्रण नहीं था । परिणामत: मुहम्मद ने एक साल के बाद फिर से दौलतावाद से दिल्ली को अपनी राजधानी ले आए । यह उनकी कमजोरी थी । इसके कारण दक्षिण भारत में बाहामनी और विजयनगर राज्यों का प्रभाव विस्तार हुआ । सुलतान इन्हें दमन करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाया ।

क्या आप जानते हैं ?

मुहम्मद ने पहले (२००रति) दिनार नामक स्वर्णमुद्रा प्रचलित की थी । उसके बाद अदालि नामक (१४०रति) चान्दी मुद्रा प्रचलित की थी ।

ताम्र मुद्रा प्रचलन: (१३२९-१३३०ई.)

मुहम्मद की राजधानी का परिवर्तन कैसा तर्क पूर्ण था ? मित्रों से आलोचना कर लिखिए ।

मुहम्मद की और एक योजना सफल रूप से कार्यान्वित नहीं हो पाई थी । वह थी ताम्र मुद्रा प्रचलन जो उन्होंने शून्य राजकोष भरने के उद्देश्य से किया था । लोग इन्हें देकर राजकोष से सोना, चांदी रुपए लेते थे । फलत: राजकोष से रुपए कम हो गए और राज्य गरीब हो गया । इसलिए राज्य का वाणिज्य कारोबार अचल अवस्था में पहुँचा । देश को आर्थिक स्थिति से रक्षा करने के लिए सुलतान ने अपना आदेश वापस लिया ।

मुहम्मद का ताम्र-मुद्रा प्रचलन कितना तर्क संगत था, मित्रों के साथ चर्चा करके लिखिए ।

क्या आपको मालूम है ?

सुलतानी शासन के अन्य मंत्री थे - सदर-उस-सदर धर्म विभाग मंत्री ।

मजलिस-ई-खालवाज्-सुलतान के परामर्शदाता ।

वारिद-इ-मामलिक - गुप्तचर विभाग मंत्री

दिवान - इ - अमीर कोहि, कृषिमंत्री

लोगों की प्रगति के लिए मुहम्मद ने अनेक शासन नीतियों का प्रणयन किया था । पर उनकी दूरदृष्टि कम होने के कारण ये नीतियाँ सफल नहीं हो पाईं । इसके फलस्वरूप उन्हें प्रजाओं, शामंतों तथा उलेमाओं (धर्मगुरु) का सहयोग नहीं मिला था । इसलिए वे इतिहास में एक असफल शासक रहे ।

सफल शासक होने के लिए एक राजा के पास क्या-क्या गुण होने आवश्यक हैं, दूसरों से आलोचना कर लिखिए ।

तुगलक वंश के बाद भारत में सयद वंश और लोदी वंश का शासन आरंभ हुआ था । लोदी वंश के राजाओं पर आफगान खुश नहीं थे । जिसके कारण इन्होंने काबुल राजा बाबर के साथ संबंध स्थापन किया था । १५२६ ई. में इब्राहिम लोदी को शासन से बहिष्कार किया गया था । उनके बाद दिल्ली में मुगल वंश का शासन आरंभ हुआ ।

सुलतान युग की शासन पद्धति :

सुलतान युग की शासन पद्धति से भारत में एक नया अध्याय आरंभ हुआ । अल्लाउद्दिन खिलजी और मुहम्मद बिन तुगलक की तरह दिल्ली के सुलतानों ने राज्य के व्यवस्थित शासन के लिए अनके शासन नीतियों का कार्यान्वियन किया था । ये शासन नीतियाँ तीन प्रकार थीं - केन्द्रीय शासन, प्रादेशिक शासन और स्थानीय शासन ।

आपके देश में शासन किन स्तरों में विभाजित है, लिखिए ।

केन्द्रशासन :

सुलतान केन्द्र शासन के मुख्य थे । वे शासन विभाग और सेना विभाग के सर्वोच्च कर्ता थे । उन्होंने शासन कार्य में अनेक मंत्रियों को नियुक्ति की थी । इन मंत्रियों में प्रधानमंत्री को वाजिर कहा जाता था । वाजिर सामरिक

क्या आप जानते हैं ?

जिजियाकर - मुसलमानों के अलावा अन्य लोगों से वसूल किया जाता था ।

जाकत - धार्मिक कर मुशलमानों से वसुल किया जाता था ।

ऊसर - मुसलमानों की सिंचाई जमीनों पर यह कर लगता था ।

खामस् - राज्य जय से लुंठित धन का कुछ अंश राजकोष को जाता था ।

खरज् - शस्य कर

और राजस्व विभाग के दायित्व में थे । वे काजि विचार विभाग दायित्व भी तुला रहे थे । जब वे दिवानी - ई - इनखा चिट्ठी-पत्रों का दायित्व तुला रहे थे तब वारिद-इ-मामालिक खबर संस्था के मुख्य भी रहे थे । बक्सि सेना विभाग के वेतन का दायित्व संभाल रहे थे । इसके अलावा उनके समय में राज-परिवार, कृषि, निर्माण विभाग आदि के कर्मचारियों को भी नियुक्ति मिली थी ।

सुलतान केन्द्र शासन के मुख्य रहने के कारण उस समय लोगों की क्या सुविधा-असुविधा हुई होगी, दोस्तों के साथ चर्चा कर लिखिए ।

राज्य की मुख्य आय भू-राजस्व से मिलती थी । उत्पन्न शस्यों का एक तिहाई भाग वसूल किया जाता था । दिल्ली सुलतान खमस, खारज, जाकत, जिजिया और ऊसर आदि पांच प्रकार के शुल्क प्रजाओं से वसूल करते थे । सुलतानों ने कृषि विभाग की उन्नति के लिए कृषि विभाग की प्रतिष्ठा की थी । बाजार दर तथा विभिन्न द्रव्यों का माप और वजन कानून द्वारा नियंत्रित होता था । काला बाजारी और खाद्य शस्य जमा करके रखनेवालों को कठोर दंड़ दिया जाता था । जनसाधारण की शिक्षा और स्वास्थ्य की उन्नति के लिए अनेक विद्यालय और दातव्य चिकित्सालयों का स्थापन हुआ था ।

आपके अंचल में सरकार की ओर से माप और वजन में न ठगने के लिए क्या-क्या व्यवस्थां हुई हैं, तथ्य संग्रह कर लिखिए ।

प्रादेशिक शासन :

राज्य को कुछ प्रदेशों में भाग किया गया था । प्रादेशिक स्तर पर शासन सुचारुरूप से चलाने के लिए मुक्ति, वालि, नाएव सुलतान आदि शासन कर्ताओं को नियुक्त किया जाता था । ये सब केन्द्र में सुलतान भोग करने की समस्त क्षमता उपभोग करते थे । प्रदेश के आय-व्यय का हिसाब दीवानी-ई-वाजिरत के द्वारा जाँच किया जाता था । प्रदेश के शासनकर्ता प्रादेशिक स्तर में विभिन्न नीति-नियमों का पालन करते थे ।

स्थानीय शासन :

प्रत्येक प्रदेश को कुछ सिक और प्रत्येक सिक को कुछ प्रगणाओं में भाग किया जाता था । इनका शासन कार्य एक अमिल तुला रहा था । मकद्दम, पट्टवारी, और मुशरिफ आदि स्थानीय कर्मचारी शुल्क वसूल करने में मदद करते थे । मुसरिफ शुल्क बसूल के समय उपस्थित रहकर उसका हिसाब जांच करते थे । पट्टवारी दलील और कागजातों का हिसाब रखते थे । शासन का सर्वनिम्न स्तर था, गांव । गांव के लोग मिलजुलकर पंचायत गठन करते थे । वे पंचायत गांव की शिक्षा विचार और पर्यावरण पर ध्यान रखते थे । चौकीदार गांव के अपराधमूलक कार्यों पर ध्यान रखता था ।

क्या आपको मालूम है ?

सुलतानी शासन के प्रत्येक प्रगणा १०० या ८४ गांवों को लेकर गठित होती थी । इन गांवों के मुख्य वोंक्ति को मकद्दम कहा जाता था ।

- सुलतानों के स्थानीय शासन की भाँति तुम्हारे अंचल का शासन कैसे चल रहा है ? दूसरों से तथ्य संग्रह कर लिखिए ।
- आपके अंचल के लोगों से सरकार क्यों और किन शुल्कों का वसूल करती है ? दूसरों से पूछ-ताछ कर लिखिए ।

इस प्रकार सुलतान विभिन्न प्रकार के नीति-नियम प्रणयन कर शासन कार्य सुचारूरूप से संपादन करते थे । इससे देश में शांति और अनुशासन सन्तोषजनक था ।

सुलतानों के कला और स्थापत्य :

एक पुराना मुस्लिम् स्थापत्य

तुर्क अफगान अपने साथ पारस्य और मध्य एशिआ से कला और स्थापत्य की नई शैली और कारीगरी कौशल भारत को लाए थे । उन्होंने इस निर्माण कौशल से भारत में अनेक मस्जिद समाधि करने के लिए चेष्टा की थी । परन्तु इनके निर्माण कार्य करने के लिए भारत में पर्याप्त अरबीय शिल्पी नहीं मिले । फलत: सुलतानों को निर्माण कार्य के लिए उच्यकोटि के भारतीय शिल्पियों पर निर्भर करना पड़ा । इसके कारण भारतीय कला और स्थापत्य और इसलामीय कला स्थापत्य के सम्मिश्रण से एक नई कला का विकास हुआ । इसे इंडो-इसलामीय कला और स्थापत्य कहा जाता है । भारतीय स्थापत्य में चाप और गंम्बुज का व्यवहार पहले इस समय देखा गया था । गंबूज की छत को अर्द्धवृत्ताकार करने के लिए उच्चत्तर गाणितिक ज्ञान और यांत्रिक विद्या प्रयोग किया गया था । मीनार बनाने के लिए पत्थर पर पत्थर को लंबे और तिर्यक रूप में रखा जाता था ।

कुतुब् मीनार

भारतीय स्थापत्य शैली से दिल्ली सुलतान आकर्षित हुए थे । इनमें पहले कुतबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में प्रसिद्ध 'क्वात्-उल-इसलाम' और 'ढाई-दिनका-झोंपड़ा' नामक दो मस्जिद निर्माण किए थे । इसके अलावा उन्होंने कुतब मीनार का निर्माण कार्य आरंभ किया था । इस कार्य कुतब मीनार को इलतुतमिस ने पूरा कर इसलामीय स्थापत्य की उत्कर्षता का प्रतिपादन किया था ।

दिल्ली सुलतान बहुत आमोद-प्रमोद रूप से जीवन-यापन करते थे । इसलिए उन्होंने अनेक सुंदर सुंदर प्रासादों का निर्माण किया था । फिरोजशाह के द्वारा निर्मित 'फिरोजशाह कोटला' इसका नमूना है ।

इलतुतमिस ने अपने ज्येष्ठ पुत्र की समाधि हिन्दू स्थापत्य शैली में निर्माण किया था । बलबन ने दिल्ली में लोहित प्रासाद इसलामी शैली में बनाया था । बलबन की समाधि पूर्ण रूप से इसलामी शैली में हुई थी । इस समाधि की गोलाकृति खिलान पथ तुर्क स्थापत्य का एक निदर्शन है ।

खिलजी के शासन काल में तुर्क और अफगान स्थापत्य उन्नति की चोटी पर पहुँचा था । इसी समय निर्मित जमाहतखाना मस्जिद और अल्ला-ई-दरवाजा मुख्य हैं । सयद और लोदी वंश के शासकों की स्थापत्य कीर्ति 'मौत-कि-मस्जिद' है । कई सामन्तों के कवरों में बड़े खाँ और छोटे खाँ कवर में उन्नत स्थापत्य कला दिखाई देती है ।

क्या आपको मालूम है ?

- खिलजी के शासन काल में जमाहत खाना मस्जिद और हदार सातुन राजप्रासाद बनाया गया था ।
- अल्लाउद्दीन खिलजी ने शिरी नामक स्थान पर एक सुदृढ़ दुर्ग निर्माण किया था ।
- गियासुद्दीन तुगल्क ने दिल्ली के पास तुगलक वाद शहर निर्माण किया था ।
- सुलतान अहम्मद शाहने १४११ ई. में अहम्मादावाद नगरी की प्रतिष्ठा की थी ।

प्रादेशिक शासकों ने अपनी राजधानी में अनेक प्रासाद और समाधि निर्माण की थी । इनमें गुजरात में अहम्मद शाह के द्वारा निर्मित अहमदावाद शहर और मालव के मांडु में स्थित जामि मस्जिद और हजाज महल भिन्न है । जौनपुर की अतलदेवी मस्जिद, लालदरवाजा इस समय की उत्कृष्ट कलाकृतियाँ हैं । इसके अलावा कारीगरों ने मध्य एसिया शैली में उस समय का कई सुन्दर-सुन्दर लकड़ी के प्रासादों का निर्माण किया था ।

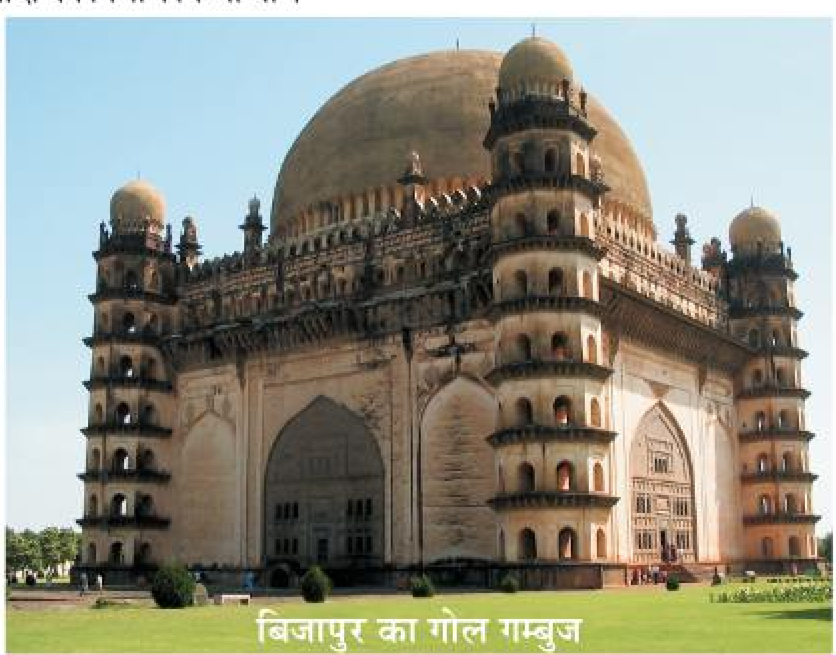
बिजापुर का गोल गम्बुज

आप अपने अंचल के प्राचीन मंदिर, मस्जिद, राजप्रासाद के नाम लिखिए ।

दाक्षिणात्य में बाहामनी शासकों ने अपनी अपनी राजधानी गुलवर्गा और विदर में दिल्ली सुलतानों का अनुकरण कर अनेक सुन्दर-सुन्दर प्रासाद और मस्जिद निर्माण किए थे । गुलवर्गा के जामा मस्जिद, दौलतावाद के चान्दमीनार और विदार में स्थित मुहम्मद गवान के माद्रास उन्नत स्थापत्य के निदर्शन हैं ।

प्रादेशिक राज्यों का उत्थान :

दिल्ली में सुलतानी शासन क्रमशः कमजोर हो गया था । इस कमजोरी का फायदा लेकर दिल्ली सुलतानों के अधीन में उत्तर और दक्षिण भारत के कई प्रादेशिक राजाओं ने अपनी स्वाधीनता घोषणा की और दिल्ली शासन से अलग हो गए । इसके उलावा कई राजपुत राज्य, गुजरात के कुछ प्रदेशों ने अपनी स्वाधीनता घोषणा की । इसके अतिरिक्त मालव, कश्मीर, और बंगाल आदि प्रदेशों में स्वाधीन मुस्लिम राज्य विकाश होने लगें । इसके अलावा मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में दाक्षिणात्य में उनका प्रभाव कम होने के कारण अनेक राज्यों का विकास होने लगा । इन राज्यों में बाहामनी और विजयनगर राज्य स्वतंत्र है ।

सुलतानी शासन की कमजोरियों का फायदा लेकर किन राज्यों की स्वाधीनता मिली, उसकी एक तालिका प्रस्तुत कीजिए ।

बाहामनी राज्य :

मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में दाक्षिणात्य के कुछ सामंतों ने सुलतान के खिलाफ विद्रोह कर दौलतावाद अधिकार किया था । उन्होंने नासिरूद्दीन शाह को राजा बनाया था । पर वे राज्य चलाने के लिए असमर्थ रहे और राजपद त्याग दिया । उनके बाद सामन्तों ने हासान गांगु को राजा बनाने के लिए निर्णय लिया । हासान गांगू ने अगस्त १ ३, १ ३४७ ई. में बाहामनी राज्य गठन किया था । गुलवर्गा उसकी राजधानी रहा । बाद में हासान गांगू ने बाहामन शाह की उपाधि प्राप्त कर बाहामनी राज्य शासन किया था ।

क्या आपको मालूम है ?

- बाहामनी राज्य १ ८ ० साल तक टिका हुआ था ।
- कहाजाता है की हासान गांगू पार्सिया राजा बाहामन के वंशधर थे ।
- हासान गांगू आबुल मुजाफर को अलाउद्दीन वाहामन शाह की उपाधि मिली थी ।

हासान गांगू एक शक्तिशाली राजा थे । कालानुसार उनके राज्य के कृष्णा नदी तक दाक्षिणात्य के समस्त उत्तर भाग मिल गए थे । उन्होंने अपने राज्य के शासन कार्य को सुचारूरूप से संपादन करने के लिए इसे चार भागों में विभाजित किया था । प्रत्येक भाग को एक - एक प्रशासक के अधीन में रखा गया । बाहामनी राज्य में १ ८ राजाओं ने १ ८ ० साल तक शासन किया था । इन राजाओं में द्वितीय अहम्मद शाह श्रेष्ठ थे । वे ज्ञानी और - विद्वान लोगों के पृष्ठपोषक थे । उनके द्वारा अनेक मस्जिद, विद्यालय और चिकित्सालय निर्मित हुए थे । उनके समय में लोग शांति से जीवन-यापन

करते थे । मामुद शाह बाहामनी राज्य के अंतिम राजा थे । उनकी मृत्यु के बाद बाहामनी राज्य भाग भाग होकर बेरार, बिदर, गोलकुंडा, अहम्मद नगर और बिजापुर आदि पांच स्वाधीन मुसलमान राज्य हो गए ।

- हासान गंगु ने अपने राज्य को चार भागों में बाँटा था । इसके कारणों को दूसरों से आलोचना कर लिखो ।
- अन्य किन कारणो से दक्षिण भारत में पाँच स्वाधीन राज्य बन उठे थे । दूसरों से आलोचना कर लिखो ।

क्या आप जानते हैं ?

❖ बाहामनी राज्य के पतन के बाद वहाँ पांच राज्यों के राजाओं के नाम हैं

बेरार - इमदाद शाह

अहम्मद नगर- निजाम अहम्मद शाह

गोलकुंडा - कुतुब शाह

बिजापुर - आदिल शाह

बिदर - बारिड़ शाह

विजय नगर राज्य :

विजयनगर राज्य बाहामनी राज्य के उत्तर में अवस्थित है । मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में हरिहर और बुका नामक दो भाई हयशाल राज्य (आधुनिक मैसूर) जीतकर इस राज्य की नींव डाली थी । हस्तिनावती या आधुनिक हाम्फी उनके राज्य की राजधानी थी ।

विजयनगर राज्य को कुल सोलह राजाओं ने (१३३६-१५६५ ई.) २३० साल तक शासन किया था । इस समय विभिन्न राजवंश ने विजयनगर राज्य को शासन किया था । पहले इसे हरिहर (१३३६-१३५६ ई.) और बुका ने (१३५६-१३७७ ई.) तक शासन किया था । परवर्ती समय में यह संगम वंश सालुभ और तुलुभ वंश के द्वारा शासित हुआ था ।

विजयनगर राजाओं ने विद्वान लोगों को प्रोत्साहित किया था । उन्होंने तेलगु और संस्कृत साहित्य के विकास के लिए अनेक कार्य किए थे । विजय नगर में कुछ राजा कृष्णदेव की भाँति कवि थे । लकड़ी और हाथी दांत के खोदन कार्य उस समय शीर्ष स्थान पर पहुंचाया था ।

क्या आपको मालूम है ?

बाहामनी और विजयनगर में तीन कारणों से दुश्मनी थी । वे हैं-

१. राइचुर को अपने अधीन में रखना ।

२. गोलकुंडा में पर्याप्त हीरे मिलते थे । इसलिए इसे दखल में रखने की इच्छा थी ।

३. दोनों राज्यों के राजाओं की राज्य जय करने की प्रबल इच्छा थी ।

विजय नगर राजाओं ने अनेक मन्दिर और राजप्रासाद निर्माण किए थे । इन कृतियों में हजरा और बिठाल स्वामी मन्दिर स्वतंत्र हैं । विजयनगर राज्यों को शिल्प और वाणिज्य क्षेत्र में प्रसिद्धि मिली थी । विजयनगर राज्य के लोग बर्मा, चीन, अरब और यूरोप महादेश के लोगों के साथ वाणिज्य कारोबार करते थे ।

बाहामनी और विजयनगर राज्य के बीच परस्पर में संघर्ष होता था । यद्यपि बाहामानी राज्य टुकड़े-टुकड़े हो गए पर उनमे मित्रता नहीं हो पाई थी । इसका यही कारण था कि दोनों राज्य कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के राइचुर (उर्वरक अंचल) को अपने अधीन में लेना चाहते थे । दोनों पक्ष युद्ध के समय तोप प्रयोग करते थे । विजयनगर के शासकों ने यूरोपियों को युद्ध में बन्दुक प्रयोग करने के लिए नियुक्ति दी थी । बाहामनी शासकों ने तुर्क के किराएदारों सैनिकों को नियुक्ति दी थी ।

बाहामनी और विजयनगर के शासक राइचुर की अपने अधीन में क्यों रखना चाहते थे ? दूसरों से चर्चा करके लिखिए ।

तुलुभ वंश के कृष्णदेव राय विजय नगर राज्य के श्रेष्ठ राजा थे । उनके शासन काल में विजय नगर राज्य की ख्याति बढ़ गई थी । दुश्मनों के प्रति उनका मनोभाव कठोर नहीं था । वे सभी धमों के लोगों को समान दृष्टि से देखते थे ।

विजयनगर राजा रामराया के शासन के समय बाहामनी राज्य की समस्त मुसलिम शक्ति ने मिलकर १५६५ ई. में डालिकोटा में विजय नगर राजा रामराया को युद्ध में पराजित किया था । परिणाम स्वरूप विजय नगर का पतन हुआ था । परवर्ती समय में सुलतानों ने मुगलों के समक्ष आत्मसमर्पण किया था ।

क्या आपको मालूम है ?

★ वीर नरसिंह ने तुलुभ वंश की नींव डाली थी ।

★ ओड़िशा के गजपति प्रताप रूद्र देव कृष्णदेव राय के द्वारा पराजित हुए थे ।

हमने जो सिखा :

- १२०६ ई. से १५२६ ई. तक पाँच राजवंशों ने दिल्ली में सुलतानी शासन चलाया था ।
- दिल्ली में दासवंश की नींव कुतबुद्दीन ऐबक ने डाली थी ।
- कुतबुद्दीन ऐबक ने कुतबमीनार निर्माण कार्य आरंभ किया था ।
- कुतबुद्दीन ऐबक के बाद इलतुतमिस ने दिल्ली सिंहासन अधिकार किया था ।
- रेजिआ दिल्ली सिंहासन पर बैठने वाली पहली और अंतिम मुसलमान थी ।

- गियासुद्दीन बलबन ने सुलतान पद की मर्यादा, क्षमता और प्रभाव बढ़ाया था ।
- खिलजी वंश के श्रेष्ठ सुलतान अल्लाउद्दीन खिलजी थे । उन्होंने उत्तर और दक्षिण भारत के अनेक राज्य जय करके अपने साम्राज्य को बढ़ाया था ।
- मुहम्मद बिन तुगलक अपने साम्राज्य की उन्नति के लिए कई अभिनव योजनाएँ बनाई थी पर ठीक से कार्यान्वित नहीं कर पाया था ।
- सुलतान शासन काल में कला और स्थापत्य चरमसीमा पर पहुँचा था ।
- बाहामनी और विजयनगर राज्य दक्षिण भारत के प्रादेशिक राज्यों में मुख्य थे ।

प्रश्नावली

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क) दिल्ली के तुर्क सुलतानों ने दिल्ली कितने शालों तक शासन किया था ?

ख) कुतबुद्दीन के द्वारा प्रतिष्ठा होने वाले वंश को दास वंश क्यों कहा जाता था ?

ग) इललुतमिस ने विभिन्न समस्याओं का कैसे हल किया था ?

घ) सुलतान रजिआ ने अनेक समस्याओं का सामना किया था, क्यों ?

ङ) गियासुद्दीन बलबन ने सम्राटों की मर्यादा बढ़ाने के लिए क्या-क्या कदम अठाए थे ?

च) इतिहास में अल्लाउद्दीन खिलजी का स्वतंत्र स्थान है, क्यों ?

छ) मुहम्मद बिन तुगलक को आधा पागल क्यों कहा जाता था ?

ज) सुलतान युग का शासन विभिन्न खतरों पर कैसे कार्य करता था ?

झ) इंडो-इसलामीय काला और स्थापत्य की सृष्टि कैसे हुई थी ?

ञ) हासान गंगू बाहामनी राज्य के कैसे राजा बने थे ?

ट) कृष्णदेव राय कैन थे ? उनका व्यक्तित्व कैसा था ?

२. शुद्ध करके लिखिए :

क) तुर्क सुलतानों ने दिल्ली पर ५०० सालों तक शासन किया था ।

ख) रजिआ बलबन की बेटी थी ।

ग) इलतुतमिस के राजदरबार में कवि अमीर खुस्रु को स्थान मिला था ।

घ) अल्लाउद्दीन खिलजी ने उलुघ खाँ के सेनापतित्व के समय में उत्तर भारत के अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त की थी ।

ङ) कुतबुद्दीन ऐबक के समय चेंगिज खाँ ने भारत पर आक्रमण किया था ।

च) इबन बतुता यूरोप देश के पर्यटक थे ।

छ) मुहम्मद तुगलक ने अपनी राजधानी को दिल्ली से विजयनगर को स्थानांतरति किया था ।

ज) दीवान-इन-वनसा राजस्व विभाग के दायित्व में थे ।

झ) मुहम्मद बिन तुगलक ने ढाइ-दिनका-झोंपड़ा निर्माण किया था ।

ञ) मुहम्मद शाह के द्वारा अहमदाबाद शहर की प्रतिष्ठा हुई थी ।

३. कोष्ठक में से सही शब्द संख्या और शब्दचयन कर शून्य स्थान की पूर्ति कीजिए ।

क) १२०६ ई. से १५२६ ई तक दिल्ली में कुल ________ राजवंश ने शासन किया था । (४, ५, ६, ७)

ख) कुतबुद्दीन ऐबक ने ________ ई. में दिल्ली सिंहासन पर अधिकार किया था ।
(१२०३, १२०४, १२०५, १२०६)

ग) कुतुबमीनार निर्माण कार्य ________ द्वारा आरंभ हुआ था ।
(कुतुबुद्दीन ऐबक, इलतुतमिस, बलबन, रेजिआ)

घ) बलबन का ________ ई. में देहान्त हुआ था ।
(१२८४, १२८५, १२८६, १२८७)

ङ) पद्मिनी ________ राज्य की रानी थी ।
(मेवार, रंथम्भर, जालोर, जयपुर)

च) मुहम्मद बिन तुगलक ने कुल ________ साल शासन किया था ।
(२६, २७, २८, २९)

छ) मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने राजकोष पूर्ण के लिए ________ मुद्राएँ प्रचलित की थीं । (सोना, चाँदी, तांबा, कंसा)

ज) सारे सुलतान उत्पन्न शस्यों का ________ शुल्क लेते थे ।

(एक तृतीयांश, एक पंचामांश, एक षष्ठांश, एक चतुर्थांश)

झ) फिरोज शाह कोटला ________ के द्वारा निर्मित हुआ था ।

(कुतबुद्दीन, फिरोजशाह, अहम्मदशाह, रेजिआ)

ञ) विजयनगर राज्य को कुल ________ शासकों ने शासन किया था ।

(१३, १४, १५, १६)

४. **कालानुसार सजाकर लिखिए :**

रेजिआ, बलबन, कुतबुद्दीन, इलतुतमिस, मुहम्मदबिन तुगलक, अल्लाउद्दीन खिलजी ।

आपके लिए काम :

दिल्ली में शासन करने वाले विभिन्न सम्राटों के फोटो चित्र संग्रह कर उनकी कृतियों के संबंध में लिखिए ।

तृतीय अध्याय

मुगल साम्राज्य (१५२६-१७०७)

मुगलों का भारत आगमन :

१६०० शताब्दी के प्रारंभ में तुगलक वंश पतन के बाद सुलतान शासन कमजोर हो गया था। सामन्त और प्रादेशिक शासकों ने सुलतानों की परवाह न करके अपनी-अपनी स्वाधीनता की घोषणा की । फलत: देश में अनुशासनहीनता और उच्छृंखलता दिखाई दी । उस समय दिल्ली में लोदी वंश के सुलतान इब्राहिम लोदी शासन करते थे । उनके स्वच्छाचारी शासन से अफगानी अमीर बहुत असंतुष्ट थे । इसलिए उनलोगों ने उनके खिलाफ षड़यंत्र रचाया । उन्हें क्षमता से निकालेन के लिए उन्होंने काबुल के राजा बाबर की मदद मांगी । उसी समय बाबर भारत आक्रमण करना चाहते थे । उन्होंने अफगान अमीरों का अनुरोध ग्रहण कर भारत पर आक्रमण किया । दीर्घ दो सौ सालों तक भारतीय मुगलों के अधीन में रहे । वर्तमान भारत के प्रधानमंत्री जिस लालकिले से स्वाधीनता दिवस के दिन देशवासियों को उद्‌बोधन देते हैं, वह मुगल सम्राटों का वास भवन था ।

क्या आपको मालूम है

मुगल वंश का नाम 'मोंगल्' शब्द से आया है । दीर्घ दिनों तक इस वंश ने भारत को शासन किया था ।

लालकिला

बाबर (१५२६-१५३०):

बाबर तैमुरलंग के वंशधर थे । उनके पिता का नाम उमरशेख मिर्जा था । वे तुर्कीस्तान के अन्तर्गत फरगणा के राजा थे । बाबर एक साहसी वीर थे । सेना चलाने में उनकी विशेष दक्षता थी । काबुल और कान्दाहार पर उन्होंने विजय प्राप्त की थी । उसके बाद उन्होंने भारत पर हमला किया । १५२६ ई. में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच पानीपथ नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ था जो प्रथम पानिपथ युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है । बाबर ने इस युद्ध में विजय प्राप्त की थी । फिर उन्होंने दिल्ली और आग्रा पर अधिकार करके भारत में विशाल मुगल साम्राज्य की नींव डाली थी ।

बाबर

बाबर ने १५२६ ई.में राणासिंग को खान्वा में पराजित किया था । यह 'खान्वा युद्ध' नाम से प्रसिद्ध था । फिर उन्होंने मेदिनी राव के खिलाफ १५२८ ई. में युद्ध करके चांदेरी दुर्ग पर अधिकार किया था । १५२९ ई. में उन्होंने नुसरत और माहमुद को पटना के समीप घर्घरा नदी किनारे पराजित किया था । यह घर्घरा युद्ध के नाम से परिचित था । यह था, बाबर का अंतिम युद्ध । अंत में बाबर की मृत्यु १५३० ई. में हुई थी । बाबर की मृत्यु के समय उनका साम्राज्य पंजाब से लेकर बिहार तक फैला हुआ था ।

बाबर केवल एक योद्धा नहीं थे वरन एक सुसाहित्यिक भी थे । तुर्की भाषा में उनकी रचित आत्मजीवनी 'बाबरनामा' नाम से प्रसिद्ध है ।

भारत मानचित्र में पानिपथ, खानवा और घघर्रा दर्शाइए ।

क्या आपको मालूम है

पानिपथ : दिल्ली से कुरूक्षेत्र जाने के लिए पानिपथ है ।

खानवा : आग्रा से ३ २ कि.मी. दूरी पर फतेपुर के पास खानवा अवस्थित है ।

हुमायूँ

हुमायूँ : (१५३०-१५५६)

बाबर की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र हुमायूँ १ ५ ३ ० ई. में सिंहासन पर बैठे । मुगल साम्राज्य की भित्तीभूमि कमजोर रहेन के कारण हुमायूँ को उसकी सुरक्षा कें लिए संघर्ष करना पड़ा । हुमायूँ के राज्य शासन के प्रारंभ में अफगानों ने पुन: दिल्ली पर बुरी नजर डाली । उस समय हुमांयूँ के भाइयों ने सिंहासन प्राप्त करने के लिए षड़यंत्र रचाया । कुछ संभ्रान्तों और उच्चपद के कर्मचारियों ने हुमायूँ के खिलाफ षड़यंत्र चलाया । नयी सेनावाहिनी शक्तिशाली नहीं थी । इस प्रकार चारों ओर से मुसीबतें घिर आयीं । अपने साहस और दक्षता की कमी हेतु हुमायूँ ने परिस्थिति का सामना नहीं कर पाया । फलस्वरूप उन्हें अपना राज्य खोना पड़ा ।

सोचिए

हुमायूँ के स्थान पर अपने को रख कर ऐसी परिस्थिति में आप अपने साम्राज्य कैसे सुरक्षित रख सकते थे ? लिखिए ।

शेरशाह के साथ संघर्ष

शेरशाह

हुमायूँ ने बहादूर शाह को पराजित कर गुजरात और मालव अधिकार किया था । जैसे पश्चिम में बहादूर शाह के वैसे पूर्व में शेर खाँ भी पराक्रमी अफगान विद्रोहियों के बीच स्वतंत्र थे । सिंहासन अधिकार के बाद हुमायूँ ने शेर खाँ के खिलाफ युद्ध किया था । इसलिए शेर खाँ ने आत्मसमर्पण किया था ।

जब हुमायूँ बहादूर शाह के साथ युद्ध करते थे तब शेर खाँ ने फिर से बंग राज्य आक्रमण किया । उस समय बंग के राजा सुलतान माहमुद

शाह बहुत धन देकर शेर खाँ के साथ संधि करने के लिए बाध्य हुए । फलत: शेर खाँ का प्रभाव समग्र बिहार और बंगला पर पड़ा ।

> **क्या आपको पता है**
>
> 'हुमायूँ' शब्द का अर्थ है 'भाग्यहीन' ।

हुमायूँ ने १५३७ ई. में गुजरात से शेर खाँ के खिलाफ युद्ध करके चुनारदुर्ग अधिकार किया था । इसके बाद उन्होंने बंग यात्रा कर गौड़ अधिकार किया था । शेर खाँ ने नारा बनारस और जौनपुर अधिकार किया था । कोशि और गंगानदी का मध्यभाग अंचल शेर खाँ के अधीन में आया । जब यह सूचना शेर खाँ को मिली तब हुमायूँ आग्रा जाने के समय उन्होंने उनका पथ पर रोक लिया ।१५३९ ई. में दोनों के बीच चौसा में भयंकर युद्ध हुआ । इस युद्ध में हुमायूँ हार गए । फलत: वे अपने जीवन की रक्षा के लिए आग्रा लौट गए ।

१५४० ई. में कनौज में हुमायूँ, शेरशाह के साथ युद्ध करके पराजित हुए और दिल्ली का सिंहासन उनके हाथ से चला गया । उसके बाद वे अपने परिवार के साथ पंजाब और फिर इरान चले गए । शेरशाह १५४० ई. से १५५५ ई तक भारत में शासन करते थे । शेरशाह की मृत्यु के बाद हुमायूँ ने अपने राज्य को लौटने की कोशिश की । उन्होंने पारस्य (इरान) राजा की मदद से काबुल और कांदाहार अधिकार कर लिया । १५५५ ई. में पंजाब जीतकर उन्होंने दिल्ली और आग्रा पर अधिकार कर लिया पर अपने साम्राज्य को एक साल से अधिक उपभोग नहीं कर पाया । अपनी पुस्तकालय से जब वे सीढ़ी से नीचे उतर रहे थे तब पांव फिसल जाने हेतु गिर पड़े और १५५६ ई. में उनकी मृत्यु हुई ।

> **सोचिए:**
>
> हुमायूँ एक असफल शासक के रूप में इतिहास में क्यों जाने जाते है ? आलोचना कर लिखिए ।

मुगल साम्राज्य का विस्तार :

अकबर के समय से औरंगजेव का शासन काल मध्ययुगीय इतिहास में एक उल्लेख्नीय समय है । इस समय मुगलों ने भारत के अधिकंाश अंचलों मे क्षमता विस्तार किया था और राजनीति में एकता की प्रतिष्ठा भी की थी । तत्सहित साहित्य, कला, कृषि और वाणिज्य का भी विकास हुआ था । हिन्दू और मुसलमान संस्कृति की समन्वयता के कारण भारत में एक नई संस्कृति का अभ्युदय हुआ था ।

अकबर

अकबर : (१५५६-१६०५)

मुगल सम्राटों में महानुभाव अकबर सर्वश्रेष्ठ सम्राट थे । पिता हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर १३ साल के थे । उस समय वे पंजाब शासन के दायित्व में थे । वे मुगल सम्राट के रूप में

अभिषिक्त हुए परन्तु वास्तव में बैराम खाँ उनके अभिभावक के रूप में शासन कार्य करते थे ।

हुमायूँ की मृत्यु के बाद हिमु ने मुगलों को पराजय कर दिल्ली और आग्रा अधिकार किया था । वे शेरशाह वंश के राजा के सुयोग्य मंत्री और सेनापति भी थे । अकबर बैराम खाँ की सहायता से हिमु को द्वितीय पानिपथ युद्ध में १५५६ ई. में पराजित किया था । उन्होंने दिल्ली और आग्रा अधिकार कर मुगल साम्राज्य की स्थिति को सुदृढ़ किया ।

सोचिए और लिखिए

तुम्हारी राय में प्रथम और द्वितीय पानिपथ युद्ध में कौन सा अधिक महत्वपूर्ण है ?

अकबर का साम्राज्य विस्तार :

अकबर एक वीर और योद्धा थे । सिंहासन अधिकार करने के बाद उन्होंने अजमीर, ग्वालियर, अयोध्या, जैनपुर, मालव और गंडवाना आदि राज्यों पर विजय प्राप्त की थी । फलत: मुगल साम्राज्य राजपुत राज्यों की सीमा के साथ मिल गया । उस समय राजपुत अत्यंत युद्धप्रिय, साहसी और देशभक्त थे । इसलिए अकबर ने अनुभव किया कि उनकी सहायता लेकर वे साम्राज्य को अधिक सुदृढ़ कर पाएँगे । उन्होंने राजपुतों के प्रति उदार नीति अपनाई और उनके साथ वैवहिक संपर्क स्थापन किया । खुद राजपुत कन्या के साथ विवाह किया था । राजा मानसिं अकबर के एक मुख्य सेनापति थे । मेवाड़ के राणाप्रताप सिंह अकबर के अधीन में नहीं आए थे । इसलिए अकबर ने राणाप्रताप सिंह के राज्य पर हमला करने के लिए मानसिंह को भेजा था । १५७६ ई. में हलदीघाट युद्ध में मुगलों ने मानसिंह के नेतृत्व में राणा प्रताप को पराजित कर चितौड़ दुर्ग पर अधिकार किया था ।

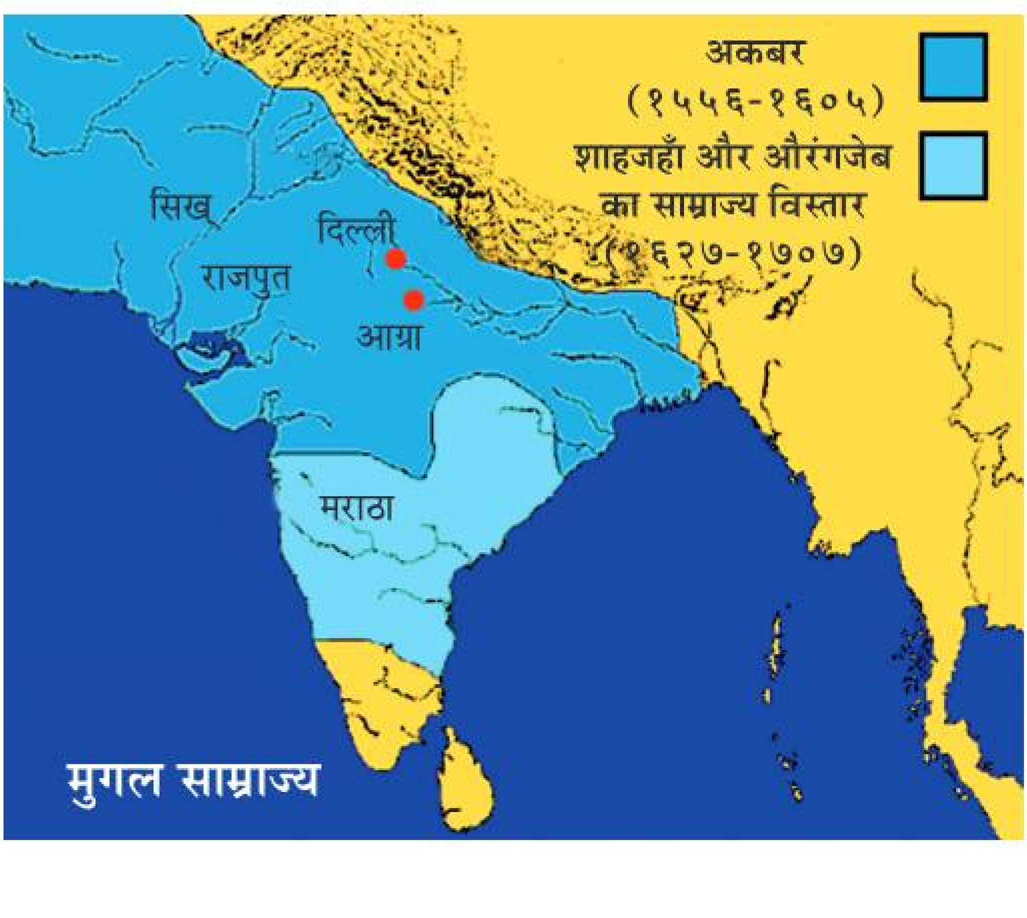

आपके लिए काम

भारत मानचित्र में अकबर के द्वारा विजय प्राप्त राज्यों के नाम लिखिए और चिह्नित कीजिए ।

सोचिए और लिखिए :

आपकी उम्र में अकबर ने शासन दायित्व ग्रहण किया था । सोचिए आपको एक राज्य मिला है । आपको उसी राज्य को कैसे स्थायी और समृद्ध बनाएंगे ?

उसके बाद अकबर ने गुजरात पर विजय प्राप्त की जो उस समय धनशाली राज्य था । गुजरात के प्रातों से आरब और यूरोप के विभिन्न देशों के साथ वाणिज्य-व्यापार होता था । चीन और दक्षिण पूर्व एसिया के व्यापारी बंग आकर चीनी मिट्टी पात्र और मसाले द्रव्यों के बदले विभिन्न प्रकार के कपड़े खरीदते थे । बंग विजय कर अकबर विशेष रूप से लाभवान हुए थे । अकबर ने १५९५ ई. तक कश्मीर सिंधु, ओड़िशा, कान्दाहार आदि जीत लिया । उनके अधीन असाम के सिवा समग्र उत्तर भारत आ गया । भारत का एसिआ और पारस्य के साथ सुसंपर्क था जिसके कारण वाणिज्य कारोबार में वृद्धि हुई । मुगल साम्राज्य का उत्तर सीमांत सुरक्षित हुआ । अकबर दक्षिण भारत के खांदेश, बेरार और अहम्मदनगर राज्यों के कुछ अंशों पर विजय प्राप्त की थी ।

अकबर का शासन :

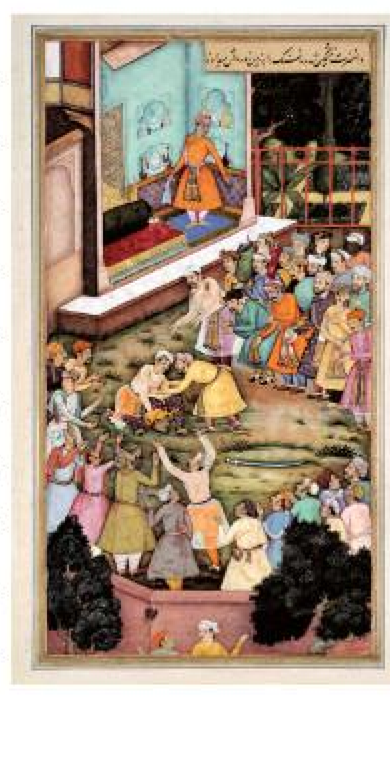

अकबर की शासन-नीति प्रजाकल्याणकारी थी । राजा सर्वोच्च शासन कर्ता थे । वे सेनावाहिनी के मुख्य और सर्वोच्च न्यायाधीश थे । उन्होंने शासन कार्य को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए अनेक राजकर्मचारियों को विभिन्न विभागों में नियुक्ति दी थी । उनमें दीवान जी वित्त विभाग के दायित्व में, बक्सि सेना विभाग के दायित्व में, काजी कानून और विचार विभाग के दायित्व में, डाक चौकी दारोगा डाक तथा गुप्तचर विभाग के दायित्व में थे । अकबर ने अपने साम्राज्य को १५ सुवा या प्रदेशों मे विभाजित किया था । प्रत्येक सुवा कुछ सरकारी या जिला और प्रत्येक जिला अनेक प्रगणाओं में विभक्त था । कुछ गावों की

समष्टि से एक प्रगणा गठित होती है । सुबेदार सुवे के मुख्य शासक थे । अकबर दोनों सूत्रों से राजस्व वसूल करते थे । उनमें से एक था भू-राजस्व और दूसरा था, वाणिज्य कर । राजा तोडरमल्ल उनके राजस्व मंत्री थे । तोडरमल्ल के वन्दोवस्त के अनुसार जमीनों का नाप होता था । साधारणत: किसान आय का एक तृतीयांश शुल्क शस्य या मुद्रा के रूप में देते थे ।

आपके पिताजी अभी कितने प्रकारों के कर देते हैं? पूछ कर लिखिए?

क्या आपको मालूम है?

'मनसब' का अर्थ एक पद है जो एक व्यक्ति का होता था । उनके अधीन में कुछ सैनिक रहते थे ।

अकबर ने सेनावाहिनी को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए मन्सवदारी प्रथा प्रचलन किया था । राज कर्मचारी, सेनापति और सामन्तों को यह पद मिलता था । अकबर ने मन्सवदारियों को ३३ भागों में बांटा था । विभिन्न श्रेणियों के मन सवदारियों के अधीन में ५००० से १०,००० तक सेना रहते थे ।

सोचिए

जैसे अकबर के शासन काल में दीवान वित्त विभाग, काजी कानून और न्याय के मुख्य थे वैसे अभी आपके प्रदेश के विभिन्न विभागों के मुख्य कौन हैं? चर्चा कर लिखिए ।

अकबर की धर्मनीति :

अकबर अपनी उदार धर्मनीति के लिए इतिहास में स्मरणीय है । वे हिन्दु मुसलमान के बीच भेदभावों को दूर करने की चेष्टा करते थे । अकबर ने हिन्दू से जिजिया कर और तीर्थयात्रा कर बन्द कर दिया था । वे कभी-कभी हिन्दुओं की वेश-पोशाक पहनते थे । हिन्दू पर्वों में योग देते थे । उनके समय कई हिन्दू मन्दिर बने थे ।

क्या आपको मालूम है?

दिन-इ-इलाही' का वास्तव अर्थ था, स्वर्गीय विश्वास ।

इवातदखाना

भारत में एक सार्वजनीन धर्म प्रतिष्ठा करने का उद्देश्य अकबर का था । इसलिए उन्होंने फतेपुर सिक्री में 'इवातदखाना' नामक एक उपासना गृह १५७५ ई. में निर्माण किया था । वहाँ हिन्दू, मुसलमान, पार्सी, ख्रीष्ट और जैन धर्म के पंडितों को अकबर आमंत्रित करते थे और धर्म-चर्चा करते थे । अकबर ने सारे धर्मों का सारांश लेकर एक

नूतन धर्म की सृष्टि की थी जो 'दिन-इ-इलाही' नाम से प्रसिद्ध है । इस धर्म को ग्रहण करने के लिए उन्होंने किसी को बाध्य नहीं किया था ।

बुलेन्द दरवाजा

कला और साहित्य :

अकबर के शासन काल में कला और साहित्य की पर्याप्त प्रगति हुई थी । आग्रा के नजदीक फतेपुर सिक्री में अकबर ने एक नई राजधानी निर्माण की थी । वहाँ बुलेन्द दरवाजा नामक एक विशाल दरवाजा निर्मित हुआ था ।

अकबर के समय संस्कृत, अरबी, फार्सी, हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रसार हुआ था । फारसी उसकी राजभाषा थी । उनके राजदरबार में बहुत पंड़ित थे । उनमें अबूल फाजल ने 'अकबरनामा' आइन-इ-अकबरी नामक दो ऐतिहासिक ग्रंथ फारसी भाषा में रचना की थी । महाभारत और रामायण भी फारसी भाषा में अनूदित हुआ था । तुलसीदास ने हिन्दी रामायण की रचना की थी जिसे 'राम चरित मानस' कहा जाता है । अकबर के दरबार में सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ तानसेन थे । उनकी मृत्यु १ ६ ० ५ ई. में हुई थी ।

जहांगीर (१ ६ ० ५ - १ ६ २ ७)

अकबर के अनुशासन के कारण मुगल साम्राज्य सुदृढ़ और समृद्ध था । इसलिए अकबर के उत्तराधिकारियों जैसे - जहांगीर शाहजहाँ और औरंगजेब को राज्य शासन करने को कोई विशेष असुविधा नहीं हुई ।

सम्राट अकबर की मृत्यु के बाद उनका पुत्र जहाँगीर ने आग्रा में १ ६ ० ५ ई. में सिंहासन अधिकार किया था । १ ६ १ १ ई. में जहांगीर ने नुरजहाँ को विवाह किया था । नुरजहाँ अत्यंत सुन्दर और बुद्धिमती थी । अपने रूप, गुण और बुद्धि बल से उन्होंने जहांगीर को प्रभावित किया था । जहांगीर विलास-व्यंसन से जीवनयापन कर जब शासन कार्य ठीक से नहीं करते थे तब नुरजहाँ प्राय शासन कार्य ठीक से चलाती थी । उस समय जहांगीर के साथ नुरजहाँ का नाम भी सिक्कों पर रहता था ।

जहांगीर ने बंग देश में विद्रोह दमन कर वहाँ अपना प्रभाव दृढ़ किया था । मेवार के राजा अमर सिंह ने जहांगीर के साथ संधि कर उनकी वशवर्ती स्वीकार की थी । जहांगीर ने पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों

के कांग्रादुर्ग अधिकार किया था । उनके अधीन में दाक्षिणात्य का अहम्मदनगर राज्य भी अंतर्भुक्त था । वे भी अपने पिता की तरह वैवाहिक संबंध के द्वारा मित्रता स्थापन करना चाहते थे ।

इंग्लैंड के राजा प्रथम जेम्स ने सर टमास रो को जहांगीर के दरवार को अपने दूत के रूप में भेजा था । सर टमास रो ने जहांगीर से मिलकर उनसे अंग्रेजों के लिए व्यापार की सुविधा हासल की थी ।

राजकुमार खुरम् और शाहजहाँन ने जहांगीर के शासन काल के अंतिम समय में विद्रोह किया था । सम्राट जहांगीर की मृत्यु १ ६ २ ७ ई. में हुई थी ।

शाहजहाँ : (१६२७-१६५८)

जहांगीर के तृतीय पुत्र शाहजहाँ थे । अपने पिता की मृत्यु के बाद वे शिंहासन पर १ ६ २ ७ को बैठे । उन्होंने १ ६ २ ८ ई. को बुंदेलखंड का विद्रोह दमन किया । उसी प्रकार उन्होंने १ ६ २ ९ ई. को गुजरात और दाक्षिणात्य के प्रशासन के दायित्व में रहे खाँ जहाँ लोदी के विद्रोह को दमन किया था । फिर जब उन्होंने बंगला में रहे पर्तुगीजों पर हमला किया तब उन्होंने आत्मसमर्पण किया । शाहंजहाँ बहुत प्रयास कर के पारस्य के सम्राट के चंगुल से कान्दाहार दुर्ग को अपने अधिकार में लाए थे पर कुछ दिनों के बाद पुन: यह दुर्ग उनके हाथ से चला गया था । उन्होंने कान्दाहार को अधिकार करने के लिए तीन बार प्रयत्न किया था पर वे असफल रहे । अन्त में उन्होंने अहम्मद नगर पर विजय प्राप्त की थी ।

बिजापुर और गोलकुंडा के सुलतानों ने शाहजहाँ के साथ संधि स्थापन कर उनकी अधीन में रहे थे । शाहजहाँ ने अपने पुत्र औरगंजेव को दाक्षिणात्य के सुबेदार के रूप में नियुक्ति दी थी ।

शाहजहाँ के शासन काल में मुगल कला और ताजमहल स्थापत्य विकास की चरम सीमा पर पहुँचा था । शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज की स्मृति में आग्रा की यमुना नदी के किनारे ताजमहल बनाया था । ताजमहल आज भी अपने सौन्दर्य से

ताजमहल

दर्शकों के मन को आकर्षित करता रहता है । यह विश्व का सप्ताश्चर्य में एक है, इसके अलावा शाहजहाँ का जुमा मस्जिद, मोति मस्जिद आदि सुन्दर कारुकार्य से पूर्ण था । उन्होंने भी दिल्ली के यमुना नदी के किनारे 'शाहजहाँ वाद' नगरी की प्रतिष्ठा की थी । यहाँ लालकिला या रेडफोट भी निर्माण हुआ था । इस दुर्ग में स्थित शौधों में मोती महल, हीरा महल, रंग महल, दीवान-ई-खास और दीवान-ई-आम उल्लखेनीय है ।

अन्त में १ ६ ६ ६ ई. में ७४ उम्र में शाहजहाँ ८ साल कारागर में जीवन बिताकर चल बसे ।

औरंगजेब : (१६५८-१७०७)

पिता शाहजहाँ की जीवितावस्था में औरंगजेब ने १ ६ ५ ८ ई. में सिंहासन अधिकार किया था ।

औरंगजेब

धर्मनीति :

औरंगजेब एक टक्कर मुसलमान थे । हिन्दुओं के प्रति उनका विद्वेष मनोभाव था । उन्होंने हिन्दुओं पर फिर से जिजिया और तीर्थयात्रा शुल्क लगाया था । वे राजपुतौ का अनादार भी करते थे । सिखों पर भी अत्याचार करते थे । फलत: देश के चारों ओर अशांति फैल रही थी । फलस्वरूप जाठ, सिख, सतनामी, बुन्दल, राजपुत और मराठों ने औरंगजेब की धर्माधंता और हिन्दू विद्वेष नीति के खिलाफ विद्रोह किया था ।

राज्यजय और विद्रोह दमन :

औरंगजेब ने असम और कुचाविहार अधिकार किया था । उन्होंने भारत के उत्तर पश्चिमांचल में वसवास करने वाले पहाड़ी जातियों का विद्रोह दमन किया और सीमातं में शांति प्रतिष्ठा की थी । उन्होंने मथुरा के जाठ तथा पंजाब के सतनामियों का विद्रोह दृढ़ता से दमन किया था । मेवाड़ के राजा जयसिंह ने औरंगजेब के साथ संधि की थी परन्तु दुर्गादास के नेतृत्व में मारवार के साथ युद्ध कर उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी ।

क्या आपको मालूम है ?

औरंगजेब एक कट्टर मुस्लिम थे । वे केवल मुसलमानों को प्यार करते थे ।

औरंगजेब सिखों के नवम गुरु 'तेग् बहादूर' की हत्या की जब उन्होंने इसलाम धर्म ग्रहण करने के लिए मना किया, फलत: सिखों के दसम गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए औरंगजेब के खिलाफ संग्राम जारी रखा ।

सोचिए :

आपकी राय में एक राजा की धर्मनीति और राज्यशासन नीति में से कौन सी नीति मुख्य है ? और क्यों औरंगजेब को ध्यान में रखकर सोचिए और लिखिए ।

शिवाजी के नेतृत्व में मरहटों ने क्रमश: दाक्षिणात्य पर क्षमता विस्तार किया की थी ।पर अहम्मदनगर गोलकुडां, बिजापुर जीत कर औरंगजेब मुगल साम्राज्य को अधिकार किया था । भारत के पूर्व और पश्चिम उपकुल वर्त्ती अंचलों को औरंगजेव ने पर्तुगीज और अंग्रेजों के उपद्रवों से रक्षा की थी । उन्होंने पर्तुगीज जलदस्युओं को शासन कर चट्टग्राम अधिकार किया था । अंगेज जलदस्युओं से औरंगजेब ने डेढ़ लाख रुपए जुर्माना वसूल किए थे ।

१७०७ ई. में औरंगजेब का देहान्त हुआ । वे एक संयमी और कर्तव्य परायण राजा थे । अन्य मुगल सम्राटों की तरह उनका जीवन विलाशपूर्ण न होकर सरल और आड़म्बरहीन था ।

निम्मलिखित सारणि में १५२६ ई. से १७०७ ई. तक शासन करने वाले मुगल सम्राटों के नाम और समय तालिका कीजिए प्रस्तुत कीजिए ।

नाम	ईशवी

मुगल शासकों का दूसरे शासकों के साथ संबंध :

मुगल अत्यंत क्षमताशाली थे । भारत के जो राजा उनकी अधीनता स्वीकार नहीं करते थे, वे उनके खिलाफ युद्ध करते थे । इसलिए भारत के कई शासक उनके साथ संधि करने के लिए आग्रही होते थे । उनमें राजपुत पहले शासक थे । कई राजपुत राजा अपनी बेटियों को मुगल परिवार में विवाह देकर मुगल दरबार में उच्च पद प्राप्त करते थे । उनमें जहांगीर की माता अम्बर (जयपुर) के शासक की राजपुत कन्या थी । शाहजहाँ की माता राठोर राजकुमारी थी जो मारवार (योधपुर) शासक थी ।

शिशोदीय राजपुतों ने मुगल शासकों की अधीनता स्वीकार करने में इनकार कर दिया था । उन्हें मुगलों ने पराजित किया था । परंतु उन्हें आदर सम्मान के साथ जमीन वापस कर दी थी । दुश्मन पराजय होने के बावजूद मुगलों ने उन्हें असम्मान नहीं किया था । परिणाम स्वरूप कई राजपुत राजाओं पर मुगल शासकों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में पड़ता था । किन्तु औरंगजेब ने अपने शासन-काल में शिवाजी को अपमानित किया था जिसके कारण उसका कु–प्रभाव मुगल साम्राज्य पर पड़ा था ।

सोचिए :
आपकी राय में एक शासक को अपनें पड़ोसी राज्यों के साथ कैसा संबंध रखना चाहिए ?

मुगल शासन :

भारत में मुगलों ने केवल विशाल साम्राज्य की प्रतिष्ठा नहीं की थी वरन् सुशासन भी चलाया था । मुगल सम्राट अकबर सुशासन के लिए इतिहास में अमर है ।

अकबर की शासन नीति केंद्रीय राजतंत्र थी । राजा शासन के सर्वोच्च कर्ता सेनावाहिनी के मुख्य थे और सर्वोच्च न्यायाधीश थे । शासन में परामर्श देने के लिए उन्होंने एक मंत्री परिषद और अन्य कर्मचारियों को भी रखा था ।

अकबर ने सुशासन के लिए अपने साम्राज्य को १५ प्रदेशों या सुबाओं में विभाजित किया था । एक-एक सुबेदार प्रत्येक सुबा को शासन करते थे । उनके निकट अनेक निम्न पदस्थ कर्मचारी भी रहते थे । प्रत्येक सुबा का विभाजन कुछ सरकार या जिलों में हुआ था । मुख्यत: इसका शासन कार्य चार कर्मचारियों पर निभर्रशील था । प्रत्येक सरकार कुछ प्रगणाओं में विभाजित हुआ था । प्रत्येक के लिए चार मुख्य कर्मचारी नियुक्त थे । ग्रामों को लेकर 'प्रगणा' गठित हुई थी ।

सामरिक शासन या मनसवदारी प्रथा अकबर के द्वारा प्रचलित थी ।

अकबर हिन्दुओं से तीर्थकर और जिजिया कर नहीं लेते थे । भू-राजस्व देश की सर्वश्रेष्ठ आय थी । वे

सोचिए :
मुगलों की शासन नीति के साथ वर्तमान हमारे भारत की शासन प्रणाली के साथ क्या समानताएँ है लिखिए ।

उत्पादन के १/३ अंश भू-राजस्व के रूप में लेते थे । अकबर की विचार व्यवस्था भी अत्यंत उन्नत थी । हिन्दुओं के लिए हिन्दू न्यायाधीश को नियुक्ति मिली थी ।

क्या आप जानते हैं ?
अकबर और जहांगीर के शासनकाल में धनी, गरीब, क्षमताशाली और दुर्बल श्रेणी के लोग समान न्याय पाते थे ।

मुगल शासकों की धर्मनीति :

औरंगजेब के अलावा मुगल सम्राट इसलाम धर्मावलंबी होने के बावजूद अत्यंत उदार थे । प्राचीन काल से वे भारतीय धार्मिक भावना के सम्मान करते थे । इस समय भारत में शैवधर्म, वैष्णव धर्म, सिख धर्म, इसलाम धर्म, ख्रीष्टियान धर्म, जैन धर्म और जोराष्टर धर्म भी प्रचलित था जिसके कारण सभी 'धर्मावलम्बियों में सुसंपर्क था ।

मुगल सम्राटों में महानुभाव अकबर की 'दिन-ई-इलाही' सर्वश्रेष्ठ धार्मिक कृति थी । अकबर का उद्देश्य था सभी धर्मों के लोगों को समान सुविधा प्रदान करना था । परन्तु औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं को कोई उच्य पद पर नियुक्ति नहीं मिली थी । औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति के कारण मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हुआ था ।

मुगल शासकों की धर्मनीति में तुम्हें कौन सी धर्मनीति अच्छी लगती है और क्यों ? सोचकर लिखिए ।

मुगल शासन के समय लोगों की सामाजिक और अर्थनैतिक स्थिति :

मुगल शासन काल में सम्राट समाज के प्रथम नागरिक थे और साम्राज्ञी प्रथम महिला थीं । उस समय मुसलमान समाज चार श्रेणियों में विभाजित था । सम्राट के बाद समाज में संभ्रान्त श्रेणी, मध्यवित्त श्रेणी और सर्वनिम्न श्रेणी थी । संभ्रांत श्रेणी के लोग विलासव्यसन में जीवन बिताते थे । मध्यवित्त श्रेणी में व्यवसायी, लेखक, वैद्य, कलाकार आदि थे । सर्वनिम्न श्रेणी में किसान, जोहरी, श्रमिक, सोनारी आदि थे । इनकी अत्यंत दयनीय स्थिति थी । सुलतानी शासन की भाँति मुगलशासन काल में भी समाज में दासत्व प्रथा प्रचलित थी ।

मुसलमान भोजन में चावल, रोटी और विभिन्न प्रकार के मांस खाते थे । बिरियानी और कचम्भर उनका प्रिय खाद्य था । वे सेब, अंगूर, अनार आदि खाने के साथ - साथ रंगीन सरबत भी पानीय ग्रहण करते थे । हिन्दुओं का प्रिय खाद्य खिचड़ी थी । उत्तर भारत के हिन्दू मुख्यत: रोटी पसंद करते थे । पर्वों-उत्सवों में वे पूड़ी और खिर आदि खाना पसंद करते थे ।

सोचिए :
मुगल युग में जैसे समाज में श्रेणी विभाजन था, क्या हमारे समाज में आज वैसा विभाजन है ?

मुगल शासक कीमती पोशाकें पहनते थे । मुसलमान नारियाँ सलवार कुर्ता पहनती थीं । वे काजल, इत्र, गुलाब जल, मेहन्दी आदि प्रसाधन सामग्री प्रयोग करते थे । उसी प्रकार संभ्रात हिन्दू कीमती पोशाकें पहनते थे । आम जनता मोटे धागे से बुने वश्त्र पहनते थे । नारियाँ काजल, सिन्दूर, इत्र और नेलपलिस व्यवहार करती थी और शरीर के विभिन्न स्थानों पर चिता अंकित करती हैं ।

उस समय मुसलमान जो खाद्य खाते थे अब मुसलमानों का भी वही प्रिय खाद्य है क्यों ? दूसरों से चर्चा करके लिखिए ।

मुगल युग के सम्राट और संभ्रान्त नौ विहार, शिकार, खड्ग युद्ध, घुड़ दौड़ और तीर चलाकर मनोरंजन करते थे । साधारण मुसलमान शतरंज, पतंग उड़ाना, कबूतर उड़ाना आदि खेलों से वे मनोरंजन करते थे । उस समय हिन्दू कुस्ती, मलयुद्ध और शिकार आदि के माध्यम से वे मनोरंजन कार्य करते थे । इसके साथ वे वाद्य यंत्र, रामलीला, कृष्णलीला और जादु खेल आदि खेलों से भी मनोरंजन करते थे ।

मुगल काल में हिन्दू और मुसलमान नारियाँ जो पोशाकें तथा प्रशाधिन सामग्रियाँ व्यवहार करती, उनमें से कौन-कौन सी वर्तमान युग में भी व्यवहार होती हैं, लिखिए ।

मुसिलम महरम, ईद, और हिन्दू जन्मोत्सव, नामकरण, मुंडन कर्म, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी, दीपावली, शिवरात्रि, रामनवमी, आदि पर्वों का पालन करते थे ।

मुगल युग में मुसलमान विद्यालयी शिक्षा समाप्त कर मद्रासों में अध्ययन करते थे । हिन्दू विद्यार्थी प्राथमिक विद्यालय या टोल विद्या प्राप्त कर उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा केन्द्रों को जाते थे ।

साहित्य, कला और स्थापत्य का विकास :

मुगल शासन काल में पार्सी, अरबी, उर्दू, हिन्दी भाषा और साहित्य में पर्याप्त प्रगति हुई थी । मुगल दरबार में कई विशिष्ट कवि, लेखक, साहित्यकार और ऐतिहासिक भी थे । यद्यपि अकबर स्वयं निरक्षर थे पर उनमें साहित्य के प्रति विशेष रुचि थी । बाबर, हुमायूँ, जहांगीर और औरंगजेब ने अपनी आत्म-कथा लिखकर मुगल साहित्य को समृद्ध किया था । कबीर, तुलसीदास के द्वारा रचित ग्रन्थ अत्याधिक लोकप्रिय हुए थे । अंधकवि सूरदास ने 'सुरसागर' की रचना की थी । रसखान रचित भक्ति गीतों में 'प्रेमवाटिका' प्रसिद्ध है । अनेक प्राचीन हिन्दू ग्रन्थ फार्सी भाषा में अनूदित हुए थे । हिन्दू-मुसलिम संस्कृति का समन्वय साहित्य के माध्यम से हुआ था ।

कला और स्थापत्य :

मुगल युग का कला-स्थापत्य केवल भारत में न होकर पूरे विश्व में लोकप्रिय था । मुगल वंश के लोकप्रिय शासक अकबर और शाहजहाँ के प्रोत्साहन के कारण कला और स्थापत्य की उन्नति शीर्ष स्थान पर पहुँची थी । शाहजहाँ का शासनकाल मुगल कला और स्थापत्य में स्वर्णयुग के रूप में प्रसिद्ध था ।

मुगल सम्राट पर्याप्त धन व्यय करके अत्यंत सुन्दर और मनोरम राजप्रासाद, दुर्ग, मस्जिद, समाधि और शौध आदि निर्माण करते थे । अकबर के समय आग्रा दुर्ग, फतेपुर सिक्रि आदि राजप्रासाद आदि लाल पत्थरों से निर्मित हुए थे पर शाहजहाँ के समय मार्बल पत्थरों से कार्य होने लगा था । यमुना नदी किनारे शाहजहाँ की अद्वितीय कीर्त्ति ताजमहल विश्व प्रसिद्ध है । उनकी अन्य कीर्त्तियों में से मोति मसजिद, लालकिला, जुमा मस्जिद आदि प्रसिद्ध हैं । ये सारी कीर्तियाँ इसलाम और भारतीय कला शैली के आधार पर निर्मित हुई थीं । इनके अलावा हीरा, मणि-मुक्ता से भरपुर विश्व प्रसिद्ध 'मयूर सिंहासन' का भी निर्माण शाहजहाँ ने किया था ।

> मुगल सम्राटों के द्वारा निर्मित कीर्तियौं की तालिका बनाइए । उनमें से वर्तमान कोन कोन सी कीर्तियाँ उपलब्ध हैं ? मित्रों से पुचकर लिखिए ।

जहांगीर के शासनकाल में चित्रकला का विकास हुआ था । जब जहांगीर सर टमास रो के संपर्क में आए तब यूरोपीय चित्रकला के प्रति आकर्षित हुए । विशन दास उनके दरबार में श्रेष्ठ चित्रशिल्पि थे ।

हमने जो सिखा :

- तुगलक वंश के पतन के बाद भारत में सुलतानी शासन कमजोर हो गया ।
- प्रथम पानिपथ युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया और भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली ।
- बाबर के बाद मुगल सम्राट हुमायूँ, अकबर,जहांगीर, शाहाजहाँ और औरंगजेब ने दिल्ली सिंहासन अधिकार कर भारत में शासन किया ।
- मुगल शासकों में अकबर सर्वश्रेष्ठ थे ।
- अकबर ने सारे धर्मों के सारांश को संगठित कर 'दिन-ई-इलाही' नाम से एक नूतन धर्म की सृष्टि की थी ।
- शाहजहाँ ने ताजमहल बनाया था । मुगल सम्राटों ने अनेक मस्जिद तथा दुर्गों का निर्माण किया था ।
- मुगल सम्राट अकबर ने सुशासन के लिए विभिन्न प्रकारों की व्यवस्थाएँ की थीं । मुगल शासन काल को कला - स्थापत्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है ।

प्रश्नावली

१. **निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए :**

क) तुगलक वंश के पतन के बाद सुलतानी शासन क्यों कमजोर हो गया ?

ख) कैसे बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली ?

ग) हुमायूँ ने किन समस्याओं का सामना किया था ?

घ) शेर खाँ ने हुमायूँ को कैसे बाधा पहुँचायी ?

ङ) कैसे अकबर ने मुगल साम्राज्य की स्थिति सुदृढ़ की ?

च) हलदीघाट युद्ध कब हुआ था ? इसके परिणाम पर चर्चा कीजिए ।

छ) अकबर ने क्यों उदार धर्मनीति अपनाई थी ?

ज) नुरजहाँ कौन थी ? जहांगीर के शासनकाल में उनकी भूमिका क्या रही ?

झ) शाहजहाँ की सफल कृतियों के बारे में बताइए ।

ञ) हिन्दुओं के प्रति औरंगजेब का व्यवहार कैसा था ?

ट) मुगल शासकों का दूसरे शासकों के साथ कैसा संबंध था ?

ठ) मुगलों की धर्मनीति के बारे में बताइए ।

ड) मुगल शासन-काल में लोगों की सामाजिक और अर्थनैतिक स्थिति कैसी थी ?

ढ) मुगल शासनकाल में भाषा और साहित्य की उन्नति कैसी रही ?

ण) मुगल शासन-काल को कला और स्थापत्य का स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है ?

२. **निम्नलिखित प्रश्नों के संभाव्य उत्तर दिए गए हैं । उनमें सही उत्तर के पास (✓) निशान लगाइए ।**

क) बाबर के पिता का नाम क्या था ?

( ) शेखर मिर्जा, ( ) उमर शेख उमर मिर्जा, ( ) शेख मिर्जा, ( ) शेख मिर्जा

ख) कब घाघरा युद्ध हुआ था ?

( ) १५२९ ई., ( ) १५३० ई., ( ) १५३१ ई.,( ) १५३२ ई.

ग) पारस्य का वर्तमान नाम क्या है ?

( ) इराक, ( ) कुएत, ( ) सौदी आरब, ( ) इरान

घ) अकबर के अभिभावक का नाम क्या था ?

( ) बैराम खाँ, ( ) छोटे खाँ ( ) बड़े खाँ ( ) उमर खाँ

ङ) अकबर ने अपने साम्राज्य को कितने सुबाओं में भाग किया था ?

( ) १२, ( ) १३, ( ) १४, ( ) १५

च) अकबर के ज्येष्ठ पुत्र का नाम क्या था ?

( ) अलिम, ( ) सलिम, ( ) खुरम, ( ) हलिम

छ) मुगल शासन काल में गांवों को लेकर क्या गठन हुआ था ?

( ) जिला, ( ) राज्य, ( ) प्रगणा, ( ) देश

ज) अंधे कवि सूरदास ने क्या रचना की थी ?

( ) सूर सागर, ( ) अमृत सागर, ( ) रामचरित मानस, ( ) प्रेम वाटिका

झ) फतेपुर सिक्री राजप्रसाद किस प्रकार के पत्थर से बना था ?

( ) मुगनी पत्थर, ( ) लाल पत्थर, ( ) मार्बल पत्थर, ( ) नीला पत्थर

३. अशुद्ध वाक्य को शुद्ध करके लिखिए:

क) बाबर चेंगिज खाँ के वंशज थे ।

ख) हुमायूँ ने मुहम्मद शाह को पराजय कर गुजरात और मालव अधिकार किया था ।

ग) मानसिंह के नेतृत्व में मुगलों ने हलदीघाट युद्ध में राणा रतन को पराजित किया था।

घ) वीरबल अकबर के दरबार में सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ थे ।

ङ) अकबर ने लालकिला की प्रतिष्ठा की थी ।

च) औरंगजेब ने सिखों के नवम गुरु गोविन्द सिंह की हत्या की थी ।

छ) मारवार का वर्तमान नाम जयपुर है ।

ज) अकबर उत्पादन का एक चतुर्थांश भू-राजस्व के रूप में लेते थे ।

झ) मुगल शासनकाल में मुसलमान समाज ५ भागों में बांटा गया था ।

ञ) रमू खाँ ने सूर सागर की रचना की थी ।

४. 'क' स्तंभ को समय को 'ख' की घटना के साथ जोड़ो ।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
१५३० ई.	अकबर के द्वारा इबादत खाना निर्माण
१५७५ ई.	जहांगीर का सिंहासन आरोहण
१६०५ ई.	शाहजहाँ की मृत्यु
१६६६ ई.	औरंगजेब का सिंहासन आरोहण
१६५८ ई.	हुमायूँ का सिंहासन आरोहण
	अकबर की मृत्यु

आप के लिए काम

विभिन्न ऐतिहासिक कीर्तियों के फोटोचित्र संग्रह कर एलबम प्रस्तुत कीजिए ।

चतुर्थ अध्याय

यूरोपियों का भारत आगमन

भारत को जलपथ का आविष्कार :

पंचदश शताब्दी में भारत को जलपथ का यूरोपियों ने आविष्कार किया था जो एक युगान्तकारी घटना है । बहु प्राचीन काल से यूरोपीय राष्ट्रसमूह भारत के साथ व्यापार करते आते रहे थे । यूरोपियों को रेशमी कपड़े, लौंग, काली मिर्च, कीमती पत्थर, हाथीदांत आदि विलासपूर्ण सामग्रियाँ भारत से निर्यात होती थी क्योंकि ये चीजें उन्हें अत्यंत पसन्द थी ।

क्या आपको मालूम है ?

पहली शताब्दी में रोम के शासक अगस्ट के शासन काल में रोम और भारत का संपर्क व्यावसायिक संपर्क चरम सीमा पर पहुँचा था ।

त्रयोदश शताब्दी में इटली के मार्कोपोलो एक साहसी युवक ने एसिया भ्रमण किया था । उन्होंने अपने देश में आकर भारत की कीमती चीजों के हीरा, मुक्ता, सूक्ष्म कार्पास वस्त्र आदि बारे में वर्णन किया । मार्कोपोलो के इस वर्णन से पर्याप्त यूरोपियों ने भारत आने के लिए आग्रह प्रकाश किया । पर उस समय यूरोप से भारत को कोई सीधा रास्ता नहीं था । इसलिए भारत की उत्पादित चीजें काबुल, अफगानीस्तान पारस्य और कनस्टांटिनोपल आदि देश होकर यूरोपीय देशों में पहुँचती थीं । चूँकि ये चीजें घूमती हुई पहुँचती थीं; इसलिए इनकी कीमत्त अधिक होती थी । इसके बावजूद यूरोपीय देशों के साथ भारत का व्यावसायिक संपर्क अधिक होता था ।

सोड़श शताब्दी के एक जहाज का दृश्य

आपके अंचल में किन चीजों को बाहर भेजा जाता है ? जल-पथ पर सामान परिवहन की सुविधा अधिक होने का कारण क्या है ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

पंचदश शताब्दी के मध्य काल में (१ ४ ५ ३ ई.) अटोमान तुर्कों ने एक साम्राज्य प्रतिष्ठा की थी । फलत: इस रास्ते से भारत से यूरोपीय देशों को सामान भेजने का काम बन्द हो गया । इसलिए

यूरोपीय देशों के साथ भारत का व्यवसाय नहीं हो पाया जिसके कारण यूरोपीयों ने एक सीधा जलपथ (यूरोप से भारत) आविष्कार करने का आग्रह प्रकट किया । कालानुसार यह आग्रह साकार हुआ और यूरोपियों ने पंचदश शताब्दी में यूरोप से भारत को एक जलपथ आविष्कार किया ।

भास्कोड़ागामा

पर्त्तुगीजों का भारत आगमन :

यूरोपियों में सबसे पहले पर्त्तुगीजों ने ही भारत को जलपथ आविष्कार करने का काम किया था । इस कार्य के लिए अनेक पर्त्तुगीज नाविकों ने निरन्तर अधिक परिश्रम किया था । उनमें से वार्थलोमिओ डाएन नाम के पर्त्तुगीज नाविक अफ्रिका उपकूल से अपनी यात्रा आरंभ कर उत्तमाशा अन्तरीप तक आ पहुँचे थे । बाद में पर्त्तुगीज सरकार के कलम्बस नामक एक राजकर्मचारी ने भारत को जलपथ आविष्कार करने का प्रयास किया था । पर वे जलयात्रा द्वारा भारत के बदले अमेरीका पहुँच गए । छह सालों के बाद इटली के नाविक भास्कोड़ागामा ने भारत को जलपथ का आविष्कार किया । भारत को जलपथ आविष्कार करने के लिए भास्कोड़ागामा ने तीन जहाजों से पर्त्तुगाल से जलयात्रा आरंभ की थी । वे आटलांटिका महासागर पर जहाज से अफ्रीका महादेश की दक्षिण सीमा पर स्थित उत्तमाशा अन्तरीप पर पहुँचे । फिर १४९८ ई. में वे भारत महासागर होकर भारत के पश्चिम उपकूल के कालिकट स्थान पर पहुँचे । परिणाम स्वरूप भारत को जलपथ आविष्कार हो पाया ।

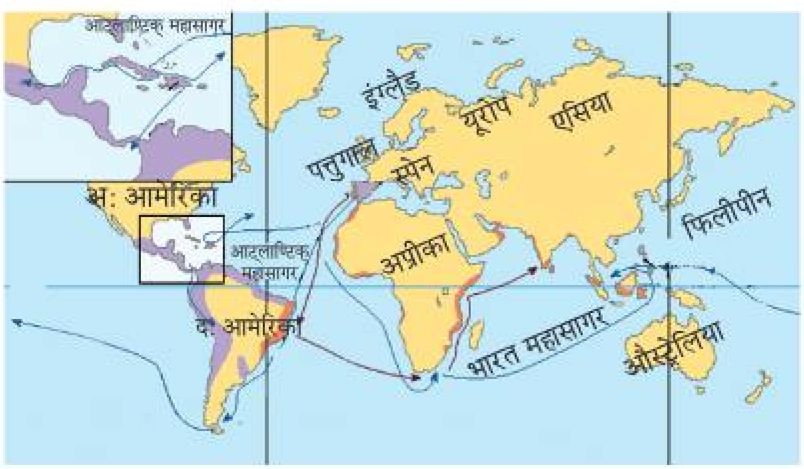

यदि आप उसी समय भास्कोड़ागामा के साथ जलपथ से भारत यात्रा करते तो अपने साथ क्या - क्या लेकर जाते ? लिखीए ।

मानचित्र देखकर भास्कोड़ागामा किस पथ से भारत पहुँचे थे ? उनके नाम चिह्नित कीजिए ।

उस समय जामोरिन नामक एक हिन्दू राजा कालिकट को शासन करते थे । वे भास्कोड़ागामा को अतिथि सत्कार प्रदान कर नम्रतापूर्ण व्यवहार करते थे । राजा जामोरिन ने भास्कोड़ागामा को व्यवसाय करने के लिए अनुमति प्रदान की । भास्कोड़ागामा की जलयात्रा का उद्देश्य सफल हुआ । इसके फलस्वरूप भारत और यूरोप के बीच व्यवसाय संपर्क स्थापित हुआ ।

क्या आप जानते हैं ?

भास्कोड़ागामा ने समुद्र पथ देकर पर्त्तुगाल की राजधानी लिसवन को लौटने के साथ चार जहाज और १७० लोगों का पराजित था । उनके साथ सिर्फ ५४ लोग अपने देश वापश गए थे ।

पर्त्तुगीज :

भास्कोड़ागामा बे कालिकट में छह महीने रहकर अनेक मसाले युक्त द्रव्यों को जहाज में भर्त्ती किया था । फिर वे पर्त्तुगीज लौटकर १४९९ ई. में लिसवन बा पहुँचे । उन्होंने पर्त्तुगीज राजदरबार में भारत में यूरोपिय चीजों की मांग के बारे में बताया था । फलत: भारत में वाणिज्य व्यवसाय करने के लिए पर्त्तुगीज ने उत्साह प्रकट किया था । इसके कारण १५००ई. के मार्च महीने में पेड्रोआल वारेज काब्रेल नामक एक नाविक १३ व्यापारी नावों के साथ लिसवन से भारत की ओर जलयात्रा कर सितम्बर महीने में भारत पहुँचे । पर राजा जामोरिन के साथ उनका मतभेद हुआ जिसके कारण वे कालिकट छोड़कर कोचिन में आश्रय लेने गऐ थे ।

१५०२ ई. में भास्कोड़ागामा फिर से कालिकट में पहुँचे । जामोरिन की अनुमति के अनुसार कालिकट में एक वाणिज्य भवन निर्माण हुआ था । १५०० ई. से १५०५ ई. तक पर्त्तुगीज और आरबों के बीच भयंकर युद्ध चला था । अंत में आरब व्यापारियों का प्रभाव लोप हो गया और मालवा के उपकूल पर पर्त्तुगीजों का प्राधान्य बढ़ने लगा ।

क्या आप को मालूम है ?

- भारत में पर्त्तुगीज गवर्नरों को तीन साल तक नियुक्ति मिलती थी ।
- फ्रांसीस्कोड़ी अलमिड़ा पर्त्तुगीजों के प्रथम गवर्नर थे ।
- अलबुकर्क को पर्त्तुगीज के इतिहास में क्लाइव माना जाता है ।
- पर्त्तुगीजों की दुर्बल शासन प्रणाली त्रुटिपूर्ण वाणिज्य व्यवस्था, हिन्दु - मुस्लिम के प्रति उनका मनोभाव पारस्परिक झगड़ा और यूरोपीय राजनीतिक घटना उनके दमन के कारण थे ।

पर्त्तुगीज और आरबों के बीच किन कारणों से हमेशा झगड़ा होता था ? दूसरों से तथ्य संग्रह कर लिखिए ।

परवर्त्ती समय में पर्त्तुगीज वाणिज्य प्रतिष्ठान चलाने के लिए पर्त्तुगाल राजा ने गवर्नरों को नियुक्ति दी । भारत में पत्तुगीज गवर्नर के पदों में नियुक्त व्यक्तियों में अलबुकर्क श्रेष्ठ थे । उन्होंने बिजापुर सुलतान से गोवा बंदरपोत अधिकार किया था । परवर्त्ती गवर्नरों के शासनकाल में ड्यू, डामन, सालसेटबेसिन, मुंबई और बगांल के हुगली आदि स्थान अधिकार में आए । उन्होंने प्राय: १०० वर्षों से वाणिज्य - व्यवसाय क्षेत्र में प्रभाव डाला था । पर अष्टादश शताब्दी तक भारत के वाणिज्य क्षेत्र में पर्त्तुगीजों का प्रभाव लोप हो गया ।

अलबुकर्क ने पर्त्तुगीजों के वाणिज्य में वृद्धि के लए क्या - क्या कदम उठाए होंगे ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

डच या ओलन्दाज :

षष्ठादश शताब्दी के अंतिम समय में हलैंड देश के अधिवासी या डच वाणिज्य करने भारत आए थे । उन्होंने १६०२ ई. में डच इस्टइंडिया कपंनी नामक एक वाणिज्य संस्था गठन किया था । उनका मुख्य उद्देश्य था भारत और दक्षिण पूर्व एसिया के गरम मसाला आयात करना । डचों ने पर्त्तुगीजों को पराजित कर उनके अधीन कई अंचलों को अधिकार किया था । उन्होंने गुजरात करमंडल उपकूल बंग, विहार आदि अंचलों में वाणिज्य कोठियाँ निर्माण की थीं । इसके अलावा उन्होंने मछलिपट्टनम सुरत, कासिम बाजार, कोचिन और बालेश्वर आदि स्थानों में वाणिज्य केन्द्र स्थापन किया था । जब अंग्रेज भारत आए तब डचों ने पर्याप्त मुसीबतों का सामना किया । अंत में वे अंग्रेज और फरासियों का प्रतिरोध न कर सके और भारत छोड़ कर जावा, सुमात्रा और मालव द्वीपपुंज में वाणिज्य कारोबार आरंभ करने लगे । इनके अलावा डेनमार्क के अधिवासी या दिनामार के अधिवासी बंग देश श्रीरामपुर में वाणिज्य कोठियाँ स्थापन कर विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करते थे ।

डचों ने अंग्रेज और फरासियों के कारण कई बाधाओं का सामना किया था ? इसका कारण दूसरों से चर्चा कर लिखिए।

अंग्रेज इस्ट इंडिया कंपनी :

१५९९ ई. में लंदन के कुछ व्यापारी और नाविकों ने एक वाणिज्य संस्था बनाई थी । इस संस्था को इंलैंड रानी एलिजावेथ ने वाणिज्य करने के लिए अनुमति दी थी । परवर्ती समय में यह कंपनी इस्टइंडिया कंपनी के नाम से परिचित हुई । इस्टइंडिया कंपनी ने पहले जावा और सुमात्रा आदि स्थानों पर वाणिज्य किया था । इन जगहों पर उन्हें डचों के साथ प्रतिद्वन्दिता करना पड़ा था । इसलिए वे भारत में वाणिज्य करने के लिए आग्रही थे । इस कार्य

क्या आप को मालूम है ?

रानी एलिजावेथ का शासनकाल इंलैंड इतिहास में स्वर्णयुग था । नाविक फ्रांनिसस ड्रेक ने एलिजावेथ के शासनकाल में जलपथ में पृथ्वी प्रदक्षिण किया था ।

के लिए अंग्रेजों ने उस समय मुगल सम्राट जहांगीर के दरबार को कैपटेन हकिन्स को भेजा था । जहांगीर ने बहुत प्रसन्न होकर अंग्रेजों को सुराट में वाणिज्य कोठी निर्माण करने के लिए मौका दिया था । परन्तु पर्त्तुगीजों के षड़यंत्र के कारण हकिन्स किस प्रकार की वाणिज्य सुविधा हासल किए बिना इंलैंड लौट गए थे ।

यदि आप कैपटेन हकिन्स होकर जहांगीर के दरबार में जाते तो कारोबार के लिए कैसे अनुमति प्राप्त करते ? लिखिए ।

प्रथम जेमस ने सर टमास - रो नामक एक चमत्कार राजदूत को जहांगीर के दरबार में भेजकर अनेक वाणिज्य सुविधा प्राप्त की थी । वे १६१९ ई. में भारत से विदा ले चुके थे । तब तक आग्रा, अहम्मदावाद, सुरट आदि स्थानों पर वाणिज्य कोठियाँ स्थापित हुई थीं । इसके बाद अंग्रेजों ने भारत के दक्षिण पूर्व उपकूल में वाणिज्य कोठियाँ निर्माण करने के लिए प्रयत्न किया था । फलत: अंग्रेजों ने गोलकुंडा राज्य के मुख्य बन्दरगाह मछलिपट्टनम, मुंबई, बंगदेश के सुतानटि और ओड़िशा के बालेश्वर में वाणिज्य कोठियाँ निर्माण की थीं । इस प्रकार अंग्रेजों ने अपने वाणिज्य का प्रसार कर परवर्ती समय में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया था ।

क्या आप जानते हैं ?

- इंलैंड राजा द्वितीय चार्लस ने पर्त्तुगाल की राजकन्या काथेराइन से शादी की और मुंबई को दहेज के रूप में लिया ।
- १७१७ ई. में मुगल सम्राट फारूक सयार ने बंगाल देश में वाणिज्य करने के लिए अंग्रेजों को अनेक स्वतंत्र सुविधाएँ प्रदान की थीं ।

अंग्रेजों ने उपकूल अंचलों में वाणिज्य कोठियाँ क्यों निर्माण की थीं ? तथ्य संग्रहकर लिखिए ।

फारसी इस्टइंडिया कंपनी :

पर्त्तुगीज, डच और अंग्रेज आने के अनेक वर्ष पहले फारसी वाणिज्य करने के लिए भारत आए थे । उन्होंने भारत में १६६४ ई. में फारसी इस्ट इंडिया कंपनी गठित की थी । इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था प्राच्य देशों के साथ वाणिज्य करना । परवर्ती समय में १६६८ ई. में कुछ फारसी वणिकों ने सुराट में वाणिज्य कोठियाँ निर्माण की थीं । बाद में उन्होंने गोलकुंडा सुलतान से अनुमति लेकर मछलिपट्टनम में वाणिज्य कोठियाँ निर्माण की थीं । फिर उन्होंने पंड़िचेरी, बंगाल देश के चंदननगर और ओड़िशा के बालेश्वर में वाणिज्य कोठियाँ निर्माण की थीं । इसके अलावा फार्सियों ने मालवार उपकूल के माहेपोतगाह अधिकार कर वहाँ वाणिज्य कारोबार किया था ।

अष्टादश शताब्दी के मध्य भाग में अंग्रेज और फार्सियों के बीच वाणिज्य व्यवसाय और राजनैतिक क्षेत्र में प्रबल मात्रा में प्रतिद्वन्दिता हुई जिससे युद्ध हुआ । इस युद्ध को कर्णाट समर कहा

जाता है । फारसी और अंग्रेजों के बीच तीन कर्णाट समर हुए थे । इस समय अंग्रेजों से फार्सियों की हार हुई थी । परिणाम स्वरूप फारार्सियों का वाणिज्य कारोबार विपर्यस्त हुआ और उन्होंने भारत में साम्राज्य प्रतिष्ठा नहीं कर पाई ।

क्या आप जानते हैं ?

प्रथम कर्णाट समर : १७४६-१७४०ई.
द्वितीय कर्णाट समर : १७४९-१७५४ ई.
तृतीय कर्णाट समर : १७५८-१७६३ ई.

हम ने सीखा :

- बहु प्राचीन काल से भारत का बाणिज्य कारोबार यूरोपीय देशों के साथ हुआ था ।
- त्रयोदश शताब्दी में इटली का युवक मार्कोपोलो ने एशिया भ्रमण किया था ।
- पर्त्तुगीज नाविक भास्कोड़ागामा ने १४९८ ई. में भारत को जलपथ आविष्कार किया था । फलत: यूरोप से भारत को जलपथ का संयोग हुआ था ।
- भारत को जलपथ के आविष्कार के बाद पर्त्तुगीज, डच, अंग्रेज और फार्सियों ने भारत के साथ वाणिज्य कारोबार किया था ।

प्रश्नावली

१. **निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

क) प्राचीन काल में यूरोप महादेश के लोग भारत में किन चीजों का आयात करते थे ?

ख) यूरोपीय भारत आने के लिए क्यों आग्रही थे ?

ग) यूरोप में भारत की विभिन्न चीजें क्यों अधिक कीमत में बेची जाती थीं ?

घ) क्यों भारत का वाणिज्य कारोबार यूरोप के साथ बन्द हो गया ?

ङ) पर्त्तुगीजों ने भारत को जलपथ आविष्कार करने के लिए क्या-क्या कदम उठाए थे ?

च) षष्ठदश शताब्द् में डच भारत क्यों आए थे ?

छ) कुछ नाविकों और वणिकों ने १५९९ ई. में लंदन में कौन सी संस्था गठन की थी ?

ज) फार्सी ईस्ट इंडिया कंपनी क्यों गठित हुई थी ?

झ) कर्णाट समर क्या है ? यह इस समर क्यों हुआ था ?

२. **रेखांकित पद / पदों को बदलाकर त्रुटि संशोधन कीजिए ।**

क) अटोमान तुर्की ने <u>१४४८ ई.</u> में कनष्टांटिनोपल अधिकार किया था ।

ख) वार्थलोमिओ एक <u>रसी</u> नाविक थे ।

ग) पेड्रोआलवारज काब्रेल ने <u>५० वाणिज्य</u> नौकाओं के साथ लिसवन से भारत की ओर जलयात्रा की थी ।

घ) डचों ने ओड़िशा के <u>पाराद्वीप में</u> वाणिज्य केन्द्र स्थापन किया था ।

ङ) जहांगीर अंग्रेजों पर खुश होकर <u>मुंबई में</u> उन्हें वाणिज्य कोठी निर्माण करने का मौका दिया था ।

च) फार्सियों ने मालवार उपकूल के <u>कोचिन</u> बन्दरगाह अधिकार किया था ।

३. **रेखांकित पदों को शुद्ध कर के लिखिए ।**

क) <u>त्रयोदश शताव्दी</u> में यूरोपियों ने भारत को जलपथ आविष्कार किया था ।

ख) भारत को जलपथ आविष्कार करने में <u>फार्सी</u> आगे थे ।

ग) श्रीरामपुर <u>उत्तर प्रदेश</u> में अवस्थित है ।

घ) <u>फरासियों</u> ने हकिनस के जहांगीर के दरबार में वाणिज्य सुविधा प्राप्त करने के लिए भेजा था ।

ङ) फारसी ईस्ट इंड़िया कंपनी <u>१६६२</u> ई. में गठित हुई थी ।

च) चन्दननगर <u>ओड़िशा</u> में अवस्थित है ।

४. टिप्पणी लिखिए :

क) भास्कोड़ागामा का भारत को जलपथ का आविष्कार

ख) पेड्रोआलवारेज काब्रेल

ग) डचों का भारत में वाणिज्य

घ) १५९९ ई. में लंदन में गठित इस्ट इंड़िया कंपनी

ङ) फारसी इस्ट इंड़िया कंपनी

आपके लिए काम

आप के अंचलों मे किन चीजों का वाणिज्य व्यवसाय कैसे होता है ? लिखिए ।

पंचम अध्याय

धर्म संस्कार आन्दोलन और क्षेत्रीय संस्कृति का विकास

भक्ति और सूफी आन्दोलन

मध्ययुग में इसलाम और हिन्दू धर्म का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ा था । इसके फल स्वरूप दोनों हिन्दू और मुसलमान संतों ने धार्मिक जटिलताओं को दूर करने की कोशिश की थी । इसके कारण भक्ति और सूफी आन्दोलन हुआ था ।

कबीर दास के जन्म और मृत्यु संबंध में सही तथ्य न मिलने हेतु विभिन्न वर्ष उल्लेख हैं जैसे: १४४०-१५१८ई.

भक्ति आन्दोलन :

भक्ति आन्दोलन के संत सरल और आड़म्बर विहीन धर्म उपासनापर महत्व देते थे । उन्होंने भक्ति के माध्यंम से ईश्वर आराधना करने के लिए उपदेश दिया था । भक्ति आन्दोलन के संतों में कबीर, नानक और श्रीचैतन्य प्रसिद्ध थे ।

कबीर दास : (१४४०-१५१०ई.)

बनारस में कबीर नानक एक जूलाहा भक्ति धर्म के प्रसिद्ध प्रचारक थे । वे एक ब्राह्मण की संतान थे । उनकी मां उन्हें बनारस में छोड़ चले गए थे । एक मुसलमान जुलाहे की दंपति ने उनका लालन-पालन किया था । उनका कहना था कि हिन्दू-मुसलिम दोनों ईश्वर की सतानें है । उनकी गोष्ठी भिन्न नहीं है । ईश्वर एक है । अत: उनके नाम के साथ झगड़ा करना उचित नहीं हैं । ईश्वर की प्राप्ति केवल भक्ति के द्वारा होती है । उनके अनुसार विश्व की सारी चीजें अस्थायी हैं । कबीर जाति-प्रथा के घोर विरोधी थे । छोटे - बड़े, छुत-अछूत आदि त्याग करने के लिए वे उपदेश देते थे । उनकी वाणी 'बीजक' नामक ग्रंथ में लिपिबद्ध है । यह सरल हिन्दी भाषा में रचित है । उनके भजन 'दोहा' नाम से प्रसिद्ध है । कबीर के शिष्यों ने 'कबीर पंथी' नामक एक गोष्ठी सृष्टि करके उनकी वाणी को लोकप्रिय किया था ।

कबीर दास

क्या आप को मालूम है ?

दोहा - दो पंक्तियों में रचित भजन जो एक बात या भाव को वर्णन करता है । कबीर ने अपने दोहे के माध्यम से भक्ति आन्दोलन को लोकप्रिय किया था ।

एक कबीरपंथी के रूप में आप किन बातों पर महत्व देंगे लिखिए ।

गुरु नानक : (१४६९-१५३८ ई.)

इस समय उत्तर भारत में और एक भक्ति धर्म प्रचारक नामक ने पंजाब के तलवंडि में जन्म ग्रहण किया था । वे सिख धर्म के प्रतिष्ठाता थे । उनका कहना था ईश्वर ही सर्वशक्तिमान और पृथ्वी के सृष्टिकर्त्ता हैं । ईश्वर के समीप आत्मसमर्पण करने से मनुष्य को शांति और मुक्ति मिलती है । निर्मल मन और उत्तम चरित्र के अधिकारी होने से ईश्वर प्राप्ति सहज होती है । कबीर की तरह सब मनुष्य समान है और एक ईश्वर की संतानें हैं, ऐसा उनका कहना था । उनकी प्रचारित वाणी 'आदि ग्रंथ' या 'गुरु ग्रंथ' साहब में लिपिबद्ध है । यह सिखों का पवित्र धर्मग्रन्थ है ।

गुरुनानक

आदिग्रन्थ जैसे सिखों का पवित्र धर्मग्रंथ है वैसे अन्य धर्मावलम्बियों के धर्मग्रन्थों के नाम दूसरों से चर्चाकर लिखिए ।

श्रीचैतन्य : (१४८६-१५३३ ई.)

श्रीचैतन्य भी कबीर और गुरु नानक के जैसे भक्ति आंदोलन के अन्यतम प्रचारक थे । उनका जन्म पश्चिम बंगाल के नवद्वीप में एक ब्राहमण परिवार में हुआ था । वे ब्राह्मण धर्म के सारे पूजापाठों की निन्दा करते थे । श्रीचैतन्य संकीर्तन पर जोर देते थे । उनका कहना था, ईश्वर उपासना वास्तव में प्रेम, भक्ति गीत और नृत्य पर निर्भर करती है । वे समस्त जाति के लोगों को शिष्य के रूप में ग्रहण करते थे । यवन हरिदास उनके प्रधान शिष्य थे । श्री चैतन्य जी की वाणी 'चैतन्य चरितामृत' नामक पुस्तक में संगृहीत है ।

श्रीचैतन्य

क्या आप को मालूम है ?

श्री चैतन्य का बाल्यनाम विश्वंभर या निमाई था । उनके पिता जगन्नाथ मिश्रा थे और माता शांति देवी थी । उन्होंने ईश्वरीपुरी से कृष्णमंत्र ग्रहण किया था । वे भक्तों के साथ मृदंग, करताल और अन्य वाद्ययंत्रों की सहायता से कृष्णनाम संकीर्तन कर नगर भ्रमण करते थे ।

भक्ति धर्म के अन्य संत :

भक्ति धर्म के अन्य संतों में महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर अन्यतम थे । उन्होंने 'गीता' को मराठी भाषा में लिखकर साधारण लोगों को समझाया था । महाराष्ट्र के नामदेव और तुकाराम भक्ति आन्दोलन के दो प्रधान संत थे । तुकाराम श्रीचैतन्य की भाँति भजन कीर्तन करते थे । इन संतों के सरल जीवन से अन्य लोग प्रभावित होते थे ।

नामदेव

तुकाराम

ज्ञानेश्वर

सूफी धर्म आन्दोलन :

एकादश शताब्दी में अनेक मुसलमानों ने संत धर्म की जटिलता को दूर करने का प्रयास किया था । वे सूफी कहे जाते थे । सूफी संतों में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्त स्वतंत्र थे । वे अजमीर में रहते थे । शेख निजामुद्दीन अउलिया एक प्रसिद्ध सूफी संत थे । वे दिल्ली निकटवर्ती गियासपुर में रहते थे । आजोधान्न (वर्तमान पाकिस्तान) के बाबा फरिद, गुजरात के शाह आलाम बुखारी, मुलतान के बाहाउद्दीन काजारिआ, सिलहट के शेख सियाउद्दीन आदि उस समय के अन्य सूफी संत थे ।

क्या आप को मालूम है ?

सूफी-सूफ या ऊल की पोशाक पेहेनेन वाल मुसलमान सन्त या फकीर को 'सूफी' कहे जाते हे ।

रानी मीराबाई

भक्ति और सूफी धर्म आन्दोलन का परिणाम :

भक्ति और सूफी धर्म आन्दोलन का परिणाम उल्लखपूर्ण है । इस धर्म आन्दोलन से दोनों हिन्दू और मुसलमान परस्पर निकटवर्त्ती हुए थे । यह एक नूतन भारतीय संस्कृति के विकास में सहायक हुआ था । कबीर और नानक आदि धर्म-गुरुओं ने समाज की जातिप्रथा की निन्दा की थी । उन्होंने बताया था कि एक नारी पुरुष से हीन नहीं है । इस समय

राजस्तान की एक राजपुत रानी मीराबाई ने कृष्ण की भक्त के रूप में अनेक सुन्दर ओर सुललित भजनों की रचना की थी । भक्त आन्दोलन के परिमाणस्वरूप हिन्दू मुसलमानों को पीर की उपासना कर फकीरों को दान करते थे । उसी प्रकार मुसलमान भी हिन्दू देवता नारायण के प्रति भक्ति प्रदर्शन करते थे । इस सांस्कृतिक मिलन के कारण सुलतान हुसने शाह के समय में बंगला देश की 'सत्यपीर' उपासना को प्रसिद्धि मिली थी । भारत में एकता प्रतिष्ठा के लिए यह भक्त आन्दोलन सहायक हुआ था ।

यदि आप भक्ति आन्दोलन के एक संत होते तो आप किन उपदेशों को देते, लिखिए ।

क्षेत्रीय भाषा साहित्य, संगीत और चित्रकला का विकास :

मध्ययुग में क्षेत्रीय भाषा, साहित्य, संगीत और चित्रकला का विकास हुआ था । उनमें से अनेक आज भी उपलब्ध हैं ।

क्षेत्रीय भाषा और साहित्य का विकास :

भक्ति धर्म आन्दोलन के प्रभाव से आंचलिक भाषा में अनेक साहित्य की रचना हुई थी । भक्ति धर्म के प्रचारक अपनी धर्म वाणी को आंचलिक भाषा में प्रचार करते थे । इसलिय तेलगु, तामिल, कन्नड़, गुजरात, मराठी, हिन्दी, बांगला और ओड़िशा और पंजाब भाषा में लिखित भक्ति संगीत लोगों के द्वारा आदृत हुआ । संस्कृत भाषा में लिखी कई पुस्तकों का मातृभाषा में अनूदित हुआ था । बंगाल के नसरत शाह ने महाभारत और रामायण को बांगला भाषा में अनुवाद किया था ।

क्या आप जानते हैं ?

- अमीर खूसरो का प्रकृत नाम मुहम्मद हासन था ।
- वे एक कवि, ऐतिहासिक और संगीतज्ञ थे ।
- अमीर खूसरो ने फारसी भाषा की एक नई शैली का विकास किया था । इस शैली का नाम 'सावक-इ-हिन्द है ।

ओड़िआ और हिन्दी की तरह और क्या-क्या भाषाएँ हैं, लिखिए ।

सूफी संतों हिन्दी में लिखित भक्ति संगीत को विभिन्न संगीत समारोह में गाते थे । सूफी संतों ने मलिक महम्मद जायसी ने हिन्दी भाषा में 'पद्मावती' काव्य रचना की थी । अमीर खूसरो हिन्दी में कई पुस्तकों की रचना की थी । तुलसीदास ने 'राम चरित मानस' की रचना की थी ।

जियाउद्दीन बरानी, मिनहाज-उद्दीन-सिराज एवं इजामी फासी भाषा में अनेक पुस्तकों की रचना की थी । फारसी और हिन्दी भाषा मिलकर उर्दू भाषा की सृष्टि है जो उत्तर और दक्षिण भारत में पर्याप्त रूप में प्रयोग होती है ।

क्या आपको मालूम है ?

- 'उर्दू' का अर्थ है छावनी, उस समय सेना अपनी अपनी भाषा में बातचीत करते थे ।
- उर्दू भाषा को पहले जवन-इ-हुण्डाभि कहा जाता था ।

दक्षिण भारत में विजय नगर के राजा कृष्णदेव राय ने तेलगु भाषा में 'आमुक्त माल्यदा' काव्य रचना की थी । इस समय ओड़िशा में ओड़िआ भाषा में सारला दास का 'महाभारत' जगन्नाथ दास का 'भागवत' और बलराम दास का 'दाण्डि रामायण' आदि ग्रंथों की रचना हुई थी ।

भक्ति आन्दोलन के समय आंचलिक भाषाओं का विकास होने के कारण लोगों की क्या - क्या सुविधाएँ हुई होंगी ? मित्रों के साथ चर्चा करके लिखिए ।

क्या आप जानते हैं ?

- मध्ययुग की विभिन्न साहित्यक रचनाएँ है ।
- सूरदास - सूरसागर
- रामानुज - वेदांत संग्रह
- चंद बरदाई - पृथीराज रासो
- मिनहाज -उद्दीन-सिराज-तवाकत-इ-नासिर
- जियाउद्दीन वरानी - तारीक-इ-फिराज शाही
- अमीर खूश्रू - तारिख-इ-अल्लाही

चित्रकला का विकास :

मध्ययुग के समय दीवारों पर बड़े-बड़े चित्रों का अंकन हुआ था । राज प्रासाद को सुन्दर बनाने के लिए इसके दीवारों पर बड़े बड़े सुन्दर चित्र बनाए गए थे । सुलतानी शासन-काल में पुस्तकों को सुन्दर बनाने के लिए अनेक क्षुद्र चित्रों को रंग देकर आकर्षणीय किया जाता था । अकबर ने तस्वीरखाना (चित्रकारों की कार्यशाला) निर्माण किया था । यहाँ विभिन्न अंचलों से चित्रकार एकत्र होकर चित्र करते थे ।

मुगल चित्रकला

इन चित्रकारों के द्वारा भारतीय और फारसी चित्रकला के मिश्रण से एक नई चित्रकला शैली का विकास हुआ था । साधारणत: शिकार, पशु-पक्षियों के चित्र और राजदरबार के दृश्य चित्रकला में विशेष रूप से स्थानित होते थे । उस समय चित्रकला में लाल और गाढ़ नीले रंग का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग होता था ।

अकबर ने अनेक दक्ष चित्रकारों को

मध्ययुगीय दाक्षिणात्य चित्रकला

चित्र करने के लिए नियुक्ति दी थी । उनमें दसवंत और वसवानि अन्यतम हैं । अकबर के अलावा अन्य मुगल शासकों और दाक्षिणात्य के अनेक प्रादेशिक राजाओं की चेष्टा और सहायता से चित्रकला की बहुत अन्नति हुई थी ।

यदि आपको उस समय अकबर के दरबार में चित्रकार के रूप में नियुक्ति मिलती तो आप कैसे चित्र करते, लिखिए ।

क्या आप को मालूम है ?

- अकबर ने १७ प्रसिद्ध चित्रकरों को चित्र बनाने के लिए नियुक्ति दी थी । उनमे १३ हिन्दू थे ।

संगीत कला का विकास :

मध्ययुगीय राजा और सामन्तों िकी पृष्ठपोषकता से संगीत कला की उन्नति हुई थी । सूफी और भक्ति धर्म के प्रचारकों ने संगीत समावेश आयोजन कर भक्ति संगीत को लोकप्रिय बनांया था । अमीर खूसरो कवाली के माध्यम से सूफी धर्म के संगीत को लोकप्रिय कराने के समय भक्ति धर्म के गीतों को कीर्तन के माध्यम से लोगों के पास पहुँचाया गया था ।

संगीत समावेश में क्या होता है ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

भारतीय और फारसी संगीत के मिलन से भारत में प्रचलित शास्त्रीय संगीत की उन्नति हुई थी । अमीर खूसरो संगीत कला के एक प्रतिभासंपन्न व्यक्ति थे । उन्होंने फारसी-अरबी संगीत को लोगों के समक्ष परिचित कराया था । इसके अलावा वे परिचित कवि और संगीतज्ञ थे । उन्होंने सीतार यंत्र निर्माण किया था । उस समय लोगों के समक्ष तबला और सारंगी वाद्य-यंत्र खूब प्रभाव पड़ा था ।

जैसे सीतार एक वाद्य यंत्र है । वैसे अन्य वाद्य यत्रों के नाम लिखिए ।

फिरोज शाह तुगलक के समय 'रागदर्पण' फारसी भाषा में अनूदित हुआ था । इसके अलावा अकबर के दरबार के संगीतज्ञ तानसेन ने हिन्दुस्तानी संगीत को अधिक लोकप्रिय बनाया था ।

आप विभिन्न संगीतज्ञों के नाम लिखिए ।

ग्वालियर, मालव, गुजरात, कश्मीर और अन्य प्रादेशिक शासकों ने संगीत की उन्नति के लिए आवश्यक पृष्ठपोषकता की थी । राजामानसिंह की पृष्ठपोषकता से संगीत के विभिन्न रागों के नियम 'मान कौतूहल' पुस्तक में लिपिबद्ध हुए थे ।

फारसी - अरबी संगीत कला से दाक्षिणात्य में स्थित विजयनगर राज्य को संगीत विशेष रूप से प्रभावित किया था । यह मध्ययुगीय कृति 'संगीत रत्नाकर' में वर्णन है ।

राग-चोखी जैसी संगीत रागों के नाम दूसरों से चर्चा कर के लिखिए ।

हिन्दू धर्म और इसलाम धर्म के मिलन से दोनों धर्म के लोगों में अच्छा संपर्क बना रहा । फलस्वरूप भारत में सूफी भक्ति धर्म का प्रचार हुआ । तत्सहित विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय भाषा, साहित्य संगीत और चित्रकला का विकास हुआ ।

हम ने सिखा :

- मध्ययुग में इसलाम धर्म और हिन्दू धर्म के मिलन से दोनों धर्म की असुविधाओं को दूर करने के लिए सूफी और भक्ति धर्म का आविभार्व हुआ ।
- भक्ति धर्म के प्रवक्ताओं में कबीर दास, गुरुनानक, श्रीचैतन्य, ज्ञानेश्वर नाम्देव और तुकाराम विशिष्ट हैं ।
- सूफीधर्म के प्रचारकों में निजामउद्दीन औलिया ख्वाजा मोइउद्दीन चिस्ति, बाबा फरिद और शाहआलम बुखरी अन्यतम है ।
- सूफी और भक्तिधर्म सारतत्व आंचलिक भाषा में प्रचार होने के कारण तेलगु, तमील, कन्नड़, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के विकास होने के साथ-साथ कई उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ हुई ।
- मध्ययुग में संगीत और चित्रकला की उन्नति चरम शीर्ष पर पहुँची थी ।

प्रश्नावली

१. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

क) भक्ति और सूफी धर्म प्रचार के कारण लिखिए ।

ख) भक्ति आन्दोलन के सारतत्व लिखिए ।

ग) भक्ति धर्म के प्रचारकों के नाम बताइए ।

घ) सूफीधर्म का प्रचार किन्होंने किया था ?

ङ) भक्ति और सूफी धर्म के परिणाम बताइए ।

च) मध्ययुग में चित्रकला भाषा और साहित्य का विकास क्यों हुआ था ?

छ) मध्ययुग में चित्रकला का विकास कैसे हुआ था ?

ज) मध्ययुग में संगीतकला के विकास के लिए क्या-क्या कदम उठाए गए थे ?

२. **निम्न प्रश्नों में कुछ संभाव्य उत्तर दिए गए हैं । सही उत्तर में (✓) चिह्न लगाइए ।**

क) कबीर का जन्म कहाँ हुआ था ?

( ) बनारस, ( ) कानपुर, ( ) लखनऊ, ( ) इल्हाबाद

ख) किसने सिख धर्म की प्रतिष्ठा की थी ?

( ) कबीर, ( ) गुरु नानक, ( ) गोविन्द सिंह, ( ) तुकाराम

ग) श्री चैतन्य के मुख्य शिष्य कौन थे ?

( ) गोप दास, ( ) मधु दास, ( ) हरि दास, ( ) गोविन्द दास

घ) नामदेव किस राज्य के धर्म प्रचारक थे ?

( ) गुजरात, ( ) महाराष्ट्र, ( ) केरल, ( ) तामिलनाडु

ङ) निजामुद्दीन औलिया कहाँ रहते थे ?

( ) गियासपुर, ( ) दिल्ली, ( ) गुरुगाँव, ( ) मथुरा

च) किसने महाभारत और रामायण को बांगला भाषा में अनूदित किया था ?

( ) नसरत शाह, ( ) मुहम्मद शाह, ( ) अहम्मद शाह, ( ) हरिहर शाह

छ) 'आमुक्त माल्यद' किस भाषा में लिखी गई थी ?

( ) तामिल, ( ) तेलगु, ( ) बंगला, ( ) मलयालम

ज) 'तसवीरखाना' किसने निर्माण किया था ?

( ) जहांगीर, ( ) शाहजहाँ, ( ) अकबर, ( ) बाबर

झ) 'रागदर्पण' किस 'सुलतान' के समय लिखा गया था ?

( ) बलवन, ( ) बाबर, ( ) मुहम्मद तुगलक, ( ) फिरोज शाह तुगलक

३. **भिन्न शब्द उसके चारों ओर गोल बनाइए ।**

क) कबीर, गुरुनानक, शाहअलाम बुखारी, ज्ञानेश्वर ।

ख) बीजक, गुरुग्रन्थ साहब, चैतन्य चरित्रामृत, बाबा फरिद

ग) पद्मावती, हिन्दी, तेलगु, पंजाबी

घ) तबला, ढोलक, हारमोंनियम, मृदंग

४. **'क' स्तंभ के नामों के साथ 'ख' स्तंभ की पुस्तकों के नाम से रेखा खीचंकर जोड़िए।**

'क'	'ख'
गुरु नानक	महाभारत
सारला दास	भागवत
जगन्नाथ दास	दाण्डि रामायण
बलराम दास	रागदर्पण

आपके लिए काम :

विभिन्न धर्म प्रचारकों की तस्वीर संग्रह कर उनके बारे में एक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

मुगल साम्राज्य का पतन

मुगलों ने भारत को दीर्घ दो सौ से अधिक वर्ष शासन किया था । अकबर के सुशासन और उदार नीति के कारण मुगल साम्राज्य की नींव सुदृढ़ हुई थी । परन्तु बाद में औरंगजेब की धर्मांधता और कुशासन मुगल साम्राज्य दुर्बल और पतन की ओर चला गया ।

केन्द्र शक्ति की दुर्बलता :

औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य को शासन करने के लिए आवश्यक दक्षता परवर्ती शासकों में नहीं थी । वे हमेशा विलास-व्यसन में डूबे रहते थे जिसके कारण उनका नैतिक पतन हुआ । अमीर और राजकर्मचारी अपने-अपने सार्थ हासल करने के लिए मुगल दरबार में विभिन्न गोष्ठियों में विभाजित होकर षड़यंत्र में लिप्त रहे । धीरे- धीरे सब सम्राट उनके चंगूल में फंस जाने के कारण केन्द्र शासन पतन हुआ । दिल्ली के आसपास के अंचलों के अलावा बहुत दूर के प्रदेशों में केन्द्र शक्ति का कोई कर्त्तृत्व नहीं रहा पर मुगल दरबार के गोष्ठी विवाद केन्द्रशक्ति अधिक कमजोर हो गई ।

क्या आप जानते हैं ?

किसी साम्राज्य की समृद्धि उस देश के शासक की दक्षता और चरित्र पर निर्भर करती है ।

हमारे देश का केन्द्र शासन कमजोर होने से क्या - क्या असुविधाएँ होंगी ? आलोचना कर लिखिए ।

अर्थनैतिक कारण :

मुगल सम्राट अकबर ने एक सुचिन्तित शासन प्रणाली परिवर्तन कर मुगल साम्राज्य की अर्थनीति को सुदृढ़ किया । परन्तु परवर्ती मुगल सम्राटों के समय शासन प्रणाली में परिवर्तन हुआ । जहांगीर के शासन काल में नुरजहाँ ने अर्थनीति पर ध्यान नहीं दिया । शाहजहाँ के समय कई राजप्रसाद और शौधों के निर्माण से बहुत पैसे खर्च हुए । इसलिए उनके शासनकाल में भू-राजस्व ५० % बढ़ा था । इसके अलावा मुगल सम्राटों ने दुश्मनों से अपनी रक्षा के लिए निरन्तर युद्ध करने के कारण राजकोष खाली हो गया । अर्थाभाव से व्यवसाय वाणिज्य में भी हानि हुई । फिर अकाल के कारण देश की अर्थनीति बहुत बिगड़ गई ।

सोचकर लिखिए

यदि आप मुगल साम्राज्य के राजा होते तो अर्थनीति को सुधारने से लिए क्या-क्या कदम उठाते ? सोचकर लिखिए ।

धार्मिक कारण :

औरंगजेब की हिन्दू विद्वेष नीति मुगल साम्राज्य का दूसरा कारण था । उन्होंने पुन: जिलिया और तीर्थ यात्री कर हिन्दुओं से वसूल किया । हिन्दुओं को राजकार्य से निकाल दिया ।सिखों के प्रति भी उनका व्यवहार अच्छा नहीं रहा । वे भी उनके दुश्मन हो गए ।

सोचकर लिखिए

औरंगजेब किस प्रकार की धार्मिक नीति अपनाने पर उनके लोगों को अच्छा लगता ? सोचकर लिखिए ।

प्रादेशिक शासकों की स्वाधीनता घोषणा :

मुगल शासन कमजोर हो जाने के कारण केन्द्रीय शासन के अधीन से क्रमश: प्रदेशें को स्वाधीनता मिली । दाक्षिणात्य, अयोध्या, बगांल धीरे-धीरे स्वाधीन हो गए । शिवाजी के नेतृत्व में मराठे दाक्षिणात्य में क्रमश: क्षमता विस्तार होने लगी । वे अहम्मदनगर, विजापुर और गोलकुंड़ा राज्यों पर हमला कर कई दुगों को अपने अधीन में ले आए । फलत: विभिन्न स्वाधीन राज्यों का अभ्युत्थान हुआ और मुगल साम्राज्य की सीमा संकुचित रही ।

सिख, राजपुत, जाठ और रोहिलाओं ने मुगलों के साथ संबंध नहीं रखा । बगांल के शासक बंगल के साथ ओड़िशा और विहार को मिलाकर एक विशाल अंचल पर अपनी स्वाधीनता की घोषणा की । इसके कारण मुगल साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया ।

मुगल शासकों की कमजोरियों का फायदा लेकर किन प्रोदेशिक शासकों ने स्वाधीनता घोषणा की थी ? एक तालिका प्रस्तुत कीजिए।

वैदेशिक शत्रु आक्रमण :

पारस्य के सम्राट नादिरशाह ने १७३९ ई. में मुगल साम्राज्य की कमजोरियों का फायदा उठाकर दिल्ली पर हमाला कर पर्याप्त धनरत्न लूट लिया । शाहजहाँ का प्रशिद्ध मचूर सिंहासन और कोहिनूर नामक विश्व प्रसिद्ध हीरा भारत से अपने देश पारस्य (इरान) को ले गए । इस आक्रमण के कारण सिंधु प्रदेश लाहोर, काबुल आदि अंचल पारस्य साम्राज्य में मिल गए ।

नादिरशाह के बाद अफगानिस्तान के शासक अहम्मदशाह अबदली ने १७४८ ई. से १७६१ ई. के बीच कई बार भारत पर हमाला किया था । १७६१ ई. में अहम्मदशाह अबदली ने तृतीय पानिपथ युद्ध में मराठों को पराजित किया ।

नादिरशाह

अहम्मद शाहा अबदली

यूरोपिय व्यापारियों ने भी मुगल साम्राज्य की दयनीय स्थिति का फायदा उठया था । प्रर्तुगीजों के बाद ओलन्दाज, दिनामार, अंग्रेज और फारसियों ने अपनी अपनी कंपानियों के साथ भारत आए थे । उनमें से अंग्रेज और फारसी इस्टइंडिया कंपनी अधिक शक्तिशाली हो गई । अंत में अष्टादश शताब्दी के द्वितीयार्ध में अंग्रेजों ने अधिक शक्तिशाली होकर भारत में राज्य विस्तार किया । फलत: मुगल साम्राज्य का पतन हुआ ।

सोचकर लिखिए:

भारत के विभिन्न समय में वैदेशिक शत्रुओं के आक्रमण के पीछे क्या कारण है ?

हम ने सिखा :

- केन्द्रशिक्त की दुर्बलता, अर्थनैतिक, धर्म विद्वेष नीतियों के प्रादेशिक शासकों की स्वाधीनता घोषणा आदि के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ ।
- नादिर शाह ने भारत से शाहजहाँ के मोर सिंहासन और कोहिनुर हीरा ले गए थे ।
- अहम्मदशाह अबदली तृतीय पानिपथ युद्ध में मराठों को पराजित किया था ।

प्रश्नावली

१ . निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क) केन्द्रशक्ति की कमजोरी के कारण मुगल साम्राज्य का पतन कैसे हुआ था ? चर्चा कीजिए ।

ख) औरंगजेब की धर्मनीति मुगल साम्राज्य के पतन के लिए कैसे जिम्मेदारी थी । लिखिए

ग) किन प्रादेशिक शक्तियों की स्वाधीनता घोषणा से मुगल साम्राज्य का पतन हुआ था ?

घ) वैदेशिक शत्रुओं का भारत आक्रमण कैसे मुगल साम्राज्य के पतन का कारण रहा ? उल्लेख कीजिए ।

२ . कोष्ठकों में से उपयुक्त शब्द छाँटकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क) किसकी धर्मनीति मुगल साम्राज्य का पतन कारण रहा ?
(बाबर, जहांगीर, औरंगजेब, शाहजहाँ)

ख) कौन भारत से 'मोर सिंहासन' ले गए थे ?
(बैराम खाँ, नादिर शाह, शिवाजी, अहम्मद शाह अबदली)

ग) किसने वैदेशिक आक्रमणकारी ने मराठों को तृतीय पानिपथ युद्ध में पराजित किया था ?
(तैमुरलगं, नादिरशाह, अहम्मदशाह अवदली, रबर्ट क्लाइव)

घ) किस ई. में नादिरशाह ने भारत पर हमला किया था ?
(१५४२, १७३९, १७४८, १७६१)

ङ) तृतीय पानिपथ युद्ध कब हुआ था ?
(१७४१, १७५१, १७५७, १७६१)

३. मुगल साम्राज्य के लिए पतन के लिए अर्थनैतिक और धार्मिक कारणों में आप किसे अधिक महत्व देंगे और क्यों ?

४. मराठे और बंगाल शासकों में किसके कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ था ? इसके कारण दर्शाइए ।

५. किस आक्रमण से मुगल साम्राज्य की विशेष हानि हुई थी ?

आपके लिए काम

मुगल सम्राटों के फोटोचित्र संग्रह कीजिए और उनकी मुख्य कार्यावलियों के बारे में लिखिए ।

सप्तम अध्याय

ओड़िशा में सूर्यवंशी नरपतिगण

ओड़िशा में गंगवंश के पतन के बाद एक नूतन राजवंश का अभ्युदय हुआ जो सूर्यवंश नाम से प्रसिद्ध है । इस वंश के राजाओं को राजपति की उपाधि मिली थी । सूर्यवंशी राजाओं के शासनकाल में ओड़िशा के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में उन्नति परिलक्षित हुई ।

कपिलेन्द्रदेव : (१४३५-१४६७ ई.)

कपिलेन्द्रदेव सूर्यवंश के प्रतिष्ठाता हैं । वे गंगवंश के अंतिम राजा चतुर्थ भानुदेव के सेनापति थे । उनकी संतान नहीं थी । उनकी मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी शक्ति और पात्र-मंत्रियों के समर्थन से १४३५ ई. में सिंहासन अधिकार किया । उसी साल उन्होंने 'कपिलाब्ध' प्रचलन किया था ।

राज्यजय :

कपिलेन्द्रदेव एक प्रकांड योद्धा और दिग विजयी सम्राट थे । उन्होंने गौड़ के सुलतान को पराजय कर 'गौड़ेश्वर' उपाधि प्राप्त की थी । दाक्षिणात्य के शक्तिशाली विजयनगर के राजा को पराजय कर कर्णाटक अधिकार किया । उन्हें 'नवकोटि कर्णाट' उपाधि मिली । उन्होंने बाहमनी के सुलतान को पराजित कर उसी राज्य की राजधानी 'कलवर्ग' (वर्तमान कर्णाटक राज्य का गुलवर्गा शहर) अधिकार किया । इसके बाद उन्होंने अपने आप को 'कलवर्गेश्वर' उपाधि से भूषित किया । उनका विशाल साम्राज्य उत्तर में गंगानदी से दक्षिण में कृष्णा नदी तक विस्तृत था । उन्होंने अपने आप को 'गजपति गौड़ेश्वर नवकोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर' उपाधि में भूषित किया ।

क्या आप जानते हैं ?

सम्राट कपिलेन्द्रदेव की उपाधि थी-

'गजपति गौड़ेश्वर नवकोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर' कपिलेन्द्रदेव विशाल गज हस्ती सेना के अधिपति रहने के कारण उन्हें जगपति की उपाधि मिली थी । उन्होंने गौड़ (बंग) के कुछ अंचलों पर विजय प्राप्त की थी जिसके कारण उन्हें 'गौड़ेश्वर' उपाधि मिली थी । उन्होंने कर्णाट (विजयनगर साम्राज्य अंचल तथा बाहमनी राज्य के प्राचीन राजधानी कलवर्ग (गुलवर्गा) जीतने के कारण उन्हें 'नवकोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर' उपाधि मिली थी ।

प्राचीन काल में आपके अंचल के विशिष्ट लोगों को किन उपाधियों से भूषित किया गया था ? दूसरों से पूछकर लिखिए ।

राज्य शासन और अन्य कार्यकलाप :

कपिलेन्द्रदेव एक सुशासक के रूप में इतिहास प्रसिद्ध हैं । वे राज्य परिचालना में प्रत्यक्ष रूप से सरल थे । वे एक प्रजावत्सल सम्राट थे । वे राज्य के प्रत्येक अंचल घूम कर प्रजाओं की प्रार्थना सुनते थे । उन्होंने प्रजाओं से नमक और कौड़ी शुल्क लेना बन्द कर दिया था । उनके शासनकाल में जनसाधारण का धन-जीवन सुरक्षित था । प्रजा सुख-शांति से जीवन-यापन करती थी । उस समय राज्य की आर्थिक स्थिति स्वच्छल थी जो कृषि और वाणिज्य की उन्नति द्वारा संभव होती थी ।

यदि कपिलेन्द्रदेव के समय में आप एक प्रजा रहते तो किन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए आप राजा को अनुरोध करते ? मित्रों से अलोचनाकर लिखिए ।

कपिलेन्द्रदेव कला और साहित्य के पृष्ठपोषक थे । उनके समय में भुवेनश्वर के समीप कपिलेश्वर शिव मंदिर बना था । उन्होंने कपिलेश्वरपुर और दामोदरपुर नामक दो शासनों की प्रतिष्ठा की थी । उनका संस्कृत और साहित्य में अगाध पांड़ित्य था । उन्होंने 'पर्शुराम विजय' नामक एक संस्कृत नाटक रचना की थी । उनके समय में नृसिंह बाजपेयी ने संस्कृत में संक्षिप्त शारीरिक वर्तिका नामक एक पुस्तक की रचना की थी । उनके शासन काल में शूद्रमुनि सारला दास ने ओड़िआ भाषा में 'महाभारत और चंडी पुराण रचना की थी ।

दक्षिण भारत में शासन कार्य जाँच करने के समय कृष्णानदी किनारे कपिलेन्द्रदेव का १४६७ ई. में देहान्त हुआ ।

क्या आप जानते हैं ?

- शासन : केवल ब्राह्मण वसवास करने वाला ग्राम शासन कहलाता है । ओड़िशा के राजा ब्राह्मणों की पृष्ठपोषकता करने के लिए शासन बनाया था ।
- हम्भीर : वे कपिलेन्द्रदेव के ज्येष्ठ पुत्र थे । दाक्षिणात्य विजय में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी । कपिलेन्द्रदेव की मृत्यु के पहले उनके कनिष्ठ पुत्र पुरुषोत्तम देव को ओड़िशा का राजा बनाने की घोषणा की गई । इसलिए उनकी मृत्यु के बाद हम्भीर ने पुरुषोत्तम देव के खिलाफ विद्रोह किया था और दोनों में समझौता हुआ ।

'पर्शुराम विजय' अन्य संस्कृत काव्य का नाम संग्रह कर उनके रचयिता के नाम लिखिए ।

पुरुषोत्तम देव : (१४६७-१४९७ ई.)

पुरुषोत्तम देव कपिलेन्द्र देव के पुत्र थे । उन्होंने १४६७ ई. में पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन आरोहण किया । इस समय वे कपिलेन्द्रदेव के ज्येष्ठ पुत्र हम्भीर के साथ तीव्र भातृ विवाद में लिप्त रहे । इसका मौका पाकर दुश्मन शक्तिशाली हो गए ।

राज्य जय :

कपिलेन्द्रदेव की मृत्यु का मौका पाकर उदयगिरि के राजा साल्व नरसिंह ने दक्षिण में ओड़िशा के कई दुर्गों पर अधिकार किया । पुरुषोत्तम देव ने विशाल सेनावाहिनी के साथ अग्रसर होकर साल्व नरसिंह को पराजित किया । साल्व नरसिंह ने पुरषोत्तम देव के साथ संधि की और अपनी बेटी के साथ पुरुषोत्तम देव का विवाह किया ।

क्या आप जानते हैं ?

- कांची अधिकार - पुरुषोत्तम देव की कांची अधिकार करने की घटना एक प्राचीन किंवदन्ती है । उन्होंने पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम अधिकार नहीं किया था । उन्होंने उदयगिरि राज्य अधिकार किया था जो किंवदन्ती में कांची के रूप में उल्लेख है ।

- कांची अभियान के बारे में निम्नलिखित शब्दों को लेकर दूसरों से चर्चा कर एक कहानी लिखिए ।
- जगन्नाथ, काला - सफेद घोड़ा, ग्वालीन, पुरुषोत्तमदेव साल्व नरसिंहदेव, पद्मावती, चांडाल, चालाक मंत्री, रथ-यात्रा, रथ को झाडू करना, पुरुषोत्तम के साथ पद्मावती का विवाह ।

बाहमनी सुलतान ने राजमहेन्द्री अधिकार किया था । पुरुषोत्तम बाहमनी ने राज्य आक्रमण करके राजमहेन्द्री के साथ गोदावरी और कृष्णानदी के मध्य भाग अंचल अधिकार कर गजपति साम्राज्य में मिला दिया था ।

राज्य शासन और अन्य कीर्ति :

पुरुषोत्तम देव एक धार्मिक, प्रजावत्सल तथा सुशासक के रूप में प्रसिद्ध थे । उन्होंने १६ ब्राह्मण शासनें की स्थापना की थी । उनका साहित्य और धर्म शास्त्र में पर्याप्त ज्ञान था । उन्होंने 'अभिनव गीत गोविन्द' की रचना की थी । पुरुषोत्तम देव की मृत्यु १४९७ ई. में हुई थी ।

क्या पुरुषोत्तम देव एक सफल शासक थे ? पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखिए ।

प्रतापरुद्रदेव : (१४९७-१५३८ई.)

प्रतापरुद्रदेव सूर्यवंश के अंतिम सम्राट थे । पुरुषोत्तम देव के बाद उनके पुत्र प्रतापरुद्रदेव १४९७ ई. में सिंहासन अधिकार किया था । उनके सिंहासन अधिकार करने के बाद ओड़िशा पर लगातार बाह्य दुश्मनों ने आक्रमण किया जिसके फल स्वरूप ओड़िशा में भय संचार हुआ । इसलिए गजपति साम्राज्य का पतन होने लगा ।

शत्रुओं के खिलाफ युद्ध :

जब प्रतापरुद्रदेव दाक्षिणात्य में विजयनगर के साथ युद्ध करते थे तब बंगाल के सुलतान अल्लाउद्दीन हुसेन शाह के सैनिकों ने ओड़िशा पर हमला किया और पुरी तक वे आगे बढ़ गए । यह सूचना पाकर प्रतापरूद्रदेव ने दाक्षिणात्य से लौटकर दुश्मनों को ओड़िशा से निकाल दिया ।

यदि प्रतापरुद्रदेव दाक्षिणात्य से लौटकर न आते तो क्या होता ? आप अपनी राय बताइए ।

उस समय विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय प्रबल प्रतापी थे । उन्होंने उदयगिरि के साथ ओड़िशा के कई क्षेत्रों पर अधिकार किया था । वे सीमाचलम् तक अग्रसर हुए । प्रतापरुद्र देव उनका पथरोध कर पराजित हुए । उन्होंने कृष्णदेव राय के साथ संधि स्थापन कर गोदावरी नदी की दक्षिण ओर ओड़िशा राज्य उन्हें दे दिया । अपनी बेटी जगनमोहिनी को उनके साथ विवाह करवाया । इन आक्रमणों के कारण ओड़िशा के गजपति साम्राज्य कमजोर हो गया ।

यदि प्रतापरुद्रदेव कृष्णदेव राय के साथ संधि न करते तो क्या क्या असुविधाएँ होतीं ? इस पर दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

क्या आप जानते हैं ?

वीरभद्र प्रतापरुद्रदेव के एक मात्र पुत्र थे । जब उन्होंने दाक्षिणात्य के कोड़ांभिड्डु दुर्ग पर अधिकार जमाया तब वे विजयनगर की सेनाओं के हाथ पकड़े गए । अस्त्रचालन में वे दक्ष थे । कृष्णदेव के दरबार में एक सामान्य व्यक्ति के साथ खड्ग युद्ध करने के लिए बोलने के कारण उनका अपमान हुआ । इसलिए अपनी ही तलवार से छाती भेदकर दे मर गए । इससे प्रतापरुद्रदेव कमजोर हो गए ।

कला व साहित्य की पृष्ठपोषकता :

प्रतापरुद्र देव एक प्रजावत्सल सम्राट थे । वे एक विशिष्ट कवि और विद्वान थे । उनके द्वारा रचित 'सरस्वती विलास' संस्कृत भाषा में हिन्दू कानून के संबध में एक अमूल्य ग्रन्थ है । उस समय जगन्नाथ दास ओड़िशा में 'भागवत' एवं बलराम दाश 'दांड़ि रामायण' की रचना की थी । कवि जीवदेव आचार्य 'भक्ति भागवत' की रचना की थी । राय रामानन्द 'जगन्नाथ बल्लभ' नाटक की रचना की थी । अनेक कवि और पंड़ित प्रतापरुद्रदेव की पृष्ठपोषकता की थी ।

क्या आप जानते हैं ?

बलराम दाश, जगन्नाथ दाश, अनन्त दाश, अच्युतनन्द दाश और यशेवंत दाश पंचसखा थे । वे प्रतापरुद्रदेव के समसामयिक थे । उनकी रचनाएँ ओड़िशा साहित्य में अमूल्य संपद हैं ।

पंचसखाओं का आविर्भाव प्रतापरुद्रदेव के समय हुआ था । उनमें से जगन्नाथ दाश और बलराम दाश की पुस्तक के संबध में सूचना दी गई है । तुम गुरुजनों के साथ चर्चा करके अन्य सखाओं के बारे में लिखिए ।

प्रतापरुद्र देव ने पुरी जगन्नाथ मन्दिर के परिसर में मुक्ति मंडप निर्माण किया था । उन्होंने कटक के पास धवलेश्वर मन्दिर और ढेंकानाल के कपिलास पर्वत पर चन्द्रसेखर मन्दिर निर्माण किया था । वे श्रीचैतन्य के द्वारा वैष्णव धर्म में दीक्षित हुए । उनका देहावसान १ ५ ३ ८ ई में हुआ था ।

प्रतापरुद्रदेव के समय में जो विशिष्ट घटनाएँ घटी थीं, उनमें से कौन सी घटना अधिक महत्वपूर्ण है ? और क्यों ?

मुकुन्द हरिचन्दन :

प्रतापरुद्रदेव के समय उनके मंत्री गोविन्द विद्याधर षड़यंत्र कर ओड़िशा के राजा बने थे । उन्हेंने भोई वंश की प्रतिष्ठा की थी । गोविन्द विद्याधर के बाद उनका पुत्र चक्रप्रातप ने शासन किया । उनके बाद मुकुन्द हरिचन्दन (१५६०-१५६८ ई.) ने शासन किया । वे ओड़िशा के अतिंम स्वाधीन राजा थे । उन्होंने कटक के बारवाटी दुर्ग में नौ मंजिलों का प्रासाद निर्माण किया था ।

क्या आप जानते हैं ?

तेलंगा मुकुन्द - गजपति राजमहेन्द्री अंचल में चालुक्य वंश में उनका जन्म हुआ था । इसलिए ओड़िशा इतिहास में वे 'तेलेंगा मुकन्द' के नाम से प्रसिद्ध हैं । वे प्रतापरुद्रदेव की सेनाओं में एक सुदक्ष सौनिक थे । गोविन्द विद्याधर के शासनकाल में वे कटक शहर में शासनकर्ता थे । मकुन्द हरिचन्दन और मुकुन्ददेव के नाम से वे ओड़िशा इतिहास में भी प्रसिद्ध हैं ।

बारबाटी दुर्ग

साम्राज्य विस्तार :

मुकुन्द हरिचन्दन १५६० ई. में ओड़िशा में सिंहासन अधिकार करके मुकुन्ददेव नाम से प्रसिद्ध हुए । बंग के सुलतान गियासुद्दीन जलाल शाह ने ओड़िशा के आभ्यन्तरीण उच्छृखंलता का मौका लेकर १५६० ई. में ओड़िशा आक्रमण किया और जाजपुर तक आगे बढ़ने लगे । मुकुन्ददेव ने गियासुद्दीन को पराजय कर ओड़िशा के साम्राज्य की सीमा को गंगा नदी तक विस्तार करने के लिए समर्थ हुए । उन्होंने इसी विजय स्मृति स्वरूप हुगली जिले की गंगा नदी किनारे त्रिवेणी घाट निर्माण किया था ।

युद्ध और विपर्यय :

मुगल सम्राट अकबर ने बंगाल जय करने के उद्देश्य से मुकुन्ददेव के साथ संपर्क स्थापन किया था । इसलिए बंगाल के अफगान सुलतान सुलेमान कर्रानी नाराज हुई । उन्हेंने १५६८ ई. में अपनी सेनावाहिनी को दो भागों में विभाजित कर ओड़िशा आक्रमण किया था । सुलेमान कररानी के साथ युद्ध कर मुकुन्ददेव से कररानी का अन्य एक सेनादल अपने उनके पुत्र वायाजिद और सेनापति कालापहाड़ के नेतृत्व से अग्रसर होकर कटक पर अधिकार किया । इस संकटापन्न स्थिति में सामन्त

राजा रामचंद्र भंज ने मुकुन्ददेव के विरूद्ध विद्रोह कर अपने को राजपति के रूप में घोषणा की । उन्हें उचित शिक्षा देने के लिए जब रामचंद्र भंज गंगानदी किनारे होकर आ रहे थे तब मुकुन्ददेव के साथ १५६८ ई. में जाजपुर के पास गोहिरीटिकि चौक में युद्ध हुआ था । इस युद्ध में मुकुन्ददेव की मृत्यु हुई । मुकुन्ददेव के बाद ओड़िशा की स्वाधीनता का लोप हुआ ।

कलापाहाड़ संबंधीय किंबदन्ती के बारे में दूसरों के साथ आलोचना कर लिखिए ।

हम ने सिखा :

- सूर्यवंशी राजा कपिलेन्द्रदेव 'गजपति' गौड़ेश्वर नवकोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर की उपाधि में भूषित हुए थे ।
- पुरुषोत्तम देव ने दाक्षिणात्य के उदयगिरि राज्य अधिकार किया था । प्रतापरुद्रदेव सूर्यवंशी के अंतिम सम्राट थे ।
- मुकुन्ददेव हरिचंदन ओड़िशा के अंतिम स्वाधीन राजा थे ।

प्रश्नावली

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क) कपिलेन्द्रदेव के राज्य विजय के बारे में लिखिए ।

ख) प्रतापरुद्रदेव और कृष्णदेव राय के बीच के संपर्क के बारे में लिखिए ।

ग) प्रतापरुद्रदेव के समय में साहित्य की सृष्टि के संबध में लिखिए ।

घ) मुकुन्द हरिचन्दन और सुलमान कररानी के बीच युद्ध के परिमाण के बारे में लिखिए ।

२. कोष्ठक में से उपयुक्त शब्द चयन कर शून्य स्थान पूर्ति कीजिए ।

क) ——— सूर्यवंश के प्रतिष्ठाता थे ।

(मुकुन्ददेव, कपिलेन्द्रदेव, पुरुषोत्तदेव, प्रतापरुद्रदेव)

ख) ——— ने चण्डिपुराण की रचना की थी ।

(बलराम दास, अनन्त दास, सारला दास, जगन्नाथ दास)

ग) कपिलेन्द्र देव के ज्येष्ठ पुत्र ——— थे ।

(पुरुषोत्तमदेव, प्रतापरुद्रदेव, हम्बीर, साल्व नरसिहं)

घ) 'अभिनव गीतगोविन्द' के रचयता ——— थे ।

(प्रतापरुद्रदेव, कविचन्द्र राय, दिवाकर पुरुषोत्तमदेव, सारलों दास)

ङ) ——— ओड़िशा के अंतिम स्वाधीन राजा थे ।

(प्रतापरुद्रदेव, गोविन्द विद्याधर, कपिलेन्द्रदेव, मुकुन्द हरिचन्दन)

३. 'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तंभ का मिलन कीजिए ।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
१४९७ ई.	कपिलेन्द्रदेव का सिंहासन आराहण
१५३८ ई.	मुकुन्द हरिचन्दन का सिंहासन आरोहण
१५६० ई.	पुरुषोत्तमदेव की मृत्यु
१४३५ ई.	प्रतापरूद्रदेव की मृत्यु

४. टिप्पणी लिखिए :

कपिलेन्द्रदेव, साल्व नरसिंह, कृष्णदेव राय, हुसेन शाहा, प्रतापरुद्रदेव का साहित्यानुराग, गियासुद्दीन जलाल शाह, गोहिरीटिकिरा ।

५. रेखांकित पदों को परिवर्तन न करके भ्रम संशोधन कीजिए ।

क) पुरुषोत्तमदेव 'गजपति गोड़श्वर नवकोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर उपाधि में भूषित हुए थे ।

ख) रायरामानन्द कपिलेश्वर देव के ज्येष्ठ पुत्र थे ।

ग) चण्डिपुराण और ओड़िशा महाभारत बलराम दास के द्वारा रचित है ।

घ) प्रतापरुद्रदेव ने गंगानदी किनारे पर त्रिवेणी घाट निर्माण किया था ।

६. कपिलेन्द्रदेव गजपति गौड़ेश्वर नवकोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर उपाधि में भूषित होने का क्या कारण थे ?

७. ओड़िशा के सूर्यवंशी नरपतियों के समय में रचित हुई साहित्यकृतियों के नाम लिखिए ।

८. मुकुन्द हरिचन्दन को ओड़िशा के अंतिम स्वाधीन राजा क्यों कहा जाता है ?

९. कपिलेन्द्रदेव या प्रतापरुद्र देव के समय में ओड़िशा साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ था । प्रमाण कीजिए ।

आपके लिए काम :

बारबाटी दुर्ग चित्र संग्रहकर उसमें रंग भरते हुए एक विवरण प्रस्तुत कीजिए ।

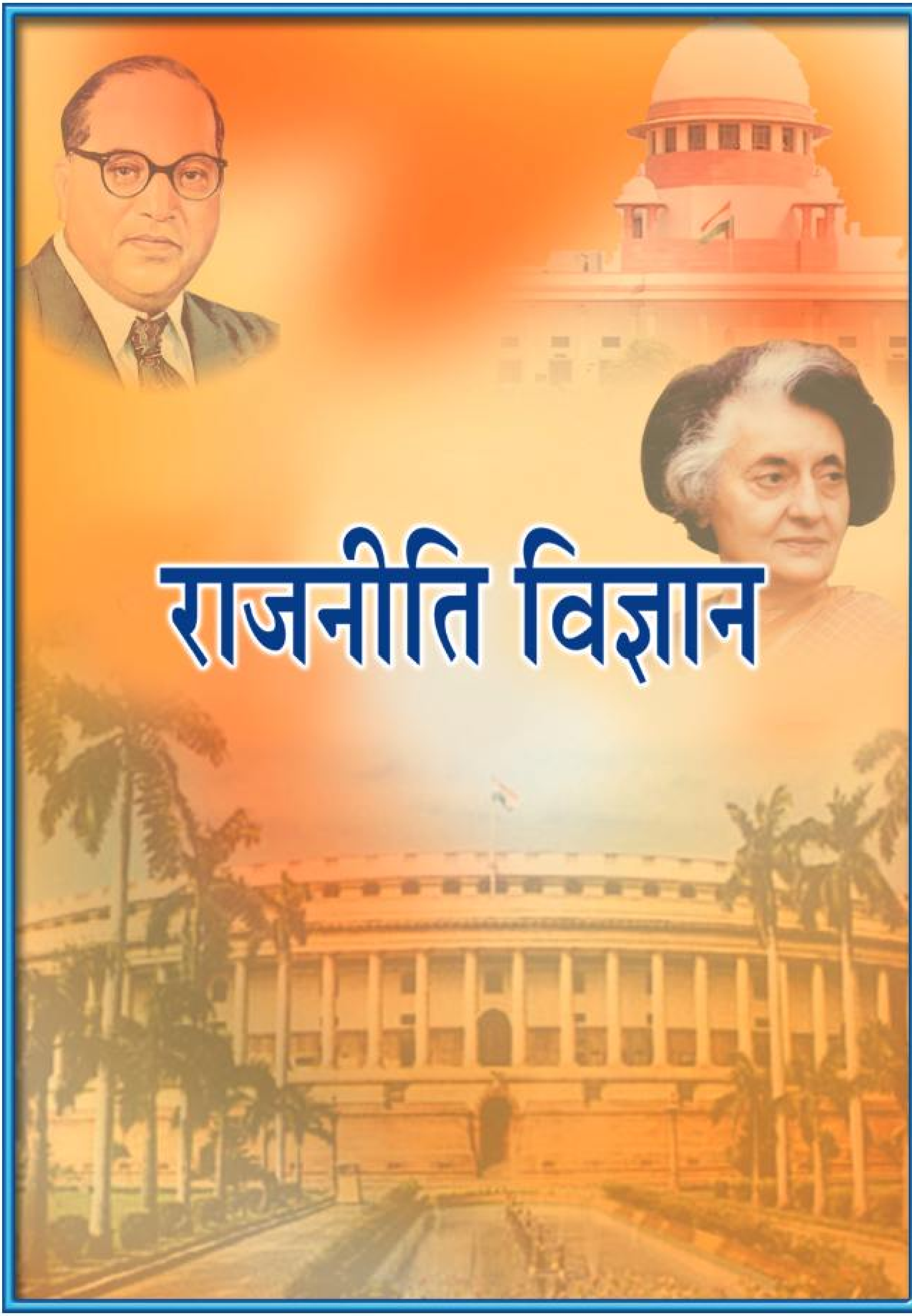
राजनीति विज्ञान

भारतीय संविधान

प्रस्तावना

हम सब भारतवासी भारत को एक सार्वभौम, समाजवादी, धर्म निरपेक्ष, गणतांत्रिक साधारणतंत्र दिवस के रूप में गठन करने के लिए दृढ़ संकल्प लेकर इसके नागारिकों को....

- सामाजिक, अर्थनैतिक और राजनैतिक न्याय;
- चिन्ता, अभिव्यक्ति, प्रत्यय, धार्मिक विश्वास और उपासना में स्वतंत्रता;
- स्थिति, सुविधा, अवसर की समानता की सुरक्षा प्रदान करना तथा
- व्यक्ति मर्यादा और राष्ट्रीय एकता और संहति निश्चित कर उनमें भातृभाव प्रोत्साहित करने के लिए

सन् १९४९, नवम्बर २६ तारीख को हमारी संविधान प्रणयन सभा में इसके तहत इस संविधान को ग्रहण और प्रणयन करते हैं और अपने को समर्पित करते हैं ।

प्रथम अध्याय

संविधान
(CONSTITUTION)

शहर-बाजार, पर्व-उत्सवों में मेले के समय लोगों को भीड़ से रक्षा करने के लिए तथा शहरों में जनसाधारण और गाड़ी - मोटर को नियंत्रण करने के लिए पुलिस प्रशासन की आवश्यकता होती है ।

यहाँ और एक उदाहरण दिया गया है । वर्षा ऋतु में मुषलाधार वर्षा होने के कारण नदी में पानी बहुत बढ़ जाता है और बाढ़ के कारण गाँव - बस्ती बह जाते हैं पर यदि बाँध बनता है तो नदी का प्रखर श्रोत आसानी से किनारा लाँघ नहीं पाता । जनसमुदाय को कोई असुविधा नहीं होती । वरन् बाँध से पानी नियंत्रित रहता है ।

जैसे पुलिस वाहिनी विभिन्न प्रकार के कदम उठाकर जनसाधारण की मदद करती है; जैसे एक बाँध से नदी के श्रोत नियंत्रित होते है वैसे एक देश का संविधान देश के जनसमुदाय को अनुशासित करने के साथ-साथ सरकार को सुनियंत्रित करता है । सरकार के अत्तरदायित्व को बढ़ाता है ।

संविधान क्या है ?

'संविधान' से हम क्या समझते हैं? संविधान है, एक राष्ट्र का मौलिक कानून । इस मौलिक कानून द्वारा सरकार गठित होती है और विभिन्न प्रकार के सरकारों में (संसदीय सरकार, 'राष्ट्रपति सरकार, ऐकिक राष्ट्र, संघीय राष्ट्र और गणतंत्र) सार्वभौभ क्षमता का सुनियंत्रण और बंटन भी किया जाता है । संविधान के अलावा एक राष्ट्र की परिकल्पना नहीं की जा सकती । विशेषत: एक संघीय राष्ट्र में संविधान की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि एक संविधान के माध्यम से केन्द्र और राज्य सरकार के बीच क्षमता का बंटन और उनके विवादों का समाधान करने की व्यवस्थाएं होती हैं । संविधान राष्ट्र का सर्वोच्च कानून है । अन्य कानूनों को संविधान से मान्यता मिलती है ।

> **क्या आप जानते हैं?**
>
> फइनर के मतानुसार : संविधान मौलिक राजनैतिक अनुष्ठान में एक व्यवस्था है ।
>
> **उलसे के मतानुसार :**
>
> संविधान नीतियों का समाहार है, इससे सरकार की क्षमता, नागारिकों का अधिकार और सरकार तथा नागारिकों के संपर्क में समन्वय होता है ।

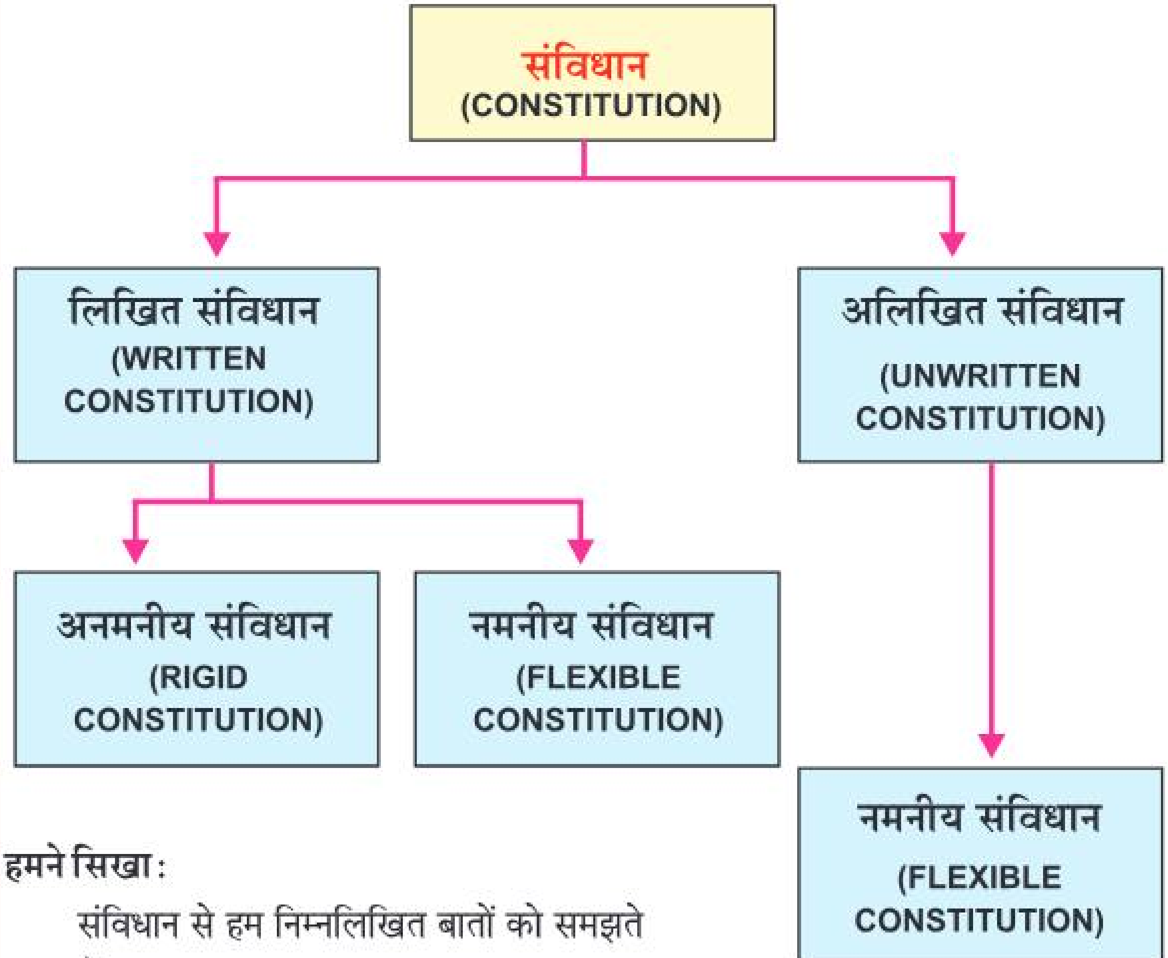

हमने सिखा :

संविधान से हम निम्नलिखित बातों को समझते हैं :

क) सरकार गठन और क्षमता

ख) देश की सुपरिचालना के लिए नियम और विधि

ग) जनसाधारण और सरकार के बीच संपर्क

घ) जनसाधारण के अधिकार और कर्तव्य का विवरण और सुरक्षा ।

संविधान को मुख्यत: दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

१. क्रम विकसित संविधान:

२. संविधान प्रणयन सभा द्वारा प्रणीत संविधान

१. क्रम विकसित संविधान :

इस संविधान को किसी ने प्रणयन नहीं किया । यह अपने आप घटनाचक्र में ऐतिहासिक

- संविधान का संकीर्ण अर्थ है, केवल लिखित संविधान जिसमें सरकार की क्षमता, संगठन, जनसाधारण और सरकार के बीच संपर्क तथा जनसाधारण का अधिकार, कर्तव्य लिपिबद्ध होता है पर व्यापक अर्थ में संविधान का अर्थ है, लिखित सांविधानिक नीति के साथ अलिखित प्रथा, परंपरा और चालचलन जिससे राष्ट्रों के सरकारी क्षमता कार्यकारी होती है ।
- विकसित संविधान का एक ज्वलन्त उदाहरण है - ब्रिटेन का संविधान ।

विवर्तन, क्रम विकसित राजनीतिक आवश्यकता से विकसित है । इस प्रकार का संविधान सामाजिक आचरण, चालचलन और पंरपरा पर आधारित है ।

आप अपने समाज के विभिन्न प्रथाओं के उदाहरण दीजिए ।

२. **संविधान प्रणयन सभा द्वारा प्रणीत संविधान :**

लोक प्रतिनिधियों के द्वारा संविधान प्रणयन सभा होती है । इस सभा में या अन्य किसी क्षमता प्राप्त संस्था के द्वारा संविधान को लिखित दलिल आकार में लिपिबद्ध करने से यह लिखित संविधान कहलाता है । इस संविधान के संशोधन के लिए निश्चित पद्धति आवश्यक है ।

क्या आप जानते हैं ?

संयुक्तराष्ट्र अमेरीका, भारत, फ्रान्स, आदि के संविधान लिखित संविधान के उदाहरण हैं ।

किन परिस्थितियों में एक लिखित दलिल और सांविधान की आवश्यकता होती है ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

लिखित संविधान :

लिखित संविधान देश का सांविधानिक कानून है । इसे देश की सरकार और जनसमुदाय मानने के लिए बाध्य है । इस संविधान में सरकार संगठन सरकार के विभिन्न विभागों में क्षमता बंटन, नागरिकों के अधिकार को और सुरक्षा सरकार और नागरिकों में संपर्क आदि का वर्णन किया जाता है । यह देश का सर्वोच्च कानून है ।

क्या आप जानते हैं ?

गार्नर के मतानुसार :

लिखित संविधान एक सुचिंतित योजना है । इसका प्रणयन और अनुमोदन संविधान प्रणयन सभा या अन्य किसी क्षमता प्राप्त सभा से होता है ।

भारत के संविधान को वकीलों का भूस्वर्ग (Lawyer's Paradise) कहाजाता है ।

भारतीय संविधान को विश्व के सर्ववृहत् लिखित संविधान (३९५ धारा विशिष्ट) के रूप में ग्रहण किया गया है ।

विश्व में किन देशों के संविधान लिखित हैं ? उनमें से ६ देशों के नाम तथा तथ्य संग्रह कर लिखिए ।

कुछ संविधान-वितों के मतानुसार जैसे एक दर्जी किसी आदमी के भविष्यत के शारीरिक विकास को ध्यान में न रखकर वर्तमान के शरीर से पोशाक तैयार कर देता है वैसे किसी देश के भविष्य को ध्यान में न रखकर एक लिखित संविधान प्रस्तुत करना है ।

क्या आप जानते हो ?

संयुक्तराष्ट्र अमेरीका का संविधान विश्व का सर्व-प्राचीन लिखित संविधान है । यह सन १७८९ से कार्य करता आ रहा है ।

सन् १९४६ कैविनेट मिशन की संस्तुति के अनुसार भारतीय संविधान प्रणयन सभा लोक प्रतिनिधियों को लेकर हुई थी । इस सभा का सन १९४९ नवंबर २६ को कार्य समाप्त हुआ । जनवारी २६, सन् १९५० को यह लिखित संविधान कार्यान्वित हुआ ।

जब दो दलो में क्रिकेट प्रतियोगिता होती है और किसी कारण वशत: रेफरी के निर्णय से एक दल संतुष्ट न होता तो रेफरी क्या करेगा ?

अलिखित संविधान (Unwritten Constitution) :

अलिखित संविधान ने संविधान प्रणयन सभा द्वारा प्रस्तुत होता है न किसी लिखित पुस्तक या दलिल आकार में लिपिबद्ध होकर प्रकाशित होता है । इसकी उत्पति मुख्यत: प्रथा, परम्परा, चाल-चलन पार्लामिंटारी एक्ट पर निर्भर करता है और क्षमताएँ कुछ के द्वारा कार्यान्वित होती है ।

एक लिखित संविधान में भी पूरी व्यवस्था लिखित अवस्था में नहीं रहती । दूसरा संविधान और संयुक्तराष्ट्र अमेरीका के संविधान लिखित होने के बावजूद इसमें अनेक प्रथाएँ, सामाजिक आचरण, परम्परा, चाल-चलन की तरह अनेक अलिखित तथ्य हैं जिन्हें लिखित संविधान का एक मुख्य अंश के रूप में ग्रहण किया जाता है ।

क्या आप जानते हैं ?

विश्व का कोई संविधान पूरी तरह अलिखित नहीं है । १२१५ मग्नाकार्टा, १६२८- पिटिसन अफ राइटस, १९११ पार्लामिंटारी एक्ट आदि को ब्रिटिश सांविधानिक दलिल के हिसाब से ग्रहण किया जाता है । ब्रिटिश संविधान एक अलिखित संविधान का उदाहरण है ।

गार्नर के मतानुसार एक अलिखित संविधान में अधिकांश कानून अलिखित हैं पर सब कानूनन तथ्य अलिखित नहीं हैं ।

क्या आप जानते हैं ?
भारत में संख्या गरिष्ठ दल मंत्री के रूप में चयन करना संविधान में लिपिबद्ध नहीं है पर यह एक प्रथा और परंपरा का उदाहरण है ।

एक लिखित और अलिखित संविधान में कौन-सा उत्कृष्ट है और क्यों ?

अनमनीय संविधान (RIGID Constitution) :

जिस संविधान को आसानी से संशोधन और परिवर्तन नहीं किया जा सकता, उसे 'अनमनीय संविधान' कहा जाता है । इसकी संशोधन प्रणाली बहुत कठिन है । इसमें नमनीय संविधान की भाँति सांविधानिक कानून (Constitutional Law) और साधारण कानून (Ordinary Law) संशोधन या परिवर्तन एक श्रेणी में अन्तर्भुक्त नहीं है । यहाँ सांविधानिक कानून की संशोधन प्रणाली साधारण कानून की संशोधन प्रणाली से पूरी तरह भिन्न है । संविधान की निश्चत पद्धतियों के अनुसार सांविधानिक कानून संशोधन हो सकता है । व्यवस्थापक सभा अपनी इच्छा और तरीके से इसका संशोधन नहीं कर सकती । संशोधन के लिए एक निश्चित पद्धति का उल्लेख है ।

क्या आप को मालूम है ?
संयुक्तराष्ट्र अमेरीका का संविधान एक अनमनीय संविधान है ।

सांविधानिक व्यवस्थाएँ संविधान के कानून में अन्तर्भुक्त हैं । भारत संविधान की ३६८ धारा में संविधान संशोधन प्रणाली उल्लेख है । यद्यपि भारतीय संविधान एक अनमनीय संविधान है फिर भी केन्द्र संसद कुछ व्यवस्थाओं को संशोधन कर सकता है, जैसे नूतन राज्य सृष्टि नागरिकों के लिए कानून, राज्य विधान परिषद की सृष्टि और उच्छेद आदि एक अनमनीय संविधान में संविधान की व्याख्या और जाँच न्यायालय के निर्णय पर निर्भर करती है ।

नमनीय संविधान (Flexible Constitution) :

संविधान की संशोधन प्रणाली के अनुसार संविधान मुख्यत: दो भागों में विभाजित है: अनमनीय (RIGID) और नमनीय (FLEXIBLE) संविधान ।

क्या आप को मालूम है ?
ब्रिटिश संविधान नमनीय संविधान का एक ज्वलंत उदाहरण है ।

एक नमनीय संविधान की संशोधन प्रणाली अत्यंत सहज है । दूसरे अर्थ में कहा जाए तो जिस संविधान में सांविधानिक कानून और साधारण

कानून की संशोधन प्रणाली में अंतर नहीं रहता, उसे नमनीय संविधान कहते हैं । साधारणत: व्यवस्थापक सभा संविधान को संशोधन करती है ।

एक लकड़ी और एक गुब्बारे में कौन सा नमनीय और कौन सा अनमनीय है ? बताइए ।

एक नमनीय संविधान उस कोमल लता की भाँति है जो रास्ते पर लटक रहती है । जैसे रास्ते पर कोई वाहन जाने के समय चालक को उसे थोड़ा हटाकर जाना पड़ता है और फिर से वही लता पुन: अपनी स्थिति में आ जाती है, उसी प्रकार एक नमनीय संविधान अपना रूप परिवर्तन न करके किसी भी परिस्थिति का सामना कर पाता है ।

नमनीय संविधान एक संघीय राष्ट्र के लिए उपयोगी नहीं है । संघीय राष्ट्र के लिए एक लिखित और अनमनीय संविधान आवश्यक है क्योंकि नमनीय संविधान परिवर्तनशील है । इसलिए देश के शासन क्षेत्र में स्थिरता नहीं रहती । यह संसद के शासकों को मनमाने शासन करने लिए मौका देता है ।

एक अनमनीय और नमनीय संविधान में अंतर बताइए ।

संविधान की आवश्यकताएँ (Need of Constitution) :

संविधान गणतंत्र की मूल नींव है ।

संविधान की आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं:

१. यह सरकार की क्षमता नियंत्रित करता है ।
२. यह सरकार के कार्यों के बारे में सूचित करता है ।
३. जन-साधारण को सुनागरिक करने के लिए मौका प्रदान करता है ।
४. वर्तमान और भविष्यत वंशजों के विभिन्न कार्यकलापों को अनुशासित करने में संविधान की विशेष आवश्यकता है ।
५. एक संघीय शासन व्यवस्था में केन्द्र - राज्य के बीच क्षमता बंटन संविधान के माध्यम से होता है ।

क्या आप को मालूम है ?

संविधानवित मतानुसार एक देश का संबिधान एक निश्चत समय तक प्रस्तुत होना चाहिए क्योंकि एक नूतन संवीधान एक नूतन युग की चुनती का सामना कर सकता है । संविधना पुराना होने से नूतन समाज के साथ उसका ताल मेल ठीक नहीं रहता । इसलिए पुराने संविधना का संशोधन जरूरी है । अबश्य एक अनमनीय संविधान का संशोधन अनिवार्य है । युक्तराष्ट्र जहाँ अमेरीका का संविधान २६ बार संशोधन हो चुका है वहाँ भारत का संविधान १०४ से अधिक बार संशाधन हुआ है । इसलिए संविधान नमनीय होने से समयानुसार कार्य करने में विशेष असुविधा नहीं होती ।

६. नागरिक और सरकार के बीच संपर्क स्थापन करता है ।

७. जनसाधारण के स्वार्थ और मौलिक अधिकारों की सुरक्षा करता है ।

८. प्रचलित शासन व्यवस्था को कानूनन करता है ।

क्या आप को मालूम है ?

यदि संविधान अत्याधिक नमनीय हो तो व्यवस्थापक सभा के हाथ में यह एक खिलौना होता है और देश के लिए खतरा घनीभूत होता है ।

संविधान क्यों आवश्यक है ? मित्रों से अलोचना कर लिखिए ।

हम ने सिखा :

- एक राष्ट्र को ठीक से शासन करने के लिए जो मौलिक कानून आवश्यक है, उसे उस देश का संविधान कहा जाता है ।
- संविधान प्रणयन सभा या अन्य किसी क्षमता प्राप्त सभा द्वारा लिखित संविधान प्रणयन और अनुमोदन लाभ करता है ।
- संयुक्तराष्ट्र अमेरीका और भारतीय संविधान लिखित संविधान हैं ।
- अलिखित संविधान किसी संविधान प्रणयन सभा द्वारा है प्रस्तुत नहीं होता । यह किसी लिखित पुस्तक या दलिल के रूप में लिपिबद्ध होकर प्रकशित नहीं होता । इसकी उत्पत्ति मुख्यत: प्रथा परम्परा और रहन-शहन पर आधारित है ।
- ब्रिटिश संविधान एक अलिखित संविधान है ।
- जिस संविधान को सहज उपाय से संशोधन किया जाता है, उसे नमनीय संविधान कहा जाता है । ब्रिटिश संविधान एक नमनीय संविधान है ।
- जिस संविधान की संशोधन प्रणाली कष्ट-साध्य है और सांविधानिक कानून संविधान की निश्चित पद्धति के अनुसार संशोधन किया जा सकता है, उसे अनमनीय संविधान कहा जाता है । संयुक्तराष्ट्र अमेरीका का संविधान एक अनमनीय संविधान है ।

प्रश्नावली

१. **संक्षिप्त उत्तर लिखिए :**

क) संविधान का अर्थ क्या है ?

ख) संविधान के प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।

ग) लिखित संविधान की आवश्यकता क्या है ?

घ) अलिखित और अनमनीय संविधान के बीच में क्या अंतर है ?

ङ) कौन-से राष्ट्र में अनमनीय संविधान की आवश्यकता है ? और क्यों ?

च) नमनीय संविधान देश की प्रगति में कैसे सहायक होता है ?

२. **'क' स्तंभ के लिखित शब्दों को 'ख' स्तंभ के साथ मिलान कीजिए :**

'क'	'ख'
अनमनीय संविधान	नमनीय संविधान
नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा	संयुक्तराष्ट्र अमेरीका का संविधान
ब्रिटिश संविधान	वृहत संविधान
युगोस्लोविआ संविधान	लिखित संविधान
	अलिखित संविधान

द्वितीय अध्याय

स्वाधीनता संग्राम और भारत संविधान की गठन प्रक्रिया (१८५८-१९४९)

विदेश की इस्टइंड़िआ कंपनी ने व्यवसाय करने के उद्देश्य से भारत में प्रवेश किया था । फिर धीरे धीरे यह कंपनी बहुत चालाकी से अपना साम्राज्य विस्तार करने लगी । भारतीयों का खुब शोषण कर और धन-रत्न अपने देश को लेने लगे । भारतीयों के मन में अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष की आग जलने लगी । भारतीय संग्रामियों के नेतृत्व में सन् १८५७ में हिन्दु मुसलमानों ने एकत्रित होकर अंग्रेज शासन के विरुद्ध विद्रोह भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम था । परन्तु अंग्रेजों की शक्ति के कारण यह विद्रोह दब गया । अंग्रेज सरकार को भारतीयों के असन्तोष की सूचना मिलेगा । तब उन्हेंने भारत में कुछ नए ढंग के शासन संस्कार लाने के लिए प्रयास किया ।

क्या आपको मालूम है ?

सन् १८५७ का सिपाही विद्रोह अंग्रेज शासन के खिलाफ भारतीयों का प्रथम स्वाधीनता संग्राम है ।

सन् १८५८ में भारत शासन संबंधीय घोषणाप्रत्र :

सिपाही विद्रोह के पतन के बाद सन् १८५८ में इंलैड की रानी विक्टोरिया के नाम में एक घोषणा-पत्र प्रकाशित हुआ । इसके बल पर भारतीय प्रजाओं को ब्रिटिश प्रजाओं की भाँति समान अधिकार उपभोग करने का अधिकार मिला । शैक्षिक योग्यता के अनुसार उन्हें सरकारी नौकरी भी मिलेगी ।

क्या आपको मालूम है ?

- सन् १८५८ के भारत शासन विधि को बुद्धिजीवियों ने 'माग्नाकार्टा' की आख्या दी थी ।
- सिपाही विद्रोह के बाद १८५८ घोषणा पत्र के कारण ब्रिटिश रानी के हाथ में ईस्टइंड़िआ कंपनी की क्षमता हस्तान्तरित हुई ।

सन् १८६१ का भारतीय परिषद कानून :

इस कानून के बल पर वाइसराय का एक इम्पोरिआल विधान परिषद गठन किया गया । वाइसराय ने इनके सदस्यों को चयन किया । फल स्वरूप भारतीयों को कानून प्रणयन का अत्यधिक मौका मिला ।

> **क्या आपको मालूम है ?**
>
> - मुंबइ और मद्रास सरकार को वैधानिक क्षमता प्रदान की गई । तत्सहित अन्य प्रदेशों की भाँति विधान परिषद गठन करने के लिए व्यवस्थाएँ हुईं ।

सन् १८९२ का शासन संस्कार कानून :

तत्कालीन वाइसराय लर्ड रिपन के कथा कथानुसार सन् १८६१ में भारतीय शासन संस्कार कानून जिस उद्देश्य से प्रणयन हुआ था उसका सफल कार्यान्वयन नहीं हो पाया । भारतीयों की मांगों को अंग्रेज सरकार के समक्ष प्रस्तुत कर भारत को स्वाधीन करने के लिए सन् १८८५ में अलान अक्टावियान ह्युम की चेष्टा से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई । कांग्रेस दल के नेता प्रादेशिक विधान परिषदों की क्षमता वृद्धि करने के लिए प्रस्ताव दिए गए । सन् १८९२ के भारतीय शासन संस्कार कानून के बल पर सर्वोच्च विधान परिषद और मद्रास तथा मुंबई की भाँति प्रादेशिक विधान परिषद की सभ्य संख्या और क्षमता की वृद्धि हुई ।

> **क्या आपको मालूम है ?**
>
> - उमेशचन्द्र बानार्जी भारतीय कांग्रेस के प्रथम सेनापति थे ।
> - संरक्षित क्षमता गर्वनर के हाथ में रही और हस्तान्तरित क्षमता भारतीय सदस्यों के हाथ में ।
> - सन् १९१९ 'राउल्ट एक्ट' अनुमोदन हुआ । इसे 'काला कानून' की आख्या देकर भारतीयों ने आन्दोलन जारी रखा ।
> - सन् १९१९ में अमृतसर के जालियाना वालबाग में जेनराल ने गणहत्या हुई ।
> - सन् १९१९ में खिलाफत आन्दोलन हुआ था ।

सन् १९०९ मर्ले-मिंटो शासन संस्कार :

सन् १९०५ में औपनिवेशिक सरकार का उद्देश्य बंग विभाजन के बाद मालूम पड़ा । प्रशासन का उद्देश्य था सांप्रदायिक अंतर सृष्टि करना बनाना । सन् १९०९ के शासन संस्कार में पहली बार मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचित मंड़ली की संस्तुति मिली । वाइसराय की कार्यपालिका परिषद को एक भारतीय को चयन करने की व्यवस्था हुई । विधान परिषद के कार्यक्रम में हल्का-सा परिवर्तन हुआ ।

सन् १९१९ भारत शासन संस्कार कानून :

सन् १९१८ में शासन सचिव मण्टेग्यू और वाइसराय चेमसफोड़ भारत में कांग्रेस नेताओं के साथ आलोचना की । उन्होंने सन् १९१९ में भारत में शासन संस्कार लाने के लिए प्रस्ताव दिया ।

यह भारत संस्कार कानून या मंटेग्यू-चेमसफोड़ शासन संस्कार नाम से नामित हुआ । इस शासन संस्कार कानून में प्रदेशों में द्वैत शासन व्यवस्था हुई । शासन व्यवस्था में क्षमताएँ दो भागों में विभाजित हुईं : संरक्षित (Reserved) और हस्तान्तारित (Transferred) क्षमता ।

क्या आपको मालूम है ?

सन् १९३५ का भारत शासन कानून एक वृहत्तम कानून है । इसमें ३२१ भाग थे ।

सन् १९३५कानून में ब्रिटिश सरकार का विभाजन और शासन चल रहा था ।

सन् १९३५ का भारत शासन कानून :

- सन् १९३५ में ब्रिटिश पार्लमेंट ने भारत शासन कानून प्रणयन किया । इसके वैशिष्ट्य निम्नलिखित है :
- इसमें भारत में संघीय राष्ट्र सृष्टि करने की व्यवस्था हुई ।
- ब्रिटिश पार्लमिंट को उक्त कानून का संशोधन और परिवर्तन करने का अधिकार सौंपा गया ।
- १९१९ के कानून में प्रदेशों को प्रदत्त 'आरक्षित व हस्तान्तरित' क्षमता न देकर केन्द्र सरकार की क्षमता को आरक्षित और हस्तान्तरित' क्षमता में भाग किया गया ।
- केन्द्र-राज्य के बीच विवाद का समाधान और कानून की जाँच-पड़ताल के लिए संघीय न्यायालय की व्यवस्था हुई ।
- सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था हुई ।
- केन्द्र-राज्य के बीच विवादों का समाधान और कानून जाँच करने के लिए संघीय न्यायालय की व्यवस्था हुई ।

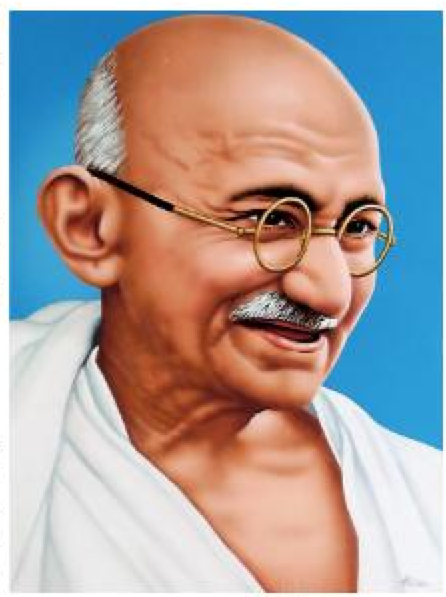

महात्मा गांधी

सन् १९४७ में भारत का स्वाधीनता कानून :

लड़ माउंटवेटन गवर्नर के रूप में सन् १९४७ में भारत आए थे । वे ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भारतीयों की समस्याओं का समाधान करने के उद्देश से आए थे । उन्होंने भारत में कांग्रेस के नेता, मुसलिमलिग नेता और भारत के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के साथ आलोचना कर जो प्रस्ताव दिया था उसे ब्रिटिश सरकार ने अनुमोदन किया ।

क्या आप को मालूम है ?

सन् १९४७ अगस्त १४ तारीख को पाकिस्तान में स्वाधीनता दिवस पालन किया जाता है और भारत में सन् १९४७ अगस्त १५ तारीख को स्वाधीनता दिवस पालन किया जाता है ।

ये व्यवस्थाएँ निम्नलिखित हैं :

- भारत को विभाजन कर भारत और पाकिस्तान के नाम में दो स्वाधीन राष्ट्रों का निर्माण होगा ।

- प्रत्येक राष्ट्र के लिए सार्वभौम व्यवस्थापक सभा पृथक रूप से रहेगी ।
- प्रत्येक राष्ट्र के लिए गवर्नर नियुक्त की व्यवस्था रहेगी ।
- राज्यों में गवर्नर नियुक्त होंगे ।
- भारत में ब्रिटिश सरकार का शासन नहीं रहेगा ।

संविधान प्रणयन सभा (CONSTITUENT ASSEMBLY) :

कैविनेट मिशन की सिफ़रिश के अनुसार संविधान प्रणयन के लिए एक संविधान प्रणयन सभा के सदस्य परोक्ष रूप से निर्वाचित होते थे । इस सभा से मुसलिमलिग अलग हो गया था । सभा की सदस्यों की संख्या ३८९ थी ।

सबसे पहेल १९४६ में दिसम्बर ९ तारीख को संविधान प्रणयन सभा हुई थी । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान प्रणयन सभा के सभापति थे और डॉ. भीमराव एम्बेदकर चिट्ठा प्रस्तुत कमेटी के अध्यक्ष थे । नूतन संविधान सन् १९४९ नवम्बर २६ तारीख को स्वीकृत हुआ और सन् १९५० जानवरी २६ तारीख से कार्य करता आ रहा है ।

- सन् १९४६ में भारत की परिस्थितियों की समीक्षा करने के लिए विदेश से तीन कैविनेट मंत्री भारत आए थे । इसे कैविनेट मिशन कहा जाता है । इस मिशन की संस्तुति के अनुसार भारत में चुनाव करके भारत संविधान प्रणयन करने के लिए एक संविधान प्रणयन सभा गठित हुई थी ।
- सन् १९४६ के दिसम्बर महीने में पं. जवाहरलाल नेहरू ने भारत संविधान के उद्देश्य से संबंधीय अवजेक्टिव रिजोलियूसन प्रस्ताव रखा था । इससे भारतीय संविधान के उद्देश्य संपर्क में सूचना मिलती है ।

हमने सिखा :

- सन् १८५७ में भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम सिपाही विद्रोह हुआ ।
- सन् १८५८ में महारानी विक्टोरिया घोषणा पत्र के बल से इस्टइंडिया कंपनी से क्षमता महारानी को हस्तान्तरित हुई ।
- सन् १८६१ के भारतीय परिषद कानून के बल पर इंम्पेरियल विधान परिषद गठन हुआ ।
- सन् १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कंग्रेस की सृष्टि हुई ।
- सन् १८९२ में शासन संस्कार कानून के बल पर प्रदेशों में विधान परिषद के परिसर में वृद्धि हुई ।
- सन् १९०९ में मर्ले-मिंटो शासन संस्कार कानून द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक चुनाव व्यवस्था प्रचलित हुई ।
- सन् १९१९ में भारत शासन संस्कार के कानून द्वारा दैत शासन प्रचलित हुआ ।

- सन् १९३५ में भारत शासन के कानून में भारत में एक संघीय राष्ट्र सृष्टि करने की व्यवस्था हुई ।
- सन् १९४७ के भारत की स्वाधीनता कानून में ब्रिटिश साम्राज्य का आधिपत्य भारत में लोप हुआ । भारत और पाकिस्तान को अलग-अलग राष्ट्र बनाने की व्यवस्था हुई ।
- संविधान प्रणयन सभा द्वारा भारत में नूतन संविधान प्रस्तुत हुआ ।

प्रश्नावली

१. भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के समय ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन में कौन-सा शासन कानून अधिक महत्वपूर्ण था और क्यों ? पाँच वाक्यों में लिखिए ।

२. सन् १८५७ के सिपाही विद्रोह का तात्पर्य क्या है ? समझाइए ।

३. महारानी विक्टोरिया के घोषणापत्र के बल पर भारत शासन में क्या परिवर्तन हुआ ?

४. दैत शासन क्या है ?

५. सन् १९३५ का भारत शासन कानून हमारे भारत के नए संविधान को कैसे प्रभावित करता है ?

६. सन् १९४७ भारतीय स्वाधीनता कानून भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में सहायक हुआ ?

७. **संशोधन कीजिए:**

क) सन् १९१९ के तहत भारत संस्कार शासन कानून के बल पर शैक्षिक योग्यता के आधार पर भारतीयों को सरकारी नौकरी मिलगी ।

ख) सन् १८९२ के तहत शासन संस्कार कानून बल पर केन्द्र-राज्य में विवाद को हल करने के लिए राज्य न्यायालय की व्यवस्था हुई ।

ग) सन् १८६१ के शासन कानून बल पर भारत में ब्रिटिस साम्राज्य की क्षमता और नहीं रही ।

घ) भारत के नूतन संविधान सन् १९४९ में नवम्बर २६ तारीख से कार्यकारी होता आ रहा है ।

तृतीय अध्याय

भारत संविधान के मौलिक वैशिष्ट्य
(BASIC FEATURES OF INDIAN CONSTITUTION

सन् १९४६ में भारत की स्थिति निरीक्षण कर कैविनेट मिशन के प्रस्ताव के अनुसार संविधान प्रणयन सभा (ण्दहूॅरलहूॅ ॅस्त्ऌ) गठन करने के लिए जुलाई महीने में चुनाव हुआ था । सन् १९४६ दिसम्बर ९ तारीख से १९४९ नवम्बर २६ तारीख तक संविधान प्रणयन सभा हुई थी । भारत का नूतन संविधान १९५० जनवरी २६ तारीख से कार्यकारी होता आ रहा है ।

भारतीय संविधान प्रस्तुत करने के समय संविधान प्रणयन सभा विश्व के विभिन्न देशों के संविधानों को निरीक्षण करती थी ।

भारतीय संविधान के अनेक मौलिक वैशिष्ट्य हैं जो निम्नलिखित हैं :

क्या आपको मालूम है ?

- सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में इस संविधान प्रणयन सभा का प्रथम अधिवेशन दिसम्बर ९, १९४६ में हुआ था ।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद इसके स्थायी सभापति थे ।
- डॉ. भीमराव एम्बेदकर चिट्ठा प्रणयन कमटी (Drafting Committee) के अध्यक्ष रूप में नियुक्ति मिली थी ।

प्रस्तावना (PREAMBLE) :

प्रत्येक लिखित संविधान में एक प्रस्तावना होती है । इसे संविधान की कुंडली और आमुख कहा जा सकता है । इससे संविधान का उद्देश्य स्पष्ट होता है ।

संविधान की प्रस्तावना निम्न प्रकार है । हम भारतवासी भारत को एक सार्वभौम, समाजवादी, धर्म निरपेक्ष गणतांत्रिक साधारण-तंत्र के रूप में गठन करने के लिए दृढ संकल्प लेकर इसके नागरिकों को हमारे —

- सामाजिक, अर्थनैतिक और राजनीतिक न्याय
- चिन्ता, अभिव्यक्ति, प्रत्यय, धार्मिक विश्वास और उपासना में स्वतंत्रता
- स्थिति और सुविधा में समानता की सुरक्षा प्रदान
- व्यक्ति मर्यादा और राष्ट्र में एकता और संहति निश्चित कर उनमें भातृभाव को प्रोत्साहित करने के लिए हम सन् १९४९ नवम्बर २६ तारीख को हमारी संविधान प्रणयन सभा में इन बिन्दुओं के तहत इस संविधान को ग्रहण और कार्यान्वित करते हैं और अपने आप को अर्पित करते हैं ।

भारत एक **सार्वभौम** राष्ट्र होने के कारण यह आभ्यन्तरीण और बाह्य नियंत्रण से पूर्णत: मुक्त है ।

यह **समाज वादी** राष्ट्र होने के कारण इसका मूल उद्देश्य है दारिद्रय दूर करना ।

एक **धर्मनिरपेक्ष** राष्ट्र में समस्त धर्म समान है ।

गणतांत्रिक राष्ट्र अर्थात् जहाँ गण-प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन होता है ।

गणतंत्र राष्ट्र अर्थात् भारत के राष्ट्रमुख्य वंशानुक्रमिक नीति से शासन क्षमता को नहीं आते हैं । उनका चुनाव होता है ।

डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर

डॉ. एम्बेदकर भारतीय संविधान चिट्ठा प्रणयन कमेटी के अध्यक्ष थे । उन्हें आधुनिक भारत के मनु और भारतीय संविधान के पिता कहा जाता था । उनका जन्म सन् १८९१, अप्रैल १४ को महाराष्ट्र के रत्नगिरि प्रखंड में जन्म हुआ था । वे महार थे । दलित जाति के सामाजिक उत्थान के लिए उनका आजीवन संग्राम चलता रहता था । उनका वास्ताविक नाम आम्बेडकर था पर कक्षा शिक्षक के परामर्श के अनुसार उनका नाम एम्बेदकर चल पड़ा ।

क्या आप को मालूम है ?

- विशिष्ट् संविधानवित पालखिवाला के अनुसार यह प्रस्तावना संविधान का एक 'परिचय पत्र' (Identity Card) है ।
- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने सन् १९७३ में केशवानन्द भारती के मामेल में घोषणा की थी कि प्रस्तावना संविधान का एक अंश विशेष है ।
- सन् १९५० से कार्य करता आ रहा संविधान में पहली बार १९७६ में ४२ वीं संशोधन व्यवस्था के अनुसार प्रस्तावना में तीन शब्द जोड़े गए हैं । 'समाजवादी' (Socialist) 'धर्मनिरपक्ष' (Secular) और संहति (Integrity) ।

❖ सार्वभौम, सामाजवाद, धर्मनिरपेक्ष, गणतंत्र और साधारणतंत्र के विलोम शब्द लिखिए ।
❖ आम विधान मंडल से (Constituancy) ओड़िशा विधानसभा को निर्वाचित होने वाले प्रतिनिधियों के नाम लिखिए ।

लिखित संविधान (WRITTEN CONSTITUTION) :

संविधान प्रणयन सभा में २साल, ११ महीने और १८ दिनों तक विभिन्न देशों के संविधान अध्ययन कर विशेष रूप से ब्रिटिश सरकार का भारत में शासन करते समय प्रणीत १९३५ शासन व्यवस्था को विश्लेषण कर भारत के लिए एक दीर्घ और वृहत्तम संविधान प्रणयन किया था । इस मूल संविधान में ३९५ धारा ८ अनुसूची और २२ भाग थे । संयुक्तराष्ट्र अमेरीका के संविधान में मात्र ७ धाराएँ हैं ।

संविधानवित् एम.वी पाइलि ने भारत संविधान के स्थूल आकार को एक हाथी के शरीर के साथ तुलना की है ।

नमनीय और अनमनीय संविधान का मिश्रण (MIXTURE OF FLEXIBLE AND RIGID CONSTITUTION) :

पहले से बताया जा चुका है कि संविधान की संशोधन प्रणाली के अनुसार संविधान को नमनीय और अनमनीय संविधान में बाटाँ जा सकता है ।

भारतीय संविधान की कुछ धाराओं की संशोधन प्रणाली जटिल है । कुछ अन्य धाराएँ केवल संसद के दोनों गृह में साधारण संख्या गरीष्ठता (Simple Majority) समर्थन द्वारा संशोधन किय जाता है । इसके कारण भारतीय संविधान को नमनीय और अनमनीय संविधान का मिश्रण कहा जाता है ।

जिस संविधान की संशोधन प्रणाली जटिल और एक निश्चित पद्धति के अनुसार संशोधन किया जाता है, उसे अनमनीय संविधान कहा जाता है । पर जिस संविधान में सांविधानिक विधि और सामन्य विधि की संशोधन प्रणाली में कोई अंतर नहीं रहता और जिसकी संशोधन प्रणाली सरल और सहज है, उसे नमनीय संविधान कहा जाता है ।

संसदीय शासन व्यवस्था (Pariliamentary form of Government) :

संविधान के प्रणेताओं ने संविधान के अनुकरण से (पूर्णत: समान नहीं) भारत को एक संसदीय राष्ट्र के रूप में निर्माण करने का प्रयास किया है जो निम्नलिखित है:

१. एक संसदीय शासन व्यवस्था में दो मुख्य रहते हैं, एक नाम मात्र राष्ट्र मुख्य हैं और एक वास्तव में सरकार के मुख्य हैं ।
२. एक संसदीय शासन व्यवस्था में कार्यपालिका

ब्रिटेन में राजा या रानी राष्ट्र मुख्य होते हुए भी प्रधानमंत्री सरकार के मुख्य होते हैं । उसी प्रकार भारतवर्ष में भारत के राष्ट्रपति राष्ट्र के मुख्य होते हुए भी प्रधानमंत्री शासन के मुख्य होते हैं । राष्ट्र मुख्य नाम मात्र के मुख्य होते हुए भी प्रकृत क्षमता प्रधानमंत्री के हाथ में रहती है ।

और व्यवस्थापिका के बीच सुसंपर्क रहता है ।

३. प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल अपने शासनकार्य के लिए संसद के निम्न सदन तथा भारत के लोकसभा के समीप उत्तरदायी रहते हैं ।

४. मंत्रिपरिषद का कार्यकाल निम्न सदन के संख्या गरिष्ठ समर्थन पर निर्भर करता है ।

५. साधारणत: संख्या गरिष्ठ दल के नेता को राष्ट्रपति प्रधानमंत्री के रूप में चयन करते हैं ।

यदि लोकसभा मंत्रिपरिषद के विरूद्ध अनास्था प्रस्ताव आगत करती है और वह गृहीत हो जाती है तब प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद इस्तीफा देने के लिए बाध्य होते हैं । यद्यपि उनका कार्यकाल सामान्यत: ५ साल फिर भी संसद का निम्न संदन कार्यकाल पूर्ण होने से पहले इसका कार्यकाल समाप्त कर सकता है । भि.पि सिंह सरकार का पतन १९९० नवम्बर ७ तारीख को इसी प्रक्रिया में पहली बार हुआ था ।

भारत के राष्ट्रपति राष्ट्र-मुख्य होने के बावजूद भारत एक संघीय राष्ट्र नहीं है । क्यों ? दूसरों से चर्चा कर लिखिए ।

केन्द्राभिमुखी संघीय व्यवस्था : (FEDERAL WITH UNITARY FEATURES) :

भारत के संविधान के किसी स्थान पर यद्यपि भारत एक संघीय राष्ट्र होने का उल्लेख नहीं है, फिर भी भारत एक संघीय राष्ट्र है ।

एक संघीय राष्ट्र में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते है:

१ . एक लिखित अनमनीय संविधान

२ . द्वैत शासन

३ . केन्द्र और राज्यों बीच आंतरिक क्षमता बंटन ।

४. स्वाधीन एवं निरपेक्ष न्यायालय भारत में उपरोक्त व्यवस्थाएँ परिलक्षित होने के कारण यह एक संघीय राष्ट्र है ।

अध्यापक के.सी. होयार के मतानुसार भारत एक संघीय राष्ट्र होने के साथ-साथ संविधान में केन्द्र सरकार अधिक क्षमता संपन्न होती है । इसलिए इसे 'अर्द्ध संघीय' (Quasi-Federation) कहा जाता है ।

केन्द्र- राज्य के बीच क्षमता बंटन होने के कारण राज्यों के किस प्रकार की सुविधा होती है । दूसरों के साथ चर्चा कर लिखिए ।
भारत के सर्वोच न्यायालय के सर्वप्रथम मुख्य न्यायाधीश का नाम क्या है? वर्तमान मुख्य न्यायाधीश का नाम बताइए । आलोचना कर लिखिए ।

एक संघीय राष्ट्र में केन्द्र और राज्य में क्षमता बंटन होने के बावजूद निम्नलिखित कारणों से भारत में संविधानवित्‍ों ने संघीय राष्ट्र को केन्द्राभिमुखी संघीय व्यवस्था के नाम से नामित हुआ है ।

क्या आप को मालूम है ?

- हमारे संविधान के मुख्य विशिष्ट्‍ों को इलैंड़ के ऐकिक, संसदीय गणतंत्र और संयुक्तराष्ट्र अमेरीका के संघीय राष्ट्र संविधान का समिश्रण है ।
- संयुक्तराष्ट्र अमेरीका की भाँति हमारे देश में राष्ट्र संघीय व्यवस्था रहने के बावजूद ब्रिटेन की तरह कुछ ऐकिक व्यवस्था देखने को मिलती है ।

१. केन्द्र सरकार के बीच क्षमता बंटन में राज्यों को राज्य तालिका मुक्त विषयवस्तुओं पर कानून प्रणयन करने के लिए क्षमता दी जाती है । फिर भी केन्द्र सरकार राज्य तालिकाभुक्त के संदर्भ में आपादकालीन परिस्थिति के समय विधि प्रणयन कर सकती है ।

२. राज्यपाल राष्ट्रपति के द्वारा नियुक्त होकर प्रत्येक राज्य में केन्द्र के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते है । वे राज्य के मुख्यमंत्री को चयन करते हैं और जरूरत पड़ने पर बहिष्कार भी कर पाएँगे ।

३. संयुक्तराष्ट्र अमेरीका में राज्यों का अपना संविधान रहने के साथ-साथ भारत में एक संविधान केन्द्र और राज्यों को नियंत्रण करता है ।

४. संयुक्तराष्ट्र अमेरीका जैसे संघीय राष्ट्र में द्वैत नागरिकता रहते हुए भी भारत में जनसाधारण एक नागरिकता ग्रहण करते हैं । हम सभी केवल भारतीय नागरिक ग्रहण करते हैं ।

धर्म निरपेक्ष राष्ट्र (SECULAR STATE) :

भारत का कोई निश्चित राष्ट्रीय धर्म नहीं है । हमारे देश में विभिन्न धर्म के लोग वास करते हैं । वे किसी भी धर्म ग्रहणकर इसको प्रचार-प्रसार कर सकते हैं । भारत के संविधान के मौलिक अधिकार में २५ धारा से २८ धारा के बीच धार्मिक अधिकार दिया गया है । सन् १९७६ में संविधान के ४२ के संशोधन कानून के अनुसार संविधान की प्रस्तावना में (Preamble) भी भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में उल्लेख किया गया है । राष्ट्र किसी धर्म का विरोध नहीं करता ।

मौलिक अधिकार (Fundamental Rights) :

एक आधुनिक गणतांत्रिक राष्ट्र नागरिकों को उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए कुछ मौलिक अधिकार प्रदान करता है । भारत संविधान के तृतीय परिच्छेद में १२ धारा से ३५ धारा के बीच ७ मौलिक अधिकार प्रदान किया जाता है । सन् १९७८ के ४४ वें संविधान संशोधन व्यवस्था के अनुसार ७ अधिकारों में से संपत्तिगत अधिकार को मौलिक अधिकार से पृथक कर विधिय अधिकार के रूप में अन्तर्भुक्त किया गया है जिसके फलस्वरूप भारतीय नागरिक आज केवल ०६ मौलिक अधिकार उपभोग करते हैं । ये हैं :

१. समानता का अधिकार (Right to Equality)

२. स्वाधीनता का अधिकार (Right to Freedom)

३. शोषण के विरुद्ध अधिकार (Right against Exploitation)

४. धार्मिक स्वाधीनता अधिकार (Right to Freedom of Religion)

५. सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार (Cultural and Educational Rights)

६. सांविधानिक प्रतिकार अधिकार (Right to Constitutional Remedies)

उपरोक्त मौलिक अधिकारों को देश के स्वार्थ की दृष्टि से कुछ समय में नियंत्रित किया जा सकता है । वास्तव में देखा जाए, भारतीय नागरिक पहले ५ अधिकार उपभोग करते हैं । किसी परिस्थिति में सरकार या व्यक्ति विशेष यदि अपने अधिकार पर हस्तक्षेप करते हैं तो सांविधानिक प्रतिकार अधिकार के बल पर एक व्यक्ति न्यायालय का आश्रय ले सकता है । सर्वोच न्यायालय या उच्च न्यायालयों में नागरिक अधिकारों की सुरक्षा सांविधानिक प्रतिकार अधिकार के माध्यम से व्यवस्था की गई है ।

क्या आप को मालूम है ?

सन् २००२ में संविधान संशोधन कर धारा २१(क) में ६ से १४ वर्षों तक सभी बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना मौलिक अधिकार है जो एक अंश के रूप में स्वीकृत है ।

यदुनाथ और सौमित्र दसवीं कक्षा के छात्र थे । दोनों ने बोर्ड अधीन में दसवीं कक्षा की परीक्षा दी थी । परीक्षा में दोनों ने अच्छा किया था । शिक्षक का कहना है कि दोनों बहुत अच्छे छात्र हैं और दोनों समान अंक रखते हैं । परन्तु परीक्षा परिणाम जब निकला तब देखा गया कि यदुनाथ को ९८ % नंबर और सौमित्र को ३८ % नंबर मिले । सब आश्चर्य हुए । सभी ने दु:ख प्रकट किया । सौमित्र ने न्याय पाने के लिए न्यायालय का आश्रय लेना चाहा । अभी प्रश्न है, संविधान के किन मौलिक अधिकार उल्लंघन के बल पर वह न्यायालय में आश्रय लेगा ?

चगला की उम्र १० साल है । बचपन से उसके मां-बाप चल बसे । दूसरों के घरों पर काम करके अपना भरण-पोषण करता था । पतंग और कबड्डी खेलते-खेलते उसका समय बीतता था । देखते-देखते उम्र १० साल हो गया । भुवनेश्वर मास्टरकैंटिन चौक पर भीमसेन का एक छोटा भोजनालय है । उनके भोजनालय में चगला काम करने लगा । बर्तन साफ-सुथरा कर मेज साफ करता था । एक दिन हकीम ने भीमसेन को दंड़ विधान किया । अब प्रश्न है - किस अपराध और किस अधिकार के उल्लंघन के कारण भीमसेन को हकीम ने दंडविधान किया ?

राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति (DIRECTIVE PRINCIPLES OF STATE POLICY) :

भारत संविधान के चौथे भाग में ३६ धारा से ५१ धारा के बीच राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति के माध्यम से नागरिकों को सामाजिक और आर्थिक अधिकार प्रदान किया गया है । उक्त निर्देशमूलक नीति को मुख्यत: तीन भागों में विभाजित किया गया है :

१ . समाजवादी नीति
२ . उदारवादी नीति
३ . गाँधीवादी नीति

१. समजवादी नीति :

संपत्ति कुछ निश्चित व्यक्तियों के हाथ में जमा न रहकर संपति का सुषम बंटन करा जाएगा ।

- महिला, पुरुष को समान काम के लिए समान् वेतन प्रदान किया जाएगा ।
- बूढ़े, रोगी और अक्षम लोगों के लिए सहायता करने की व्यवस्था रहेगी ।
- सभी के जीने का मान उन्नत करने के साथ जनसाधारण के स्वास्थ्य की उन्नति के लिए राष्ट्र ध्यान देगा ।

२. उदारवादी नीति :

- न्यायापालिका को कार्यपालिका से पृथक करना ।
- राष्ट्र के समस्त जनसाधारण के लिए एक प्रकार देवानी कानून प्रचलन करना ।
- महत्वपूर्ण पीठों की सुरक्षा करना
  पड़ोशी राष्ट्र के साथ उत्तम संपर्क स्थापन करना ।
- आन्तर्जातीय शांति प्रतिष्ठा करना ।

३. गाँधीवादी नीति :

- गाँधीवादी के कुछ प्रभाव राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति में प्रतीयमान होते है जैसे-
- ग्राम पंचायत स्थापन ।
- कुटीर शिल्प का विकास ।
- अनुसूचित जाति और जन्जाति के लोगों के लिए विशेष यत्न ।
- गोहत्या निषेध ।

राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति भारत को एक जनमंगल तथा आदर्श राष्ट्र के रूप में बनने के लिए बनी है ।

मौलिक अधिकार की सुरक्षा के लिए न्यायालय का आश्रय लिया जा सकता है पर राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति में उल्लिखित व्यवस्थाओं का कार्यान्वयन न होने से न्यायालय का आश्रय नहीं लिया जा सकता ।

क्या आप को मालूम है?

मौलिक अधिकारों से नागरिकों राजनैतिक अधिकार प्रदान करने के समय राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति सामाजिक और आर्थिक अधिकार प्रदान करती है ।

क्या आप को मालूम है?

भारत के सर्वोच्च न्यायालय में गोलकनाथ मामले में मौलिक अधिकार को महत्व दिया गया है । तत्सहित केशवानन्द भारती मामले में राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति को महत्व दिया गया है । सन् १९७८, ४४तम संविधान संशोधन के माध्यम से उक्त नीति को प्राधान्य दिया गया है ।

न्यायालय की स्वाधीनता : (INDEPENDENCE OF JUDICIARY) :

एक गणतांत्रिक राष्ट्र में नागरिक तथा जनसमुदाय स्वाधीनता प्राप्त के लिए हकदार है । पर

भारत का सर्वोच्च न्यायालय

कभी-कभी इसी स्वाधीनता में हस्तक्षेप करना अ-गणतांत्रिक माना जाता है । भारत के नागरिक मौलिक अधिकार उपभोग करते हैं और ये मौलिक अधिकारों की सुरक्षा देश की प्रशासनिक व्यवस्था पर सुप्रिम कोर्ट निर्भर करती है । भारत जैसे संघीय राष्ट्र में संविधान को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है । भारत के सर्वोच्च न्यायालय को संविधान का रक्षक कहा जाता है । विचार व्यवस्था के सुप्रबंधन के लिए विचार व्यवस्था के बल पर स्वाधीन न होकर निरपेक्ष होना आवश्यक है । स्वाधीन विचार व्यवस्थापिका और कार्यपालिका से पूर्णत: पृथक और स्वाधीन होना जरूरी है ।

क्या आप को मालूम है ?

भारत में न्यायाधीशों की नियुक्ति और बहिष्कार पद्धति में स्वच्छता आकर्षणीय तनखा, दीर्घ कार्य काल विचार व्यवस्था की स्वतत्रंता में विशेष सहायक होती है ।

भारत के उच्य न्यायालय (High Court) के न्यायाधीश ६२ साल और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ६५ साल में सेवानिवृत्त होते हैं ।

सार्वजनीन वयश्क मताधिकार प्रथा (UNIVERSAL ADULT FRANCHISE) :

एक गणतांत्रिक राष्ट्र में वयस्कों का मताधिकार रहता है । संविधान की ३ २ ६ धारानुसार मतादाता की उम्र २ १ साल थी पर अब इसे परिवर्तन कर १ ८ साल कर दिया गया है ।

एकक नागरिकता (SINGLE CITIZENSHIP)

भारत में वसवास करने वाले जनसमुदाय सिर्फ भारत के नागरिकों के रूप में गिने जाते हैं । पर संयुक्तराष्ट्र अमेरीका की तरह संघीय राष्ट्र में वसवास करने वाले जनसाधारण पहले जिस राज्य में वास करते हैं वे उस राज्य के नागरिक एवं तत्सहति संयुक्तराष्ट्र अमेरीका के नागरिक होते है ।

यद्यपि भारत संयुक्तराष्ट्र अमेरीका की भाँति एक संघीय राष्ट्र है फिर भी राज्य में वास करने वाले अधिवासी उस राज्य के नागरिक नही होते पर सब भारतीय नागरिक होते हैं ।

- आपके अपने अंचल में किस प्रकार के उन्नतिमूलक कार्य किए जा सकते हैं ? उनमें से तीन उदाहरण दीजिए ।
- जाति के जनक महात्मागाँधी जी के आदर्श में अनुप्राणित होने के लिए राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति के अलावा संविधान के और किस स्थान पर इसकी विशेषता के बारे में उल्लेख है ?
- सन् २ ० ० ८ नवेम्बर २ ६ को पड़ोशी देश के कुछ आदंकवादी मुबई शहर के सागर किनारे स्थित ताज होटल, छत्रपति शिवाजी रेलवे स्टेशन में उपश्थित होकर निरन्तर गोली चलाने लगे । कुछ निरीह जनसाधारण की मृत्यु हो गई । इस प्रकार की भयंकर और हृदय विदीर्ण वाली घटना घटने के बावजूद हम भारत वासी पड़ोसी देश के साथ मित्रता स्थापन करने के लिए आग्रही होते है । इस प्रकार की मित्रता स्थापन राष्ट्र की निर्देशमूलक नीति के किस विभाग में अन्तर्भुक्त है ?

मौलिक कर्तव्य (Fundamental Duties) :

भारतीय नागरिक १९७६ से दस मौलिक कर्तव्य उपभोग करते आ रहे हैं । परंतु वर्तमान भारत के नागरिकों के ११ मौलिक कर्तव्य हैं ।

५१ (क) धारा में संविधान राष्ट्र ध्वज और जातीय संहति को सन्मान देना भारत की सार्वभौमिकता एकता और अखंड़ता जारी रखना भारतीय संस्कृति की सुरक्षा प्राकृतिक परिवेश की सुरक्षा मानविकता और वैज्ञानिक मनोवृति जातीय संपति की सुरक्षा आदि मौलिक कर्तव्य में स्थानित है ।

> **क्या आप को मालूम है ?**
>
> सन् १९७६ के ४२ वे संविधान संशोधन से संविधान की ५१ (क) धारा में १० मौलिक कर्तव्यों को स्थानित किया गया है ।
>
> सन् २००२, ८६ वें संविधान संशोधन से और एक मौलिक कर्तव्य मिलाकर ११ मौलिक कर्तव्य हुए हैं ।

सन् २००२ में जिस कर्तव्य को स्थान दिया गया, वह वर्तमान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । बच्चों को शिक्षा देना अभिभावकों का मौलिक कर्तव्य है ।

हमने सिखा :

- भारतीय संविधान का वैशिष्ट्य ।
- भारत संविधान में प्रस्तावना सन् १९७३ से संविधान का एक अंश माना गया है ।
- भारत का संविधान, संविधान प्रणयन सभा द्वारा प्रस्तुत है ।
- भारत संविधान एक लिखित संविधान है ।
- भारत संविधान नमनीय और अनमनीय संविधान का मिश्रण है ।
- संसदीय शासन व्यवस्था भारत में प्रचलित है ।
- यद्यपि भारत एक संघीय राष्ट्र है फिर भी ऐकिक राष्ट्र के कुछ गुनावली भारत शासन में परिलक्षित है ।
- भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है ।
- भारतीय नागरिकों के छह मौलिक आधिकार हैं ।
- संविधान के चौथे भाग में राष्ट्र की निर्देशमूलक नीतियाँ हैं ।
- भारत में न्यायिक व्यवस्था स्वाधीन है ।
- भारत में १८ सालों के नागरिकों का मतदान अधिकार है ।
- नागरिकों के भारत देश के लिए कुछ कर्तव्य हैं ।

प्रश्नावली

उत्तर दीजिए:

१. भारत के संविधान में प्रस्तावना क्यों स्थानित है ?

२. भारत संविधान एक लिखित संविधान है । फिर भी दो अलिखित विषय वस्तुओं का उदाहरण दीजिए ।

३. भारत संविधान कुछ अंश में नमनीय है । इसके तीन उदाहरण दीजिए ।

४. भारत को संघीय राष्ट्र क्यों कहा जाता है ? इसके तीन प्रमुख विशेषताएँ बताइए ।

५. भारत को क्यों एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र कहा जाता है ? धर्म निरपेक्ष न होने का एक राष्ट्र बताइए ।

६. सांविधानिक प्रतिकार अधिकार क्या है ? तीन वाक्यों में लिखिए ।

७. एकक नागरिकता क्या है ? विश्व के किस राष्ट्र में एकाधिक नागरिकता है ?

८. भारत संविधान के पिता कौन हैं ?

९. एक धर्मभित्तिक राष्ट्र का उदाहरण दीजिए ।

१०. किन शब्दों को संविधान की प्रस्तावना में १९७६ से सम्मिलित किया गया है ?

११. कौन भारत संघीय राष्ट्र में केन्द्र और राज्य के विवादों का हल करते हैं ?

१२. संविधान की किस धारा में भारतीय संस्कृति की सुरक्षा का दायित्व है ?

चतुर्थ अध्याय

मानवीय अधिकार

(HUMAN RIGHTS)

अमेरीका का विश्व वाणिज्य केंद्र

संयुक्तराष्ट्र अमेरीका का विश्ववाणिज्य वेन्द्र सन् २००१ सितम्बर ११ को आतंकवादियों के द्वारा ध्वंस हुआ । सन् २००८ नवम्बर २६ तारीख को भारत के मुबंई के ताज होटल में आतंकवादियों का निरीह नागरिकों पर गोली चलाना मानव अधिकार का उल्लंघन माना जाता है ।

मानव अधिकार क्या है ?

जाति, धर्म, लिंग, वर्ण, सरकार के प्रकार भेद निर्विशेष में एक मानव धरा परं जन्म होने के समय से खुशी से मानव की तरह जीवन बिताने के अधिकार को मानव अधिकार कहा जाता है । बीशवीं शती में इसे सार्वजनीन मान्यता प्राप्त है ।

एक गणतांत्रिक राष्ट्र में नागरिकों का अधिक अधिकार उपभोग करते समय एक स्वेच्छिक या

ताज् होटेल, मुम्वाई आत्मघाति आक्रमण ।

एक छत्रवादी राष्ट्र में जनसाधारण अपक्षोकृत कम अधिकार उपभोग करते है । गणतंत्र हो या एकछत्रवादी राष्ट्र हो, मानवों को मानव की भाँति खुशी से जीवनयापन करने का अधिकार है । समाज में वास करने वाले व्यक्तियों के शोषण को मानव अधिकार विरोध करता है ।

क्या आप को मालूम है ?

सन् १२१५ के 'माग्नाकार्टा' १७७६ का अमेरीका स्वाधीनता घोषणा-पत्र १७८९ के फ्रांस के मानव अधिकार घोषणा मानव अधिकार के रूप में ग्रहण की गई है ।

मानव अधिकार घोषणा (Declaration of Human Rights) :

मिलित जातिसंघ का सनन्द (Charter) सन १९४५ में ग्रहण किया गया था । और २४ अक्तूबर १९४५ से कार्यान्वित हुआ । उसमें आन्तर्जातीय सहयोग, भातृभाव और मानवीय अधिकार पर विशेष महत्व दिया गया है । मानव अधिकार पर अधिक महत्व देने के उद्देश्य से मिलित जातिसंघ के साधारण परिषद में १९४८ दिसम्बर १० तारीख को सार्वजनीन मानवीय अधिकार की घोषणा हुई ।

विश्व में केन्द्रीय क्षमता के प्रयोग द्वारा विकास मुखी राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों के शोषण के शिकार होने के कारण विकासमुखी राष्ट्रों में वास करने वाले मानवों का मानव अधिकार उल्लंघन होता है । मानव अधिकार केवल क्षमतापूर्ण राष्ट्रों द्वारा उल्लंघन नहीं होता । पुलिस प्रशासन भी लोगों को सुरक्षा देने के समय वंदियों के प्रति निष्ठुर और अमानवीय व्यवहार करता है । दैनिक समाचार पत्रों में हम पढ़ते हैं 'थाने में वन्दी की मृत्यु' ।

क्या आप को मालूम है ?

हर साल दिसम्बर १० तारीख को मानव अधिकार दिवस पालन किया जाता है ।

१९९३ से राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और २००३ से हमारे राज्य में मानवाधिकार कार्य करता है ।

उसी प्रकार आंतर्जातीय आतंकवाद मानव अधिकार के प्रति एक चुनौती बन चुकी है जिसके फलस्वरूप निरीह जनसाधारण इसका शिकार होते हैं ।

सांप्रतिक समाज में महिला, शिशु और निम्न वर्ग के लिए मानव अधिकार का उल्लंघन होता है ।

विकासशील राष्ट्रों में किस प्रकार से मानव अधिकार का उल्लंघन होता है ? मित्रों से चर्चा कर लिखिए ।

नारी अधिकार (Women Rights) :

नारियों के प्रति अश्लील व्यवहार, नारी निर्यातना, नारी धर्षण, दहेज के कारण हत्या, कन्याभ्रुण हत्या आदि घटनाएँ पर्याप्त मात्रा में समाज में घट रही हैं । पुरुष की भाँति नारी भी समाज का एक मजबूत अंग है । वह भगिनी, जाया और जननी है । नारी की समृद्धि से समाज की अभिवृद्धि होती है । एक संतान की वाल्य शिक्षा माँ की गोद से आरंभ होती है । इसलिए नारियों को पुरुषों की भाँति समाज में अधिकार मिलना चाहिए । राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्र में नारियों को विशेष अधिकार मिलना चाहिए ।

हिन्दूशास्त्र के अनुसार दोनों पुरुष और नारी देवता एकत्र पूजा पाते हैं । जैसे शिव पार्वती, राम-सीता, राधा कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण आदि । नारी पुरुषों की तुलना में किसी गुण में नहीं है ।

भारत संसद में नारियों की विशेष स्वाधीनता के लिए संसद और विधानसभा में आसन आरक्षण व्यवस्था विचारधीन है । परन्तु भारत में गणतांत्रिक विकेन्द्रीकरण व्यवस्था में नारियों के लिए संरक्षित आसन व्यवस्था है ।

क्या आप को मालूम है ?

सन् १९७६ में भारत में समाज कानुन के बल पर इस काम के लिए नारी और पुरुष को समान मजदुरी मिलगी ।

महत्मा गाँधी ने कहा था कि भारत स्वाधीन हुआ पर हम स्वाधीनता का मतलब उसी समय अनुभव कर पाएँगे जब हमारे देश में कोई नारी आधी रात को अकेली निर्भर होकर आना-जाना कर पाएगी ।

नारियों को अधिकार मिलना क्यों आवश्यक है ? मित्रों से चर्चा कर लिखिए ।

शिशु अधिकार (CHILD RIGHTS) :

शिशु हँसता है तो दुनिआ हँसती है । आज का शिशु कल का नागरिक है । वह राष्ट्र का निर्माण करता है । जैसे एक कली को फूल होने तक मौका मिलना चाहिए ।

६ से १४ सालों के ५० प्रतिशत से अधिक बच्चे विद्यालय शिक्षा से वंचित हैं। उन्हें खाद्य, क्रीड़ा और आमोद-प्रमोद से वंचित किया जाता है । अपने अधिकार के बारे में बताना ही कठिन काम है, जैसे - दिवा स्वप्न ।

८६ वें संविधान संशोधन द्वारा ६ से १४ साल के सभी बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना मौलिक

अधिकार है । बच्चों को शिक्षादान देना अभिभावकों का मौलिक कर्तव्य है जो भारतीय नागरिकों के कर्तव्यों में उपरोक्त संशोधन द्वारा ग्रहण किया गया है । इसके अलावा १४ वर्षों से कम बच्चों को खनिज और कठिन काम में नियुक्ति के लिए मौलिक अधिकार में निषेध किया गया है ।

शिक्षकों से अनुरोध है कि यदि विद्यालय में टेलीविजन की सुविधा रहती है तब विद्यालय के छात्रों को दो आन्तर्जातीय स्वीकृत प्राप्त चलचित्र देखने के लिए मौका देना चाहिए । जैसे 'तारे जमिन पर' 'स्लम डग मिलेनेयार' आदि फिल्मों को शिक्षक, छात्रों को समझाएँगे और फिर छात्र उस पर टिप्पणी देंगे ।

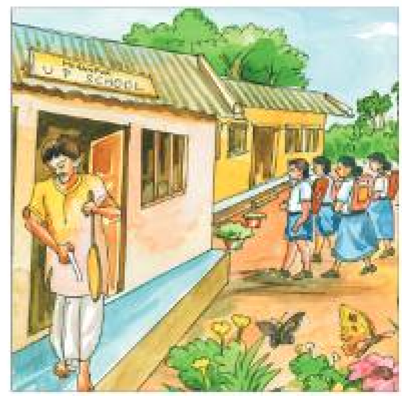

नारी सशक्तिकरण :
(Women Enpowerment)

'नारी शक्ति जिन्दावाद' यह नारी सशक्तिकरण का नारा है।

भारत में पुरुष प्रधान समाज की प्रतिष्ठा श्रीमती इंदिरा गाँधी है । भारतीय समाज में पुरुषों को विशेष महत्व दिया जाता है । एक बेटी की शादी में वह अपने माता-पिता का छोड़कर अपने पति के घर आती है । उसे अपने पति की बात माननी पड़ती है । परिवार में माँ की तुलना में पिता का महत्व अधिक है ।

श्रीमती इंदिरा गाँधी

ब्रिटिश साम्राज्य के समय भारत में स्वाधीनता संग्राम में झांसी रानी, लक्ष्मीबाई आदि की विशेष भूमिका थी पर उस समय नारी शिक्षा का प्रभाव - प्रसार कम था ।

श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल

हर साल मार्च ८ को आन्तर्जातीय महिला दिवस और मई महीने के दूसरे इतवार को मातृ दिवस के रूप में पालन किया जाता है ।

वाल्यविवाह, सतीदाह प्रथा आदि अन्धविश्रास से समाज के कलुषित हुआ था और तत्सहित नारियों की स्वाधीनता संकुचित हुई थी । राजा राममोहन राय, ईश्ररचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिवापुुले, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती और महात्मा गाँधी आदि ने समाज से कुसंस्कार दूर किया था और नारियों को पुरुषों के समकक्ष करने का प्रयास किया था ।

प्रथम महिला IPS श्रीमती किरण वेदी

अब युग परिवर्तन हो चुका है । आज भारतीय नारी अवला दुर्बला नहीं है । समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नारी अपना महत्व प्रतिपादित करती जा रही है । शिक्षा, राजनीति, विज्ञान और विचार व्यवस्था आदि में नारी आज अग्रणी और सम्माननीया है । किसी भी परीक्षा के परिणाम प्रकाशन के समय समाचार पत्रों में विशेष रूप से नारी या बालिकाओं की तस्वीरें देखने को मिलती है ।

श्रीमती इंदिरा गाँधी, श्रीमती प्रतिभा देवी सिं पाटिल, श्रीमती अनीता देशाई, अरुन्धती राय, श्रीमती किरण देवी, विजयलक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नाइडु, नन्दिनी शतपथी, श्रीमा, पी.टी. उषा, कल्पना चावला, सुनीता विलियम, सानिया मिर्जा, शकुन्तला देवी, मदर टेरेशा, मालेश्वरी, लता मंगेशकर आदि ने अपने-अपने क्षेत्रों में उल्लखनीय प्रतिभा प्रदर्शित की है ।

वर्तमान सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं ने नारी सुरक्षा के लिए जननी सुरक्षा योजना की तरह अनेक कार्यक्रमों को हाथ में लिया है ।

हिन्दू संस्कृति में माँ को विशेष महत्व दिया गया है । शारदीय उत्सव दशहरा और दीपावली में शक्तिमयी दुर्गा और काली माँ की आराधना होती है ।

क्या आप को मालूम है ?

१ ९ ७ ५ को आन्तर्जातीय नारी वर्ष के रूप में पालन किया जाता है ।

जर्मान लेखिका हर्ता मुलर को हाल ही में साहित्य में नोबल पुरस्कार मिला है । ब्रिटिश उपन्यासकार हिलारी मंटेलैन बुकर विजेता हैं ।

अमेरीका एलिनर ओष्ट्रम प्रथम महिला हैं जिन्हें अर्थशास्त्र में सम्मानजनक नोबल पुरस्कार मिला है ।

नारी समस्त शक्तियों का आधार है । मातृशक्ति के बिना सृष्टि असंभव है । उल्लेख है : 'जननी जन्मभूमिश्य स्वर्गादपि गरियसी' ।

किरणदेवी, सुनीता विलियम, के. मालेश्वरी ने किन क्षेत्रों में अपनी पारदर्शिता दिखाई है ? मित्रों से चर्चा कर लिखिए ।

हम ने सिखा :

- विश्व में प्रत्येक मनुष्य का मनुष्य की तरह जीने का अधिकार है । इसे मानवाधिकार कहा जाता है ।
- सन् १९४८ दिसम्बर १० तारीख को सार्वजनीन मानव अधिकार की घोषणा हुई ।
- समाज में नारियों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए । पुरुषों की भाँति नारियों को भी समान स्वाधीनता अधिकार मिलना चाहिए ।
- समाज में बच्चों की यातना ग्रहणीय नहीं है । उनकी शिक्षादान व्यवस्था और उन्हें शोषण न करने की व्यवस्था संविधान में है ।
- आधुनिक युग में नारियाँ सब क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करती हैं ।

प्रश्नावली

१. मानव अधिकार का तात्पर्य क्या है ?
पाँच वाक्यों में लिखिए ।

२. एक गणतांत्रिक राष्ट्र में पाँच मानव अधिकार लिखिए ।

३. नारियों को पुरुषों की भाँति अधिकार मिले । इस कथन को तीन प्रमुख कारणों के द्वारा स्पष्ट कीजिए।

४. बच्चों की नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा क्यों मौलिक अधिकार में अन्तर्भुक्त हुआ ? पाँच वाक्यों में लिखिए ।

५. किस स्वाधीनता संग्रामी ने नारी शिक्षा के प्रसार और अधिकार के लिए आवाज उठाई थी ? लिखिए । अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

६. कब सार्वजनीन मानवधिकार की घोषणा हुई ?

७. बच्चों के संबध में कौन सा नया अधिकार संविधान संशोधन में सम्मिलित किया गया है ?

८. तुम्हारी किताब में लिखे हुए नारी सशक्तिकरण के उदाहरणों के अलावा और दो नारियों का उदाहरण दें जिन्होंने अपने क्षेत्र में प्रतिभा प्रदर्शित की है ?